

श्रीयुन् केशरीचंदजी लूनिया की पौत्री सौभाग्य
कुँवर के स्मरणार्थ ।

श्री. खरतर गच्छीय

विधि सहित

पंच प्रतिक्रमण सूत्र.

प्रकाशक—

रामलाल लूनिया नयाबाजार
अजमेर

श्रीयुत डॉक्टर वारशी गुलाबचंद मधायणी H L M S
के प्रवच से श्री जैन सुधारक प्रेस, अजमेर में
मुद्रित हुई.

प्रथमावृत्ति

१००० प्रति

सन् १९१६

{ वि० संवत् १९७३

भेट (मुफ्त).

श्रीयुत केसरीचंदजी लक्ष्मिया की पौत्री सोभाग्य कुंवर के स्मरणार्थ २०० पुस्तकें मुफ्त भेट करने को श्रीयुत केसरीचन्दजी ने रुपये ५०) देकर इस पुस्तक के छपाने में सहायता की है सो जो साहित्य मुफ्त मंगावेंगे उनको हाक व्यव के लिये एक आने का टिकट भेज देने पर मुफ्त भी भेज देंगे.

इस पुस्तक को मुफ्त लेकर वा मूल्य से लेकर अवश्य लाभ उठावें और इस पुस्तक को उपयोग से रक्खें क्योंकि ज्ञान की विराधता करने से ज्ञानावरणीय कर्म बंधते हैं.

और आपभी यथा शक्ति ज्ञान प्रचार के लिये सदा तत्पर रहें.

प्रगटकर्त्ता.

* ॐ परमेष्ठिने नमः *

॥ अथ ॥

श्रीश्रावकस्य विधिसंयुक्त देवसिराइ ॥

॥ प्रतिक्रमणादि सूत्रम् ॥

॥ तत्र प्रथम ॥

प्राभातिक सामायिक विधिप्रारंभः ।

॥ अथ नवकार मंत्रः ॥

॥ एमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ एमो सिद्धाणं ॥ २ ॥
णमाआयरियाण ॥ ३ ॥ एमो उवभायाणं ॥ ४ ॥ एमो लोण-
सन्वसाहूण ॥ ५ ॥ एसो पंच एमुकारो ॥ ६ ॥ सन्व-
पावप्पणासणो ॥ ७ ॥ मंगलाणं च सन्वोसिं ॥ ८ ॥ पदम

हवइ गंगलं ॥६॥ इति ॥ १ ॥ यह नवकार तीन बेर गुण
कें थापनाजीकी थापना करे, तब तेरे बोल चितवे, सां०
कहते हैं ॥

॥ अथ थापना चार्थजी की तेरे पडिले हणा

॥ शुद्ध स्वरूप धारुं ॥ १ ॥ ज्ञान ॥ १ ॥ दर्शन ॥
॥ २ ॥ चारित्र ॥ ३ ॥ सहित सदहणा शुद्धि ॥ १ ॥
प्ररूपणा शुद्धि ॥ २ ॥ दर्शन शुद्धि ॥ ३ ॥ सहित पांच
आचार पालुं ॥ १ ॥ पलावुं ॥ २ ॥ अनुमोदुं ॥ ३ ॥
मनोगुप्ति ॥ १ ॥ वचन गुप्ति ॥ २ ॥ काय गुप्ति ॥ आ-
दरुं ॥ ३ ॥ एवं तेरे बोल श्रीधर्मरत्नप्रकरणसूत्रवृत्ति में कहे
हैं ॥ इति ॥ २ ॥

॥ पीछें गुरुजीके सामने अथवा थापनाचार्थजीके
सामने खडा हो के तीन खमासमण देवे, सो लिखते हैं ॥

अथ खमासमण

॥ इच्छामि खमासमणो वंदितुं जावणिजाए नि-
सीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इति ॥ ३ ॥

* तप गच्छ वाले पंचिन्द्रिय का पाठ पढ़ते हैं ।

अथ सुगुरु ने शाता सुख पृच्छा

॥ इच्छकार भगान सुहराई, मुहदेवसी, सुख तप
शरीर निरावा ॥ सुखसंयम यात्रा निर्घहो छोर्जी ? स्या-
या शाता छेजी ? इति ॥ ४ ॥ एमे गुरुने कही नमस्कार
करे, तेवारें गुरु ॥ हे देवगुरु प्रसाद ॥

॥ पीछे नीचें पेठ के जिमणा हाथ नीचा कर के
अप्पुठियांमि कहे पीछे समासमण दे के इच्छा कारेण
मदिस्सह भगवन् सामायिक लेवा मुहपत्ती पडिलेहुं ? गु-
रु कहे, पडिलेह. पीछे इच्छं कही दूजी खमासमण देई
मुहपत्ती पडिलेहे ॥

॥ अथ मुहपत्ती पडिले हण के पच्चोश
बोल लिखते है ॥

॥ सूत्र, अर्थ साचो सईहु ॥ १ ॥ सम्यक्त्व मोह-
नी ॥ २ ॥ मिथ्यात्व मोहनी ॥ ३ ॥ मिथ मोहनी ॥ ४ ॥
परिहर. यह चार बोल मुहपत्ती खोलती विरीया कहणा ॥

॥ कायरग ॥ १ ॥ स्नेहराग ॥ २ ॥ दृष्टिराग ॥ ३ ॥
परिहर ॥ यह सात बोल प्रथम कहीजें ॥

॥ सुगुरु ॥ १ ॥ सुदेव ॥ २ ॥ सुधर्म ॥ ३ ॥ आ-
दरुं ॥ कुगुरु ॥ १ ॥ कुदेव ॥ २ ॥ कुधर्म ॥ ३ ॥ परि-
हरुं ॥ ज्ञान ॥ १ ॥ दर्शन ॥ २ ॥ चारित्र ॥ आदरुं ॥
यह नव पडिलेहण डावे हाथे करीये ॥

॥ ज्ञानविराधना ॥ १ ॥ दर्शनविराधना ॥ २ ॥
चारित्रविराधना ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ मनोगुप्ति ॥ १ ॥ व-
चनगुप्ति ॥ २ ॥ कायगुप्ति ॥ ३ ॥ आदरुं ॥ मनोदंड ॥ १ ॥
वचनदंड ॥ २ ॥ कायदंड ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ यह नव
पडिलेहण जिमणे हाथसे करणी ॥ यह पच्चीश बोल मु-
हपत्तीके जानने ॥

अब अंगकी पच्चीश पडिलेहण लिखते हैं

॥ कृष्णलेश्या ॥ १ ॥ नीललेश्या ॥ २ ॥ कापोत-
लेश्या ॥ ३ ॥ ए तीनुं निलाडे मस्तके परिहरुं ॥

॥ रूद्धिगारव ॥ १ ॥ रसगारव ॥ २ ॥ शातागारव
॥ ३ ॥ ए तीनुं मुखे परिहरुं ॥

॥ मायाशल्य ॥ १ ॥ नियाणाशल्य ॥ २ ॥ मि-
च्छादसंश्ल्य ॥ ३ ॥ ए तीन हीये परिहरुं ॥

॥ क्रोध ॥ १ ॥ मान ॥ २ ॥ ए दोय जिमणे खंभे
परिहरं ॥

॥ माया ॥ १ ॥ लोभ ॥ २ ॥ ए दोय हावे खंभे
परिहरं ॥

॥ हास्य ॥ १ ॥ रति ॥ २ ॥ अरति ॥ ३ ॥ ए तीन
हावे हाथे परिहरं ॥

॥ भय ॥ १ ॥ शोक ॥ २ ॥ दुर्गच्छा ॥ ३ ॥ ए
तीन जिमणे हाथे परिहरं ॥

॥ पृथ्वीकाय ॥ १ ॥ अग्निकाय ॥ २ ॥ तेजकाय
॥ ३ ॥ ए तीन हावे पगे परिहरं ॥

॥ वायुकाय ॥ १ ॥ वनस्पतिकाय ॥ २ ॥ व्रस
काय ॥ ३ ॥ ए तीन जिमणे पगे परिहरं ॥ इति मुह-
पत्ति पढिलेहणा संपूर्णा ॥ ५ ॥

॥ पीछे खडा होय के इच्छामि खमासमण का पाठ
कहे कें इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् ॥ सामायिक संदि-
स्सावुं ? गुरु वहे संदिस्सावेह ॥ पीछे इच्छं कहे कें फेर
खमासमण देकें इच्छा० ॥ भ० ॥ सामायिक ठावं ?
गुरु कहे ठाएह ॥

॥ पीछें इच्छं कही खनासमण देइ थोडो जुकी तीन
नवकार गुणी इच्छा कारेण संदिस्सह भगवन् पसाउ
करी सामायिक दंडक उच्चरावोजी ॥ गुरु कहे उच्च-
रावेसो ॥ पछी करेमि भंते सामाइयं इत्यादि सामायिक
मंत्र तीन बार उच्चरे ॥

॥ अथ सामायिकनुं पच्चक्खाण ॥

॥ करेमि भंते सामाइयं, सावज्झं जोगं पच्चक्खामि ॥
जावनियमं पञ्चुवासामि ॥ दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए
काएणं, न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते पडिक्कमामि
निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ पीछे खमासमण दे केँ इच्छाकारेण संदिस्सह
भगवन् इरियावहियं पडिक्कमामि ॥ गुरु कहे पडिक्कमह.
पीछें इच्छं कही ॥ इच्छामि पडिक्कमिउं इरियावहियाए
इत्यादि पाठ कहे, सो लिखते हैं ॥

अथ इरियावहियं ॥

इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् ॥ इरियावहियं पडि-
क्कमामि ॥ इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउं ॥ १ ॥ इरियाव-

हियाए विराहणाए ॥ २ ॥ गमणागमणे ॥ ३ ॥ पाण
 वक्रमणे वीयवक्रमणे हरियक्रमणे ॥ उसा उत्तिंग पणा
 दग मट्टी मक्कडा सताणा संकमणे ॥ ४ ॥ जे जीवा
 विराहिया ॥ ५ ॥ एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरि-
 दिया पंचिंदिया ॥ ६ ॥ अभिद्वया चत्तिया लेसिया सं-
 घाड्या संघट्टिया परियाविया ॥ किलामिया उद्विया
 ठाणाउ ठाणं संक्रामिया जीत्रियाओ ववरोविया ॥ तस्स
 मिच्छामि दुक्कडं ॥ ७ ॥ इति ॥

अथ तस्स उत्तरी ॥

तस्स उत्तरीकरणेण ॥ पायच्छित्त करणेणं ॥ वि-
 मोहीकरणेणं ॥ विसल्लीकरणेण ॥ पावाणं कम्माणं ॥
 णिग्गायणद्वाए ॥ ठामि काउस्सगं ॥ ८ ॥

अथ अन्नत्थ उससिएणं ॥

अन्नत्थ उससिएण नीससिएणं खासिएणं छीएण
 जंभाडएण उद्धएण वायानिसग्गेण भमलिए पित्तमुच्छा-
 ए ॥ १ ॥ सुहुमेहिं अगसंचालेहिं ॥ सुहुमेहिं खेलसंचा-
 लेहिं ॥ सुहुमेहिं टिट्ठिमचालेहिं ॥ २ ॥ एवमाइएहिं आ-

गारेहिं ॥ अभग्गो अविराहिओ ॥ हुज्झ मे काउस्सग्गो ॥
 ॥ ३ ॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पा-
 रेमि ॥ ४ ॥ तावकायं ठाणेणं मोणेणं ज्ञाणेणं अप्पाणं
 वोसिंरौमि ॥ ५ ॥ इति ॥ ६ ॥ इहांचार नवकार अथवा
 एक लोगस्सको काउस्सग्ग करे. पीछें णमो अरिहंताणं
 कहे कें काउस्सग्ग पारकें मुखसैं प्रगट लोगस्स कहे, सो
 लिखते हैं ॥

अथ लोगस्स ॥

लोगस्स उज्जोअगरे ॥ धम्म तित्थयरे जिणे ॥
 अरिहंते कित्तइस्सं ॥ चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसभ
 मजिअं च वंदे ॥ संभव मभिणंदणं च सुमइं च ॥ पड-
 मप्पहं सुपासं ॥ जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च
 पुप्फदंतं ॥ सीअल सिज्झंस वासुपुज्झं च ॥ विमल
 मणंतं च जिणं ॥ धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं
 अरं च मल्लिं ॥ वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च ॥ वंदामि
 रिठ्ठजेमिं ॥ पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभि-
 थुआ ॥ विहुय रय मला पहीण जरमरणा ॥ चउवीसं-
 पी जिणवरा ॥ तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय

चंठिय महिया ॥ जे ए लोगस्त उत्तमा सिद्धा ॥ आरुग
बोहिलाभं ॥ समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चदेसु नि-
म्मलयरा ॥ आइचेसु अहियं पयासयरा ॥ सागर वरगं-
भीरा ॥ सिद्धा सिद्धि मय दिंसंतु ॥ ७ ॥ सव्वलोए०
इति ॥ १० ॥

पीछें खमासमण देई इच्छा० ॥ भगवन् वैसणोसं-
दिस्सावुं? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ पीछें इच्छं कहे के व-
ली खमासमण देकर ॥ इच्छा० ॥ भगवन् वैसणो ठाउं ?
गुरु कहे ठाएह ॥ फेर इच्छं कहे के खमासमण देकर
इच्छा० ॥ भ० ॥ सिम्भाय संदिस्सावुं ? गुरु कहे सं-
दिस्सावेह ॥ पीछें इच्छ कहेके वली खमासमण देकर
इच्छा० ॥ भ० ॥ सिम्भाय करु ? गुरु कहे करेह ॥
फेर खमासमण दे के खडे हो कर आठ नवकार कहकर
सज्जाय करे, तथा जो शीतकालादि होवे तो खमासमण
दे के इच्छा० ॥ भ० ॥ पागरणो संदिस्सावुं ? गुरु कहे
संदिस्सावेह ॥ पीछें इच्छ कह कर खमासमण दे कर
इच्छा० ॥ भ० ॥ पागरणो पढिग्याउं ? गुरु कहे पढि-
ग्याएह ॥ पीछें इच्छ कही वस्त्र ग्रहण करे तथा सामायि-

कयंत अथवा पोसांसहित श्रावक वांटे तो “ वंदामो ”
 ऐसो कहे. और जो कोई दूसरो वांटे तो, सिज्झाय करेह,
 ऐसे कहे ॥ इति प्राभातिक सामायिक ॥

अथ राई प्रतिक्रमण विधि प्रारंभ ।

प्रथम एक खमासमण दे के इच्छा ० भ० ॥ चैत्य-
 वंदन करुं ० गुरु कहे करेह ॥ पीछें इच्छं कही जयउ
 सामि जयउ सामि इत्यादि कहे, सोही लिखते हैं ॥

अथ सकल तीर्थंकर नमस्कारो लिख्यते ॥ जयउ
 सामिय जयउ सामिय, रिसह सेतुंजिउज्जितं ॥ पद्म ने-
 मिजिण, जयउ वीर सच्चउरि मंडण ॥ १ ॥ भरुअच्छेह
 मुणिसुव्वय, महुरिपास दुह दुरिय खंडण ॥ अवरविदे-
 हिज तित्थयर, चिहुंदिशि विदिसि जं केवि ॥ तीआणा
 गय संपयं वंदुं जिण सव्वेवि ॥ २ ॥

कम्मभूमिहिं २ पढम संघघणि ॥ उक्कोसउ सत्तरिसउ,
 जिणवराण विहरंत लम्भई ॥ नवकोडीहिं केवल्लिण, को
 डि सहस्स नव साहु संपइ ॥ संपइ जिणवर बीस मुणि,
 विहुं कोडीहिं वरनाण ॥ समणह कोडी सहस्स दुई,

थुण्णज्जइ निच्च विहाण ॥ १ ॥ सत्ताणवइ सहस्सा,
 लरका उप्पन्न अट्ठ कोडीओ ॥ चउसय छायासीया,
 तिल्लुक्कै चेइए वंदे ॥ २ ॥ वदे नव कोडि सयं, पणवीस
 कोडि लरक तेवन्ना ॥ अट्ठावीस सहस्सा, चउसय अट्ठा-
 सिया पाडिमा ॥ ३ ॥ ११ ॥

अथ जंकिंचि ।

ज किंचि नाम तित्थं ॥ सग्गे पायाले माणुमे लोए ॥
 जाई जिणविवाइ ॥ ताई सव्वाई वंदामि ॥ १ ॥ इति ॥ १२ ॥

अथ नमुत्थुणं वा शक्रस्तव ।

नमुत्थुणं अरिहंताण, भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगरा
 ण तित्थगराणं, सयं सबुद्धाण ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाण.
 पुरिससीहाण, पुरिसवरपुडरीआण पुरिसवरगंधट्ठी-
 ण ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआण लोग
 पईवाणं, लोगपज्झोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाण, च-
 रुकुदयाणं ॥ मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोद्धिदयाणं ॥ ५ ॥
 धम्मदयाणं, धम्मदेसियाण ॥ धम्मनायगाणं, धम्मसार-
 हीणं, धम्मवरचाउरतचक्रवट्ठीण ॥ ६ ॥ अप्पदिइय

वरणाणं दंसण धराणं, विअट्ट छउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं
जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं
मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसिणं, सिव मयन्न
मरुअ मणंत मरकय मन्वावाह मपुणरावित्ति ॥ सिद्धि
गइ नामधेयं ॥ ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअ
भयाणं ॥ ९ ॥ जेअ अईआ सिद्धा ॥ जेअ भविस्संति
णागए काले ॥ संपइअवट्टमाणा ॥ सव्वे तिविहेण वंदा-
भि ॥ १३ ॥

अथ जावंति चेइआइ ॥

॥ जावंति चेइआइ ॥ उट्ठेअ अहेअ तिरि अ लोए-
अ ॥ सव्वाइ ताइ वंदे ॥ इहसंतो ॥ तत्थ संताइ ॥ १ ॥
इति ॥ १४ ॥

अथ जावंत केवि साहू ॥

॥ भगवन् जावंत केवि साहू ॥ भरहेरवय महाविदेहे
अ ॥ सव्वेसिं तेसिं पणओ ॥ तिविहेण तिदंडविरियाणं
॥ १ ॥ इति ॥ १५ ॥

अथ परमेष्ठिनमस्कारः ॥

॥ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्य ॥ .

॥ अथ उपसर्गहरस्तवन ॥

॥ उवसग्गहरं पास ॥ पाम वटामि कम्म धण मुक्क ॥
 विसहर विसनिन्नासं ॥ मंगलकल्लाणआवास ॥ १ ॥
 विसहरफुलिंगमंत ॥ कंठे धारेइ जो सया मणुओ ॥ तस्स
 गहरोगमारी ॥ दुठ जरा तति उवमाम ॥ २ ॥ चिठउ
 दूरे मतो ॥ तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ ॥ नरतिरि
 एसुवि जीवा ॥ पावंति न दुरक दोहग्गं ॥ ३ ॥ तुइ
 सम्मते लद्धे ॥ चितामणि कप्पपायवप्पहिण ॥ पावंति
 अविग्घेणं ॥ जीवा अयरामर ठाण ॥ ४ ॥ इअ संथुओ
 महायस ॥ भत्तिप्परनिप्परेण हिअएण ॥ ता देव दिज्झ
 वोहिं ॥ भवे भवे पासजिणचंद ॥ ५ ॥ इति ॥ १६ ॥

अथ जयवीअराय ॥

॥ जय वीअराय जगगुरु ॥ होउ मम तुइ पभावओ
 भयवं ॥ भवनिन्वेओ मग्गा, गुसारि आ इउ फलसिद्धी

॥ १ ॥ लोग विरुद्धच्चाओ ॥ गुरुजणपूआ परत्थकरण
 च ॥ सुह गुरुजोगोतब्बय, ण सेवणा आभव मखंडा ॥२॥
 ॥ १७ ॥ इत्यादि जय वीयराय पर्यंत चैत्यवंदन करे ॥
 पीछें खमासमण देकें इच्छा० ॥ भ० ॥ कुसुमिण दुसुमिण
 राई पाय-च्छित्त विसोढणत्थं काउस्सग करुं ! गुरु कहे
 करेह. पीछें इच्छं कह कर कुसुमिण दुसुमिण राई पाय-
 च्छित्त विसोढणत्थं करेमि काउस्सगं ॥ अन्नत्थ उस
 सिण्णं ॥ इत्यादि पाठकहे कें सोले नवकार अथवा
 चार लोगस्सका चंदेसु निम्मलयर पंर्यंत चिंतन कर कें
 काउसग करे ॥ पीछें णमो अरिहंताणं कह कर काउ-
 स्सग पारो कें मुख सें एक लोगस्स का पाठ प्रगट
 कहे. जो रात्रि में गुण संबधि मोट को दूषण लागो होवे
 तो काउसगमांहे ॥ सागरवरगंभीरा ॥ पर्यंत चितवे ॥
 ॥ इति संप्रदाय ॥

॥ अब पड्डिकमणां ठायवे का अवसर हुवा ॥

जब खमासमण देई श्रीआचार्यजी मिश्र कहिं कें वांदी
 यें ॥ १ ॥ खमासम देई श्री उपाध्यायजी मिश्र कहिके
 वांदिये खमासमण ॥ २ ॥ देई जंगम सुगंधान वर्तमान

भट्टारक श्री पूज्यजी का नाम लेकर वादीये ॥ ३ ॥ स्वमा
समण देई के सन साधुजो कुं वादीये ॥ ४ ॥ इस तरे
चार स्वमासमण सँ पहिक्कगणा ठावी गोडालीये बैठ के
मस्तक नमाय कर दोनु हाये मुहपत्ती मुहडे दे कर ॥
सव्वस्म विराइय ॥ इत्यादि पाठ कहे परतु इच्छाकारेण
संदिस्सह इच्छं इस माफक न केह ।

अथ सव्वस्सवि ॥

॥ सव्वस्सवि देवसिअ दुच्चित्तिअ दुप्पासिय दुच्चिठि
अ इच्छा कारेण संदिस्सह भगवन् इच्छं० ॥

तस्संभिञ्जामि दुक्कढं इति ॥ १८ ॥ सवेरका देवसिके
ठिकाने राइय ऐसा पाठ कहे ॥

॥ पीछे नमुत्थुणं कह के खडा होय के ॥ करेमिभंते
सामाइय सावज्झ जोगं पच्चरकामि ॥ इत्यादिक पाठ कहे
पीछे इञ्जामि ठामि काउस्सग्ग जो मे राइउ० ॥ यह पाठ
कहे, सो लिखते है ॥

॥ अथ इञ्जामि ठामि ॥

॥ इञ्जामि ठामि काउस्सग्गं ॥ जो मे देवसिओ अ-

इआरो कओ ॥ काइओ वाइओ गाणसिओ ॥ उस्सुत्तो उम्म-
 गो अकण्णो ॥ अकरणिज्झो ॥ दुज्झाओ ॥ दुव्विचिंतिओ
 अणायारो ॥ अणिच्छिअव्यो ॥ असावगपाउगो ॥ नाणे
 तह दंसणे चरित्ताचरित्ते ॥ सुए सामाइए ॥ तिन्हं गुत्ती-
 णं ॥ चउन्हं कसा याणं ॥ पंचन्हमणुव्वयाणं ॥ तिन्हं
 गुणव्वयाणं ॥ चउन्हं सिरकावयाणं ॥ वारसवियस्स
 सावगध म्मस्स ॥ जं खंडिअं जं विराहिअं ॥ तस्स मि
 च्छामि दुक्कडं ॥ इति ॥ इहां देवासियं के ठिकाने राइयं
 कहनां ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ पीछें तस्सुत्तरी० ॥ अन्नत्थ उससिएणं कह कर
 चारित्रशुद्धि निमित्त चार नवकार अथवा एक लोगस्सका
 काउस्सग करी पारि कें दर्शन शुद्धि निमित्त प्रगट लो-
 गस्स कही सव्वलोए अरिहंत चेइआणं ॥ करेमि काउस्-
 सगं वंदणवत्तिआए ॥ इत्यादि कहनां, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ वंदणवत्तिआए ॥

॥ वंदणवत्तिआए, पूअण वत्तिआए ॥ सक्कार व-
 त्तिआए, सम्माण वत्तिआए ॥ बोहिलाभवत्तिआए ॥

निरुवसग्ग वत्तिआए ॥ १ ॥ सद्धाए मेहाए धीईए ॥
 धारणाए अणुप्पेहाए ॥ वड्डमाणीए ठामि काउस्सग्गं
 ॥ २ ॥ इति ॥ २० ॥

॥ पीछे अन्नत्थरुही चार नवकार अथवा एक
 लोगस्सका काउस्सग्ग करके पार के ज्ञानाचार शुद्धि
 निमित्त पुरकरवरदी० सुयस्स भगवओ रुरेमि काउस्स-
 गं ॥ इत्यादि पाठ कहे, सो लिखते हैं ।

॥ अथ पुरक्करवरदी ॥

॥ पुरक्करवरदीवद्धे, वायइ सडेअ^३ जवुदीवे अ ॥
 अरेहे ग्वय विदेहे, धम्माइगरे नमंसांमि ॥ १ ॥ तयति
 मिर पडलविद्ध, सणस्स सुरगणनरिंदमाहिअस्स ॥ सीमा
 धरस्स वदे, पप्फोडिअ मोहजालस्य ॥ २ ॥ जाई
 जरायरण सोगपणासणस्स, कल्लाण पुक्खलविसाल
 सुहावहस्स ॥ को देवदाणव नरिंदगणच्चि अस्स, धम्म
 स्स सार सुवलप्भ करे पमाय ॥ ३ ॥ सिद्धे भो पयओ णमो
 जिण मए, नदी सया संजमे ॥ देवं नाग सुवन्न किन्नर
 गण, ससम्भूअ भावच्चिए ॥ लोगो जत्थ पइठिओ जग
 मिण, तेलुक्कमच्चासुरं ॥ धम्मो वड्डउ सासओ विजयओ

धम्म उत्तरं बहुउ ॥ ४ ॥ इति ॥ २१ ॥ बुद्धस्स भगवन्ना
 करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआर० ॥ ए पाठ पूर्ण कह
 कर अन्नत्थुत्तसिएणं कह के आठ नवकार अथवा दो
 लोगस्सका काउस्सग्ग करे. काउस्सग्गके माहे आजुणा
 चार प्रहर चिंतवे. सो आगे लिखेंगे. पीछें सिद्धाणं बुद्धा-
 णंका पाठ कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ सिद्धाणं बुद्धाणं ॥

॥ सिद्धाणं बुद्धाणं, पारमयाणं परंपरमयाणं ॥ लो
 अग्ग सुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥ १ ॥ जो
 देवाणवि देवो, जं देवा पंजली नमसंति ॥ तं देव देव
 महिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ ५ ॥ इक्कोवि नमुक्कारो
 जिणवरवस्सं बद्धमाणस्स ॥ संसारसागराओ, तारेइ ष्यरं
 व ना रिं वा ॥ ४ ॥ उज्झित सेल सिहरे, दिरुका नाणं
 निसीहिआ जस्स तं धम्मचक्कवहिं अरिठ नेमिं नमं
 सामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अठ दस दो, य वंदिया जिण
 वरा चउव्वीसं ॥ परमट्ट निट्ठि अट्ठा सिद्धा सिद्धिं मम
 दिसंतु ॥ ५ ॥ इति ॥ २२

॥ अथ वेयावच्चगराणं ॥

॥ वेयावच्चगराणं संतिगराणं ॥ सम्मदिठि समा-
हिगराणं ॥ इति ॥ करेमि का उस्सग्ग ॥ अन्नत्थ० ॥
इति ॥ २३ ॥

॥ पीछे सेंडासा प्रमार्जन पूर्वक बैठ के तीसरे आव-
स्तग सूत्र वादणा निमित्तें मुहपत्ती पडिले हु ? गुरु कहे
पडिलेएह ॥ मुहपत्ती पडिले हे पीछे वादणा दं तिनका
विधि कहते हैं ॥

॥ अवग्रह के बाहिर उभा हुआ आधा नीचा नम
कर इच्छामि स्वमासमणे वदिउ जावाणिज्भाए निसीहि
आए अणुजाणह मे मिउग्ग, इत ना पाठ कह कर भूमि
प्रमार्जन करता हुआ निसीहि रुह के कल्लुक अवग्रह में
प्रवेश कर के सेंडासा प्रमार्जन कर के उक्कड बैठ के
डावे हाथ में मुहपत्ति ले के दावे कानसे ले के जिमणा
'कान पर्यंत निल्लाड पूजी, मुहपत्ती आगे रख के तिस
के मध्य भाग में गुरुचरण की कल्पना कर के ॥ अहोकाय
उत्पादि आर्च कर के कल्लुक नीचा नम कर मस्तके

अंजलि कर के गुरु सन्मुख दृष्टि स्थापन कर के ॥ खम
 णिज्भो भे किलामो ॥ इत्यादि पाठ कहे. पीछे फेर ॥
 जत्ता भे ॥ इत्यादि आवर्तन कर के खडा होके पीछे
 पग से भूमि पूंजता हुंआ अवग्रह से बाहिर निकल के
 स्वस्थान पर आवे. यहां ॥ आवस्सियाए ॥ इत्यादि
 पाठ सर्व कहै, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ सुगुरुवांदाणां ॥

॥ इच्छामि खमासमणो वंदिउं, जावणिज्झाए निसी
 हिआए ॥ अणुजाणहं मे मिउगहं निसीहि ॥ अहो कायं
 काय संफासं, खमणिज्भो भेकिलामो ॥ अप्पकिलंताणं
 बहु सुभेण भे, दिवसो वइक्कंतो जत्ता भे जवणिज्भं च
 भे, खामेमि खमासमणो ॥ देवसिअं वइक्कम्मं आवसि
 आए पडिक्कमामि खमासमणाणं ॥ देवसिआए आसा-
 यणाए ॥ तिच्चीसन्नयराए जं किं चि मिच्छाए मणदुक्क
 डाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए कोहाए, माणाए,
 मायाए, लोभाए सव्वकालिआए, सव्व मिच्छोवयाराए,
 सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ,

तस्स खमासमणो पढिक्कमामि ॥ निंढामि गरिहामि अप्पा
 णे वोसिरामि ॥ १ ॥ दुज्जी वारके वादणे आवसिआए
 ए पद न कहेना, अने राइये राइओ वइक्कंतो, तथा
 चउमासीये चउमासीओ वइक्कंतो, परुक्कीयेपरुक्को वइक्कंतो
 संवेच्छरीये संवच्छरीओ वइक्कंतो ॥ एसी तरें पाठ कहेना
 ॥ इति ॥ २४ ॥

॥ अथ देवसियं आलोउं ॥

॥ इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् देवसियं आलो
 उ इच्छं ॥ आलोएमि, जो मे० ॥ इति ॥ २५ ॥ देव
 सियं के ठिकाने राइयं कहेना ॥

॥ पीछै रात्रि सर्वधि अतिचार गुरु समक्ष आलोवे,
 सो कहते है ॥

॥ अथ आलोयण लिख्यते ॥

॥ आजुणा चार प्रहर दिवसमें जे में जीव विराध्या
 होय ॥ सात लाख पृथिवी काय ॥ सात लाख अप्पकाय
 ॥ सात लाख तेउकाय ॥ सात लाख वाउकाय ॥ दश
 लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय ॥ चउदे लाख साधारण

वनस्पति काय ॥ दोय लाख वे इंद्रिय ॥ दोय
 लाख तेंद्रिय ॥ दोय लाख चारिंद्रिय चार लाख
 देवता ॥ चार लाख नारकी ॥ चार लाख तिर्यच पंच
 द्रिय ॥ चउदे लाख मनुष्य ॥ एवं चौर गति के चौरा
 शी लाख जीवायोनिमें, माहारे जीवें जे कोइ जीव
 हणयो होय, हणाव्यो होय, हणतांप्रत्यं भलो जाणयो
 होय, ते सव्वे हुं मन वचन काया यें करी मिच्छामि
 दुक्कडं ॥ इति ॥ २६ ॥

॥ अथ अद्वारे पापस्थानक आलोउं ॥

॥ प्राणातिपात ॥ १ ॥ मृषावाद ॥ २ ॥
 अदत्ता दान ॥ ३ ॥ मैथुन ॥ ४ ॥ परिग्रह ॥ ५ ॥
 क्रोध ॥ ६ ॥ मान ॥ ७ ॥ माया ॥ ८ ॥ लोभ ॥ ९ ॥
 राग ॥ १० ॥ द्वेष ॥ ११ ॥ कलह ॥ १२ ॥ अभ्या-
 ख्यान ॥ १३ ॥ पैशुन्य ॥ १४ ॥ रति ॥ १५ ॥ अरति ॥ १५ ॥
 परपरिवाद ॥ १६ ॥ मायामृषावाद ॥ १७ ॥ मिथ्यात्व-
 शल्य ॥ १८ ॥ ए अद्वारे पापस्थानक सेव्यां होय,
 सेवराव्यां होय, सेवता प्रत्यं भलां जाण्यां होय, ते सव्वे
 हुं मन, वचनें, कायायें करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

ज्ञान, दर्शन, चारित्र, पाठी, पोथी, ठवणी, कयली, नवकरवाली, देव गुरु वर्म की आशातना करी होय । पन्ने कर्मादानोकी आसेवना करी होय ॥ राजकथा, देशकथा, स्त्री कथा, भक्तकथा करी होय. और जो कोई पाप, परनिंदा मीधुं होय, करान्युं होय, करता अनुमोद्युं होय सो सर्व मन, वचन, कायाये कर कें, दिवस अति चार आलोयणे कर कें पढिक्कमणा मे आलोडं ॥ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति आलोयणं ॥ इहा प्रभात के पढिक्कमणेमें दिवस के ठिकाने रात्रिका पाठ कहेना ॥ इति ॥ २८ ॥

पीछै सव्वस्समि राइयं ॥ इत्यादि पाठ कहे. तिहां इच्छाका० ॥ ५० ॥ ए पद कहनेसें आलोया हुआ अतिचारका प्रायश्चित्त मागे ॥ गुरु कहे पढिक्कमेह ॥ पीछै इच्छं तस्म मिच्छामि दुक्कड कड के सडासा, प्रमार्जन कर कें आसन पर, बैठ कें जिमणा गोडा उचा रख कें डाया गोडा नीचे कर कें ऐसे कहे कि भगवन् । सूत्र भेंखुं ? तव गुरु कहे भणेह ॥ पीछै इच्छं कहि कें तीन नवकार प्ररु तीन बार करेमि भते ॥ भण कें इच्छा

मि पडिक्कमिडं जो मे राइओइत्यादि कह कर ॥ तं निंदे
तं च गरिहामि पर्यंत वंदितु सूत्र कहे. सो लिखते हैं ॥
पीछै खड़ा होके अभुट्टिओमि आराहणाए इत्यादि संपूर्ण
कहे, सो लिखते हैं ॥

अथ श्रावक वंदितासूत्र ॥

वंदितु सव्व सिद्धे, धम्मायरिण अ सव्वसाहू अ ॥
इच्छामि पडिक्कमिडं, सावगधम्माइआरस्स ॥ १ ॥ जो
मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ ॥ सुहुमो अ
वायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २ ॥ दुविहे परि-
ग्गहंमि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे ॥ कारावणे अ क-
रणे, पडिक्कमे देवासियं सव्वं ॥ ३ ॥ जं वद्धमिदिएहिं,
चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं ॥ रागेण व दोसेण व, तं
निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे
चंक्रमणे अणाभोगे ॥ अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे०
॥ ५ ॥ संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगी-
सु ॥ सम्मत्तस्स इआरे, पडिक्कमे० ॥ ६ ॥ छक्काय समा-
रंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा ॥ अत्तठाय परठा,

उभयद्वा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥ पंचणहमणु न्वयाण, गुण-
 न्वयाणं चतिण्ह मइयारे ॥ सिरक्खाणं च चउण्ह, पडि-
 क्कमे० ॥ ८ ॥ पढमे अणुन्वयमि, थूलग पाणाइवाय
 विरईओ ॥ आयरिअ मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसगेण ॥
 ॥ ९ वह वंध छविच्छेए, अइ भारे भत्त पाण बुच्छेए ॥
 पढमं वयस्स इआरे, पडिक्कमे० ॥ १० ॥ वीए अणुन्व-
 यंमि, परिथूलगअलिअ वयण विरईओ ॥ आयरि अम-
 प्सत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेण ॥ ११ ॥ सहसा रहस्स दा-
 रे मोसुवएसे अ कूडलेहे अ ॥ वीयं वयस्स इआरे, प-
 डिक्कमे० ॥ १२ ॥ तइए अणुन्वयंमि, थूलग परदन्वहरण
 विरईओ ॥ आयरिअ मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेण ॥
 ॥ १३ ॥ तेनाहडप्पआगे, तप्पडिरूवे विरुद्ध गमणे अ ॥
 कूडतुल कूडमाणे, पडिक्कमे० ॥ १४ ॥ चउत्थे अणुन्व-
 यंमि, निच्चं परदारगमण विरईओ ॥ आयरिअ मप्पस-
 त्थे, इत्थ पमायप्पसंगेण ॥ १५ ॥ अपरिग्गाहिआ इत्तर,
 अणग वीवाह तिन्व अणुरागे ॥ चउत्थ वयस्स इआरे,
 पडिक्कमे० ॥ १६ ॥ इत्तो अणुन्वए पं, चममि आयरि-
 अ मप्पसत्थंमि ॥ परिमाण परिच्छेए, इत्थ पमायप्पसंगे-

रां ॥ १७ ॥ धण धन्न खित्त वत्थू, रूप्प सुवन्नेअ कुविअ
 परिमाणे ॥ दुणए चउप्पयंमि, पडिक्कमे० ॥ १८ ॥ गमणस्स
 य परिमाणे, दिसासु उट्ठं अहेअ तिरिअं च ॥ बुद्धिसइअं-
 तरद्धा पढमंमि गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥ मज्झंमि अ मंसमि
 अ, पुप्फे अ फले अ गंधमल्ले अ ॥ उवभोग परिभोगे,
 वीयंमि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥ सच्चित्ते पडियद्धे, अ
 पोत्त दुप्पोलिअं च आहारे ॥ तुच्छोसहि भक्खगया, प-
 डिक्कमे० ॥ २१ ॥ इंगाली वणसाडी, भाडी फोडी सुव-
 ऋए कम्मं ॥ वाणिज्भं चेव दं, त लरक रस केस वि-
 सविसयं ॥ २२ ॥ एवं खु जंतपिल्लणं, कम्मं निल्लछणं च
 दवदाणं ॥ सरदह तलाव सोसं, असई पोसं च वज्झिज्ञा
 ॥ २३ ॥ सत्थग्गि मुसल जंतग, तण कठे मंत मूल भेस-
 ज्जे ॥ दिन्ने दवाविएवा, पडिक्कमे० ॥ २४ ॥ न्हाणू
 चट्ठण वल्लग, विलेयणे सहख्व रस गंधे ॥ वत्थासण आ-
 भरणे, पडिक्कमे० ॥ २५ ॥ कंदप्पे कुक्कुडए, मोहरि अहि-
 गरण भोग अइरित्ते ॥ दंडंमि अणठाए, तइयंमि गुणव्वए
 निंदे ॥ २६ ॥ तिवहे दुप्पाणिंहाणे, अणवठाणे तहा सइ
 विहूणे ॥ सामाइअ वितहकए, पढमे सिक्खावए निंदे

॥ २७ आणवणे पेसवणे, सहे खवे अ पुगलस्खेवे ॥
 देसा वगा सियंमि, वीए सिक्खावण निदे ॥ २८ ॥ संथा
 रुच्चार पिही, पमाय तह चेव भोयणाभोए ॥ पोमह
 मिहि विउरीए, तइए सिक्खावण निदे ॥ २९ ॥ सच्चिते
 निमिसवणे, पिहिणे वणएस मच्छरे चेव ॥ कालाइकम
 दाणे, चउत्थे सिक्खावण निदे ॥ ३० ॥ मुहिए सुअ दुहि
 ए सुअ, जामे असंजएसु अणुरुंपा ॥ रागेणन दोरोणव,
 तं निदे त च गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहसु सविभागो, न
 कओ तव चरण करण जुत्तेसु ॥ सते फासु अ दाणे, तं निदे
 त च गरिहामि ॥ ३२ ॥ इहलोए परलोए, जीविअ मरणे
 अ आसस पओ ने ॥ पंचविहो अइआरो, मा मअ हुज्झ
 मणंते ॥ ३३ ॥ काएण काइअस्स, पडिक्खे वाइअस्स
 वायाए ॥ मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स उयाड ॥ आर-
 स्स ॥ ३४ ॥ वंदणवय सिक्खागा, खेसुसन्ना कसाय द-
 डेसु ॥ गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो अ तं निदे-
 ॥ ३५ ॥ सम्मट्ठि जीवो, जइ विहुपाव समायगे किंचि ॥
 अप्पो सिहोइ उओ, जेण न निद्धंस कुणइ ॥ ३६ ॥
 तं पिहुसपाडिक्कमण, सप्परिआवं सउत्तरगुण च ॥ खिण्णं

उवसामेइ, वाहिन्व सुसिक्खिओ विज्झो ॥३७॥ हा विसं
 कुठगयं, मंत मूल विसारया ॥ विज्झा हणंति मंतेहिं, तो
 तं इवह निव्विसं ॥ ३८ ॥ एवं अठविहं कम्मं, राग दोस
 समज्झिअं ॥ आलोयंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसाव-
 ओ ॥३९॥ कय पावोवि मणुस्सो, आलोइअ निंदिय गुरु
 सगासे ॥ होइ अइरेग लहुओ, ओहरिअ भरुव भारवहो ॥
 ॥ ४० आवस्सएण, एएण, सावओ जइवि वहुरओ होइ ॥
 दुक्खाण मंत किरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥
 आलोअणा वहुविहा, नयसंभरिआ पडिकमणकाले ॥
 मूल गुण उत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥
 तस्स धम्मस्स केवालि पन्नत्तस्स ॥ अप्पुठिओमि आरा, ह-
 णाए विरओमि विराहणाए ॥ तिविहेण पडिकंतो, वंदामि
 जिणे चउव्वीसं ॥ ४३ ॥ जावंति चेइआइं० ॥ ४४ ॥
 जावंत केवि साहु० ॥ ४५ ॥ चिर संचिय पाव पणास-
 णीइ, भवसयसहस्स महणीए ॥ चउवसि जिण विणिग्ग-
 य कहाइं, वोलंतु मेदिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगल मरिहंता,
 सिद्धा साहु सुअं च धम्मो अ ॥ सम्मदिठी देवा, दितु
 समाहिं च वोहिं च ॥ ४७ ॥ पडिसिद्धाणं करणे, कि-

च्चाण मकरणे पढिकमणे ॥ असदहणे अ तथा, विवरीय
 परुणाए अ ॥ ४८ ॥ खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवा
 खमतु मे ॥ मित्ती मे सव्वभूणसु वेरं मज्झ न केणइ ॥
 ४९ ॥ एव महं आलोइअ, निदिअ गरहिअ दुंगाछिअं
 सम्मं ॥ तिग्गिहेख पढि उक्तो वंटापि जिणे चउव्वीसं
 ॥ ५० इति ॥ ४९ ॥ ईहा प्रभात के पढिकरुमण मे
 देवासि के ठीकाने राइयं कहना ॥

पीछें दो वादणा दे कर अग्रहमाहियकोज कहे ॥
 इच्छाका० ॥ स० ॥ भ० ॥ अभुट्टियोमि अभि
 तर गइय खामेमि ? गुरु कहे खामेह ॥ संडासा प्रमार्जन
 पूर्वक गोडाली बैठ के, वे राह पडिलेहि ॥ मुहपत्ती वाप
 हाथ मूं पुरं देई, दक्षिण हाथ गुरु सामो करी ॥ नीचो
 नम्यो थको जाँकचि अप्पत्तियं ॥ इत्यादि सपूर्ण कहे ॥

॥ अथ अभुट्टियो ॥

॥ इच्छाकारेण सदिससह भगवन् अभुट्टियोमि अभि
 तर देवसिथो खामेड ॥ इच्छ खामेमि देवसिय जाँक चि
 अप्पत्तियं ॥ पप्पत्तियं भत्ते पाणे निणए वेआवन्चे

आत्मावे संलावे उच्चासणे समासणे अंतरभासाए उवरि
भासाए ॥ जं किंचि ॥ मज्झ विणय परिदीणं सुहुमं वा
वायवं वा तुप्पे जाणह अहं न जाणामि ॥ तस्स मिच्छा-
मि दुक्कडं ॥ इति ॥

॥ इहां सुरु पण मिच्छामि दुक्कडं केहे. पीछे वे वां
दणां देई भूमि प्रमार्जन करता हुआ पगसे अवग्रह वा-
हिर आय के आयरिय उवज्झाए इत्यादि तीन गाथा
कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ आयरिय उवज्झाए ॥

॥ आयरिअ उवज्झाए, सीसे साहमीए कुल गणे
अ ॥ जे मे कया कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥
सव्वस समण संघस्स, भगवओ अंजलि करिअ सीसे ॥
सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ २ ॥
॥ २ ॥ सव्वस्स जीवरासिस्स, भानओ धम्मो निहिअ
निअ चित्त ॥ सव्वं खमा वइत्ता खमामि सव्वस्स अह-
यंपि ॥ ३ ॥

पीछे करेमि भं ते इच्छामि ठामि काउस्सणं तस्सु
त्तरी० श्रीमहावीर स्वामी छमासि तप चितवणा निमित्तं

करेमि काउस्सगं अन्नत्तु० ॥ कहि कें काउस्सग करे,
 काउस्सग में श्री वीरकृत छम्पासी तप चितवन करे ॥
 चौवीस नवकार अथवा छ लोगस्सका काउरसग करे,
 काउस्सग पारिके भगट लोगस्स कहे ॥

॥ छट्टे आचश्यकसी मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे
 पडिलेह ॥ मुहपत्ती पडिलेही ने वाढणां देई सकल तीर्थ
 नाम लई नमस्कार करे, सो लिखे हें.

॥ अथ सकल तीर्थ नमस्कार ॥

॥ स्मररा वृत्तम् ॥

॥ सद्भक्त्या देवलोके रविशशिभजने, व्यंतराणा
 निकाये, नक्षत्राणा निवासे ब्रह्मण पटले तारकाणा वि-
 माने ॥ पाताले पन्नगेंद्रे स्फुटमाणि किरणे ध्वस्तसाद्राय
 कारे, श्री मर्त्यविकाराणा प्रतिदिवसमहं तत्र जित्यानि वदे
 ॥ १ ॥ वृंताद्व्ये मेरु श्रृंगे रुचकगिरिवरे कुंडले हस्तिदंते
 वक्रावारे मूढ नदीश्वरकनकगिरि नैपथे नीलपते ॥ चित्रे
 शूले विचित्रे यमक गिरिवरे चक्राले हिमाद्रौ ॥ श्रीम०
 ॥ ० ॥ श्री शूले दिव्यशृंगे विमलगिरिवरे गर्भुदे पापके

वा, सम्मते तारके वा कुल गिरिशिखरेऽष्टापदे स्वर्ण
 शैले ॥ सहाद्रौ वैजयंते विमलगिरिवरे गुर्जरे रोहणाद्रौ ॥
 श्रीम० ॥ ३ ॥ आघाटे मेदपाटे क्षितितटमुकटे चित्रकूटे,
 त्रिकूटे, लाटे नाटे च धाटे विटपिघनतटे हेमकूटे विराटे ॥
 कर्णाटे हेमकूटे विकटतरकटे चक्रकूटे च भोटे ॥ श्री०
 ॥ ४ ॥ श्रीमाले मालवे वा मलयिनि निपथे मेखले पिच्छ
 ले वा, नेपाले नाहले वा कुवलय तिलके सिंहले केरले वा ॥
 डाहाले कोशले वा विगलितसालिले जंगले वा दमाले
 ॥ श्रीम० ॥ ५ ॥ अंगे वंगे कलिंगे सुगतजनपदे सत्प्रयागे
 तिलंगे गौडे चौडे मुरंडे वरतरद्रविडे उद्रियाणे च
 पौंड्रे ॥ आर्द्रे माद्रे पुलिंद्रे द्रविडकवलये कान्यकुब्जे सु-
 राष्ट्रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ चंदायां चंद्रमुख्यां गजपुरमथुरा पत्तने
 चौज्झयिन्यां, कौशांब्यां कोशलायां कनकपुरवरे देवगि-
 र्यां च काश्यां ॥ रासक्ये राजगेहे दशपुरनगरे भादिले
 ताम्रलिप्त्यां ॥ श्री० ॥ ७ ॥ स्वर्गे मर्त्येऽतरिक्षे गिरि-
 शिखरद्वदे स्वर्णदीनीरतीरे, शैलाग्रे नागलोके जलनिधि-
 पुलिने भूरुहाणां निकुंजे ॥ ग्रामेऽरण्ये वने वा स्थलजल
 विषमे दुर्गमध्ये त्रिसंध्यं ० ॥ ८ ॥ “ श्री मन्मेरौ

कुलाद्रौ रुचकनगवरे शाल्मलौ जंबुवृक्षे, चौज्जन्ये चैत्य-
नन्दं रतिकररुचके कौडले मानुषांके ॥ इक्षुकारे जिनाद्रौ
च दधिमुखगिरौ व्यतरे स्वर्गलोके, ज्योतिलोके भवंति
त्रिभुवन बलये यानि चैत्यालयाणि ” ॥ ६ ॥ इत्थं श्री
जैनचैत्यस्तवनमनुदिनं ये पठन्ति प्रवीणा , प्रोद्यत्कल्याण
हेतुं कलिमलहरणं भक्तिभाजस्त्रि संध्यम् ॥ तेषां श्रीतीर्थ-
यात्राफलमतुलमलं जायते मानवानां, कार्याणां सिद्धिरु-
च्चैः प्रसूदित मनसा चित्तमानन्दकारि ॥ १० ॥ इति चैत्य
बंदन संपूर्णम् ॥ इति ॥ ३२ ॥

पीछै गुरुमुखें पच्चरुकाण करि कें ॥ इच्छामो निस-
दिदयं कहि कें गुरु एक गाथाकी स्तुति कहे.

॥ पीछै णमो खमासमणाण णमोऽर्हत्तिद्धा० ॥ कह
कर. परसमय तिमिरतराणि ए तीन गाथा कहीजें सो
लिखते हैं ॥

॥ अथ परसमय तिमिरतराणि ॥

॥ परसमय तिमिरतराणि, भवसागर वारितरण व-
रतराणि ॥ रागपराग समीरं, वंदे देवं महावीरम् ॥ १ ॥

निरुद्ध संसार विहारकारि, दुरन्तभावारिगणा निकामं ॥
 निरन्तरं केवलिसत्तमा वो, भवावहं मोहभरं हरंतु ॥ २ ॥
 संदेह कारिकुनयागमरूढगूढ, संमोहपंकहरणामल वारिपू-
 रम् ॥ संसारसागरसमुत्तरणोरुनावं, वीरागमं परमासिद्धिक-
 रं नमामि ॥ ३ ॥ परिमल भरलोभालीढलोलालिमाला,
 वरकमलनिवा से हारनीहासे ॥ अविरलभविकारागार
 वित्थित्तिकारं, कुरु कमलकरं मे मंगलं देविसारम् ॥ ४ ॥
 ॥ ३३ ॥ अथवा संसारदावानी तीन गाथा कहेवे, इति
 सो लिखते हैं ॥

अथ संसार दावा स्तुति ।

संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूली हरणे समीरम् ॥
 माया रसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरम् ॥
 ॥ १ ॥ भावावनाम सुरदानवमानवेन, चूलाविलोलकम-
 लावलिमालितानि ॥ संपूरिताभिनतलोकसमीहितानि,
 कामं नमामि जिनराजपदानि तानि ॥ २ ॥ बोधागार्धं
 सुपद पदवी नीरपूराभिरामं, जीवाहिं साविरललहरीसंग-
 मोगाहदेहम् ॥ चूलावेलं गुरु गममणी संकुलं दूरपारं,
 सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥ ३ ॥ आमूला

लोलधूलो वटुल परिभक्ता लीढलोलालिमाला, झंकारा
रावसारा मलदलकमलागारभूमीनि वासे ॥ छायासंभार
सारे वरकमलकरे तारहाराभिरामे वाणीसंदोहदेहे भव,
विरहगरं देहि मे देवि सारम् ॥ ४ ॥ इति ॥ ३४ ॥

इत्यादि तीन गाथा भणों, शक्रस्तव कहे. पीछे
खडा होकर अरिहंत चंड्याणं करोमि काउस्सग ॥ वंद-
णवात्तआए० अन्नत्थु० इत्यादि पाठ कहि कै ॥

काउस्सगमाहे एक नवकार चितवी ॥

एक श्रावक प्रथम काउसग पारी नमोर्हत्सिद्धा०
कही ॥ एक गाथा स्तुति कहे, सो लिखते हैं ।

अश्वसेन नरेसर, वाषादेवी नंद ॥ नव कर तनु
निरूपम, नील वरण सुखरुद ॥ अहि लंछण सेवित,
पडमायइ धरणिद ॥ ग्रह ऊठी भणमूं, नित प्रति पास
निणद ॥ १ ॥ ए गाथा एक जण कहे ॥ दुनरे सव
काउस्सगमाहे रक्षा हुआ सुणे ॥ पीछे एमो अरिहंताणं
कहि कै काउस्सग पारे ॥ इतरे आगे पण जा
खुणा ॥ पीछे लोगस्म रुढे ॥ सच्चलोण अरिहं त चेई-

आणं वंदणवत्ति० ॥ अन्नत्थू० इत्यादि कहि कें ॥ एक
नवकारका काउसग्ग करी पारिके दूजी स्तुति कहे सो
लिखते हैं ॥

॥ कुल गिरिवेयड्डइ, कणयाचल अभिराम ॥ मानुषोत्तर
नंदी रुचक कुंडल सुखठाम ॥ भवणोसुर व्यंतर, जोइस
विमाणी नाम ॥ वर्त्ते ते जिणवर, पूरो मुझ मेन काम ॥ २ ॥

॥ पीछैं पुरकरवरदीवड्डे कहि कें सुयस्स भगवओ०
वंदण० अन्नत्थू० ॥ कही एक नवकारका काउस्सग्ग
पारि कें ॥ त्रीजी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ।

॥ जिहां अंग इग्यारे, वार उपंग छ छेद ॥ दस
पयन्ना दाख्या, मूल सूत्र चउभेद ॥ जिन आगम षड्
द्रव्य सप्त पदारथ जुत्त ॥ सांभलि सईहतां, शूटे करम
तुरत्त ॥ ३ ॥

॥ पीछैं सिद्धाणं बुद्धाणं० कह कें वेयावच्च गरा
णं० ॥ अन्नत्थू० कही ॥ एक नवकारका काउसग्ग
करी पारि कें णमोऽर्हत्सिद्धा० कह कें चौथी स्तुति कहे,
सो लिखते हैं ।

॥ पञ्चमावर्द्ध देवी, पार्श्व यत्त परेतत्त ॥ सहस्रसंघना
 संकट दूर करेवा दत्त ॥ समरो जिनभक्ति, सूरि कहे इक
 चित्त ॥ सुख सुजस समापो, पुत्र कलत्र बहु वित्त ॥४॥
 इति ॥ ३५ ॥

॥ पीछें नीचा बैठ कें एमोत्पूरां० कठि कें ॥ तीन
 स्वमासमणें पूर्वोक्त रीतें ॥ आचार्य, उपाध्याय, सब्ब
 साधु बांटे ॥

॥ अथवा कोई ठिकाने जिमणो हाथ नीचो करि,
 मुखें मुहपत्तो देई अद्वाइज्ज्मेसु कहे हैं सो लिखते हैं ॥
 इति समदाय ॥

॥ अथ अद्वाइज्ज्मेसु ॥

॥ अद्वाइज्ज्मेसु ॥ दीव समुद्देसु ॥ पन्नरससु कम्ममूमीसु
 ॥ जायत केवि साहू ॥ रयहरण गुच्छपाहिग्गहधारा पंच
 महव्वयधारा ॥ अढारहस्स सीलगधारा ॥ अवखयायार
 चग्गिता ॥ ते सब्बे ॥ सिरमा मणसा मत्थएण वंदामि
 ॥ इति ॥

॥ इतना विधि किया पीछें स्थिरता हुवे तो स्वमास
 मण तीन बखत देई ॥ इच्छा करेण सदस्सह भगवन् ॥

(३८)

चैत्यं वंदन करुंजी, यह पाठ कह कर चैत्यवंदन करे,
सां लिखते हैं ॥

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

॥ जय जय त्रिभुवन आदिनाथ, पंचमगति गामी ॥
जय जय करुणा शांत दांत, भविजन हितगामी ॥ जय
जय इंद नरिंद वृंद, सेवित सिरनाभी ॥ जय जय अति-
शयानंतवंत, अंतर्गतजामी ॥ १ ॥ पूरव विदेह विरा-
जता ए, श्री सीमंधरं स्वाम ॥ त्रिकरणशुद्ध त्रिहुंकाल
में, नितप्रति करुं प्रणाम ॥ २ ॥ जं किं त्रिनाम तित्थं०
नमो त्थुणंजावंति चेइआ जावंत केवि साहू०॥ ओर एमोऽर्ह-
त्तिसद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यः ॥ तक कहि के सीमंधर
जीका स्तवन कहे सो लिखते हैं ॥ ३७ ॥

॥ अथ सीमंधरजिनस्तवनम् ॥

॥ जगजीवन जग वालहो ॥ ए देशी ॥

श्री सीमंधर साहिंबा वीनतडी अवधार लाल रे ॥ परम
पुरुष परमेसरू, आतम परम आधार लाल रे ॥ श्री० ॥
केवल ज्ञान दिवाकरु, भांगे सादि अनंत लाल रे ॥ भा-

सक लोकालोक के, ज्ञायक ज्ञेय, अनंत लाल रे ॥ श्री०
 ॥ १ ॥ इंद्र चंद्र चकीसरू, सुर नर रहे कर जोड़ लाल
 रे ॥ पदपंकज सेवे सदा, अणहंता इरू कोड़ लाल रे ॥
 श्री० ॥ २ ॥ चरण कमल पिंजर वसे, मुन मज हंस
 नित भव लाल रे ॥ चरण शरण मोहि आशरो, भव
 भव देवाधिदेव लाल रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ अधम उद्धारण
 छो तुम्हें, दूर हरो भव दुःख लाल रे कहे जिन हर्ष
 मया करी, देजो अविचल सुख लाल रे ॥ श्री० ॥
 ॥ ४ ॥ इति ॥ २० ॥

॥ पीठे जयवीरराय० वंणवत्तियाए० ॥ अन्नत्थु
 कहि कै ॥ एक नवकारका काउसग्ग फरे ॥ पारिके नमो
 ऽर्हत्सिद्धा० कही ॥ परु रुईनी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ महीमंडणं पुणसोवन्न देह, जणाणंदणं केवलन्ना
 णगेहं ॥ महाणंदलच्छी बहु बुद्धी रायं, सुसेवाम सीमंधरं
 नित्थरायं ॥ १ ॥ इमहीज थिरता हुवे तो, श्रीसिद्धा
 चलजी का चैत्य वंदन करे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलजानु चैत्यवंदन ॥

॥ जय जय नाभि नरिंद, नद सिद्धाचल मंडण ॥
 जय जय प्रथम जिणद चंद, भव दुःख विहङ्गण ॥ जय

जय साधु सुरिंद विंद, वंदिय परमेश्वर ॥ जयें जयें जगें
 दानंद कंद, श्रीरिपभ जिणेश्वर ॥ अमृतसम जिन धर्मनो
 ए, दायक जगमें जाण ॥ तुम्ह पद पंकजं प्रीति धर, नि
 शि दिन नमत कल्याण ॥ १ ॥ जं किंचि नामतित्थं०
 ॥ एमोत्थुणं ॥ जावंति चेइआइं० जावंत केवि साहू० ॥
 एमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यः ॥ तं कहि
 कें श्री सिद्धाचलजीका स्तवन केह सो लिखते हैं ॥३६॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचल स्तवनम् ॥

॥ सिद्धाचल गिरि भेट्यां रे ॥ धन्य भाग्य हमारां ॥
 विमलाचलगिरि० ॥ एह गिरिवरनो महिमा महोदो, क
 हेतां न आवे पारा ॥ रायणरूख समोसरचा स्वामी, पूर्व
 नवाणूं वारा रे ॥ ध० ॥ १ ॥ मूलनायक श्री आदि जिनेश्वर,
 चोमुख प्रतिमा चार ॥ अष्ट द्रव्यसैं पूजो भावें, समकित
 मूल आधारारे ॥ ध० ॥ २ ॥ दूर देशथी हूं इहां आयो,
 श्रवण सुनी गुण तोरां ॥ पतित उद्धारण विरुद तुमारा,
 एह तीरथ जग सारा रे ॥ ध० ॥ ३ ॥ भाव भक्ति
 सैं प्रभु गुण गावे, अपना जन्म सुंधारां ॥ जात्रा करि
 भवि जन शुभ भावें, नरक तिर्यच गति वारा रे

॥ ध० ॥ ॥ ४ ॥ संवत अढारे ज्यासी मास आपाढे,
वदि आठम भोमवारा ॥ प्रभुके चरण परतापसिंहमें क्षमा
रतन प्रभु प्यारा रे ॥ ध ॥ इति ॥

॥ पीछे जयवीरराय० ॥ वंदणवत्तियाए० ॥ अन्न-
त्यु० ॥ कहि कें एक नवकारका काउस्सगकरी ॥ पारि
कें नमोर्हत्सिद्धा० ॥ कहि कें ॥

॥ शेषुंजगिरि नमियें, ऋषभदेव पुंडरीक ॥ शुभ
तपनो महिमा, सुणि गुरु मुख निरवीक ॥ शुद्ध मन
उपवासे, विप्रिशुं चैत्यवदनीक ॥ करियें जिन आगल,
टाली वचन अलीक ॥ १ ॥ इति ॥ ४१ ॥ पीछे फुरसद
होवे तो पडिलेहण करे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ पडिलेहण ॥

॥ खमासमण देई इच्छाकारेण सदिस्सह भगवन् ॥
'पडिलेहण सदिस्साउ ? गुरु कहेसंदिस्साएह ॥ बीजे खमा-
समण ॥ इच्छाका० सं० ॥ भ० ॥ पडिलेहण करुं ?
गुरु कहे, करेह ॥ पीछे इच्छं कही ॥ मुहपत्ती पडिलेहे ॥
इमहीज दोई खमासमणे अंग पडिलेहण संदिस्साउं ॥

अंगपडिलेहण करुं. कहीके धोतियुं कणदोरो पडिलेहि
 के ॥ खमासमण देई इच्छाकार भगवन् पसाउ करी प-
 डिलेहण पडिलेहावो जी. एम कही ॥ थापनाचार्य पडिलेह
 रखे, अने जो गुरवादि क थापनाचार्य पडिलेहे, तो पण
 खमासमण देई आग्या मागे, पीछे खमासमण देई ॥ इ-
 च्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे पडि-
 लेहेह ॥ पीछे इच्छं कही ॥ मुहपत्ती पडिलेहि ॥ दोय ख-
 मासमणे ॥ इच्छाका० ॥ सं० भ० ॥ ओहि पडिलेहण
 संदिस्साउं ॥ ओहि पडिलेहण करुं ॥ एम कही कंवल
 वस्त्रादि पडिलेहे ॥ पीछे पोषधशाला प्रमार्जी काजो,
 विधिशुं परठवी खमासमण देई इरियावही पडिक्कमे ॥
 ए मूलविधि जाणवो ॥ इतनी स्थिरता न होवे, तोभी
 दृष्टिपडिलेहण तां अवश्य करणी ॥ अबभी प्राये एही
 करत दिखते हैं ॥

॥ अब सामायिक पारणेका विधि कहे हैं ॥

॥ पीछे सामायिक पारे ॥ एक खमासमण देई ॥
 मुहपत्ती पडिलेहे ॥ फिर खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं०
 ॥ भ० ॥ सामायिक पारुं ॥ गुरु कहे पुणोवि कायव्वो,

पीछें यथाशक्ति कही वली स्वमासमण देई कहे. इच्छाका०
 ॥ सं० ॥ भ० ॥ सामायिक पारेमि ॥ गुरु कहे आचारो
 न मोत्तव्वो ॥ पीछें तहात्ति कही, अर्द्ध नमि ऊभो थको,
 तीन नवकार गुणी नीचो गोडालीयें वेसी मस्तक नमावी ॥
 भयवं दंसणभदो ॥ इत्यादि गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ भयव दसणभदो ॥

॥ भयवं दसण भदो, सुदंसणो धूलिभद वयरोय ॥
 सफलीकयगिहचाया, साहू एहं विहा हुती ॥ १ साहूण
 वंदणेणं, नासइ पाव असकिया भावा ॥ फासु अदाणे
 निजभर, अभिगगहो नाण माईण ॥ २ ॥ छउमत्थो मूढ
 मणो, कित्ति य मित्तिपि संभरइजीवो ॥ ज च न संभ-
 रामि अहं, मिच्छामि दुक्कडं तस्स ॥ ३ ॥ जं जं मणेण
 चित्ति य, मसुहं वा याइ भासियं किंचि ॥ असुहं काएण
 कयं, मिच्छामि दुक्कडं तस्स ॥ ४ ॥ सामाइय पोसहस,
 द्वियस्स जीवस्स जाइ जो कालो ॥ सो सफलो बोधव्वो,
 सेमो संसार फलहेऊ ॥ ५ ॥ सामायिक विधें लीधुं
 विधें कीधुं, विधि करता अविधि आशातना लगी होय.
 दश मनका, दश वचनका बारह काया का, वत्तीस

दूषणमांहि जो कोई दूषण लगा होय. सो सहु मन करे,
वचन कर, कायार्थे करी मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति सामा-
यिक पोसह पारवानी गाथा ॥

॥ अथवा पहिलां सामायिक पारि कें, पीछें पडिले-
हण करे, इहां यथा योग्य अवसरें गुरुकूं सुहराइ पूछै ॥

॥ दूसरा खमासमण देवे, श्री जिन पति स्वरि
जीकी सामाचारी में एसें कह्यो हे ॥ इति सामायिक पा-
रणविधि ॥

॥ अथ संध्याकाल सामायिकविधि लिख्यते ॥

॥ पिछले पहरें धर्मशाला प्रमार्जी वस्त्रादिक पडिलेहे.
जो अवेरो आयो हुवे, तो दृष्टिपडिलेहण करे ॥ पीछें गु-
रु आगें अथवा थापनाचार्यजी आगें आवी भूमि प्रमार्जी
आसण वाम पास सूकी खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका०
॥ सं० ॥ भ० ॥ सामायिक मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु क-
हे पडिलेहेह. इच्छं कहीं ॥ फिर खमासमण देई मुहपत्ती
पडिलेहे ॥ पीछें खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥
भ० सामायिक संदिस्साउं ? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ फि-

। સ્વમાસમણ દેઈ ઇચ્છાકાં ॥ સં० ॥ મં ॥ સામાયિક
 ડ ? ગુરુ કહે, ઠાણહ ॥ ઇચ્છં કહી ફિર સ્વમાસમણ દેઈ
 અર્ધાવનત થઈ ત્રીન નવકાર ગુણી કહે. ઇચ્છકાર મ-
 વન્ ! પસાઓ કરી સામાયિક દંડક ઉચ્ચરાવો જી ॥
 ગુરુ કહે ઉચ્ચરાવેમો ॥ પીછે કરેમિ મંતે સામાયં ॥ ઇ-
 યાદિ સામાયિક સૂત્ર ગુરુ વચન અનુભાપણ કરતો થકો
 ત્રીન વાર ઉચ્ચરી સ્વમાસમણ દેઈ । ઇચ્છાકાં ॥ સં० ॥
 મં ॥ ઇરિયાવહિયં પઢિકમામિ ? ગુરુ કહે પઢિકમેહ ॥
 પીછે ઇચ્છં કહી ॥ ઇચ્છામિ પઢિકમિડં ॥ ઇરિયાવહિયાં
 ઇત્યાદિ પાઠસે ઇરિયાવહિયં પઢિકમી ॥ એક લોગસ્સકા
 કાઝસ્સગ કરી, ણમો અરિહતાણં કહી, કાઝસ્સગ પા-
 રી મુલે મગટ લોગસ્સ કહી, નીચે વેઠ કે મુહપત્તી પઢિ-
 લેહિ વાંદણા દેઈ કહે. ઇચ્છાકાર મગવન્ । પસાઓ કરી
 પચ્ચરુકાણ કરાવોજી. પીછે ગુરુ દિવસ ચરિમ પચ્ચરુકા-
 ણ કરાવે ॥ ગુરુ અમાવે યાપનાચાર્ય સમજે અથવા સ્વ-
 મુલે, અથવા વઢેરા સાધમી મુલે પચ્ચરુકે અને જો-
 તિવિહાર ઉપવાસ કીધો હુવે, તો મુહપત્તી પઢિલેહિ
 પચ્ચરુકાણ કરે ॥ વાંદણા ન દેવે, અને જો ચ

उज्ज्विहार उपवास हुवे, तो पञ्चक्खाण करवुं छे नहीं ॥
 ते माटे मुहपत्ती नहिं पडिलेहे ॥ ए विस्तार विधि है ॥
 पीछें एक खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० सिज्झा
 य संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह. पीछें इच्छं कही
 वली खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सिज्झा
 य करुं ? गुरु कहे करहे ॥ पीछे इच्छ कही ॥ खमासमण
 देई ॥ उभो थको मधुर स्वरें आठ नवकारनी सिज्झाय
 करे ॥ पीछे खमासमण देई ॥ इच्छा ॥ सं० ॥ भ० ॥
 वेसणुं संदिस्साउं ! गुरु० संदिस्सावेह ॥ फिर खमासमण
 देई ॥ इच्छा ॥ सं० ॥ भ० ॥ वेसणुं ठाउ गुरु कहे,
 ठाएह ॥ पीछें इच्छं कही जो शीत कालादि हुवे तो खमा
 समण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पांगरणु संदिसा-
 उं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह ॥ फिर खमासमण देई ॥
 इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पांगरणु पडिग्घाउं ? गुरु कहे
 पडिग्घाएह ॥ पीछें इच्छं कही शुभ ध्यान करे ॥ इति
 संध्यासामायिक विधिः ॥

॥ अथ देवसि पडिक्कमण विधि लिख्यते ॥

प्रथम त्रण खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥

चैत्यवंदन करूँ गुरु कहे करेह. पीछे इच्छं कही जय ति-
हुयण कहे ॥ जिसमें पक्खी तथा चउमासी तथा संवच्छरी
के रोज तीस गाथा कहेनी ॥ और दिनों में तो पांच गाथा
पहेले की, और दोय गाथा पिछाडी की, एवंसात गाथा
कहने की प्रवृत्ति देखनेमें आवे हे. अब जयतिहुअण
लिखते है ॥

॥ अथ जयतिहुअण लिख्यते ॥

॥ जयतिहुअण वरकप्परुख जय जिण धम्मं तरि, जय
तिहुअण कल्लाणकोस दुरियकरि केसरि ॥ तिहुअण
नण अविलघियाण भुवणत्तय सामिअ, कुणसुरु हाइ
जिणैस पास थंभणय पुरट्ठिअ ॥ १ ॥ तई समरंत लहति
जत्तिवर पुत्त कलत्तहि, यण सुवन्न हिरण पुण जण
भुजहि रज्जुमहि ॥ पिअखहि सुक्ख असखसुक्ख तुह पासप
साइण, इय तिहुअण वरकप्परुख सुखरुहि कुण महजिण
॥ २ ॥ जरजज्झर परिजुएण कण्णणट्ठुट्ठ सुकुट्ठिण, च-
रुक्खुकीणखएणगुएण निरसल्लिअ सुलिण ॥ तुह जिण
सरणरसायणेण लहुं हुंति पुणएणव, जय धएणतणि पास
महवि तुहुं रोगहगे भव ॥ ३ ॥ विज्झाजोडस-मंततंतसिद्धि-

स अपयत्तिण, भुवणप्पुअ अटविह सिद्धि सिज्झइ तुह
 नामिण ॥ तुह नामिण अपवित्तओवि जण होइ पवित्त-
 उ, तं तिहुअण कल्लाणकोस तुह पास निरुत्तउ ॥ ४ ॥
 खुह पवत्तइ मंत तंत जंताइं विसुत्तइ, चराथिरगरलगहुग्ग-
 खग्गरिउवग्गाविगंजइ ॥ दुत्थियसत्थ अणत्थ गत्थ नि-
 त्थारइ दय करि, दुरिअइ हरउ सुपासदेव दुरिअक्करिके
 सरि ॥ ५ ॥ तुह आणा थंभेइ भीमदप्पुद्धर सुरवर, र-
 खस जख फाणिंद विंद चोरानलंजलहर ॥ जलथलचा-
 रिरउदखुह पसुजोइणि जोइअ ॥ इयतिहुअणअविलंधि
 आण जय पास सुसामिअ ॥ ६ ॥ पत्थिअ अत्थ अण-
 त्थहित्थभत्तिप्पर निप्पर, रोमंचं चिअचारुकाय किएणं
 नरसुरवर ॥ जसु सेवहिं कमकमलजुअल पक्खालिअ
 कलिमलु, सो भुवणत्तयसामि पास महमदउ रिउवलु ७॥
 जय जोइ अमणकमलभसलभय पंजरकुंजर, तिहुअण-
 जण आणंदचंद भुवणत्तयदिणयर ॥ जय मइमेइणि वारि-
 वाह जयजंतु पिआमह, थंभणयाट्ठिअ पासनाह नाहत्तण-
 कुणमह ॥ ८ ॥ बहु विह वणणअवणण सुण वणिउ छपण-
 हि, सुरकधम्मु कायत्थकाम- नर नियनियसत्थहि ॥ जं

उभायइवहु दरिसणर्थ बहु नाम पसिद्धउ, सो चोइ अ
 मण कमलभसलसुह पास पवद्धउ ॥ ६ ॥ भय विप्लव
 रणऊणिरदसण थरहरिअ सरीरव, तरलिअनयणविस-
 णुसुणुगोगिरगिरकरुणय ॥ तडसहससिसरंति हुति नर-
 नासिअ गुरुदर, महविज्झविसज्झसड पास भय पजरकु-
 जर १० ॥ पःपासविविअसंतनिचपसंतपविचिय, बाहपमाह
 पवूढरूढ हुहदाहसुपुलःय ॥ मणहिमणसउण पुणअप्पाण
 सुरनर, इय तिहुअण आणंदचद जय पास जिणेसर ॥
 ॥ ११ ॥ तुह कल्लाणमहेसुवंद टंकारवापिल्लिअ, वल्लरमल्ल-
 महल्लभत्तिसुरवर गंजुल्लिअ ॥ हल्लुप्फलिअ पवत्तयंति भ-
 वणेहि महमा, इय तिहुअण आणंदचद जय पास सुहु-
 धव ॥ १२ ॥ निम्मल केवल किरणनियराविहुरिअ तम-
 पहर, दंसिअ सयलपयत्यसत्थवित्थरिअ पहाभर ॥ क-
 लिकलसिअ जण धूअलोयलो यणहअगोयर, तिमिरडं
 निरुहर पासनाह भवणत्तय दिणयर ॥ १३ ॥ तुह सम-
 रणजलवत्तिसभिन्न माणव मः मेडाणि, अउरावरसुहुपत्थ-
 वोह कंदलटन्नरेडाणि ॥ जायड फलभरभरिय हरिय दुह-
 दाह अणोवम, इयमय मेडाणि वारिवाह दिसि पास मई

मम ॥ १४ ॥ कय अविकल कल्लाणवल्लिउल्लूरियदुहवणुं,
 दाविअसग्गपवग्गमग्ग दुग्गईग्ग वारणुं ॥ जय जंतुहण-
 णुणतुल्लजंजणि यहियावहु, रम्म धम्म सो जयउ पास ज-
 य जंतु पिआमहं ॥ १५ ॥ भुवणारणनिवास दरिअ पर-
 दरिसणदेवय, जोइणिपूअणखित्तवाल खुद्दासुर पसुवय ॥
 तुह उत्ताठ सुनठ सुठ अविसंठुलचिठहिं, इय निहुअण व-
 णसिंह पास पावाई पणसहिं ॥ १६ ॥ फलिफणफारफु-
 रंतरयण कर रंजिअ नहयल, फलिणी कंदलदलतमाल
 निल्लुप्पलसामल ॥ कमटासुर उवसग्गवग्ग संसग्ग अगं-
 जिअ, जय पच्चरुक्कजिणस पास थंभणय पुरठिअ । १७ ।
 महमणतरलपमाणनेय वायांवि विसंठलु, नियतणुरावि अ-
 विणयसहाव आलसविहिलंधलु ॥ तुहमाहप्पमाणदेव
 कारुण पवत्तउ, इयमइमाअवहीरपासपालहिविसवंतउ ॥
 ॥ १८ ॥ किंकिंकप्पिउणेयकलुणुकिंकिंवनजंपिउ, किं व-
 नचिठिउ किठदेवदीणयमविलंविउ ॥ कासुनकियानिप्प-
 ललल्लुअहोहिंदुहत्तइं, तहविन पत्तउताण किंपि पइं पहु
 परिच-त्तइं ॥ १९ ॥ तुहुं सामिह तुहुं माय वप्प तुहुं मित्त
 पियंयरु, तुहुं गइ तुहुं मइ तुहिज जाण तुहुं गुरु खेमंकरु ॥

दृउं दुह प्परभारि अबराउ राउल निप्पगउ, लीणउ तुह
 कमक मल सरणाजिणपालहि चंगउ ॥ २० ॥ पइकि वि-
 कयनी रोयलोयकिविपावियसुहसय, किर्विमइं मंतमहंत
 केवि किवि साहियसिवपय ॥ किवि गंजिअरिउवगके
 विअ सधवल्लिअ भूयल, मइं अवहीरहि केणपाससर-
 णागयव चउल ॥ २१ ॥ पच्चुवयार-
 निरीहनाढानेप्पण पयोअण, तुहुं जिण पास
 पगेवयार करुणिकक परायण ॥ सत्तु मित्त सम चित्त
 वित्तनयनिंढअममण, माअवही रिअजुगउवि मइं पास
 निरजण ॥ २२ ॥ हउं बहु विहदु हयत्तगत्तुहु दुहनास
 णपरु, हउ सुप्पणहकरुणिक्कठाण तुहुं निरुकरणाकरु ॥
 हउं जिण पासाभिसालु तुहुं तिहुअणसामिअ, जं अवही
 गहि मइं ऊरवत्तइस पामन सोहिअ ॥ २३ ॥ जुग्गा जुग्ग
 विभागनाहनहुजोअणतुहसम, भवणुवयारसुहावभाव करु
 णारससत्तम ॥ समंविममय किंघटानणइ भुविदाहुममंतउ,
 इय दुहमंयव पासनाह मइं पाले पुंजंतउ ॥ २४ ॥ नयदी
 णहदीणयमुएवि अणविकिविजुगय, जं जेइयइवयारुकर
 इउवयाग्गसनुज्झाय ॥ दीणहदीणग्निहीणजेणतुहनाहिणच

तउ, तो जुग्गउ अहमेव पासपालहिमाइं चंगउ ॥ ५ ॥
 अहअणविजुग्गयविसेसकिविमणहि दीणह, जं पास विउ
 वयारुकरइ तुहनाह समग्गह ॥ सुच्चिअकिल कल्लाणु
 जण जिण तुम्ह पसीयह, किं अणुण तंचेव देव मामइं
 अवहीरह ॥ २६ ॥ तुह पत्थणा नहु होइ विहल जिण
 जाण उ किं पुण, हउं दुरकिउ निरुसत्तचत्तदुक्कहु उस्सुय
 यमण ॥ तं मणउ निमिसेण एण एउविज्झाइ लप्भ, सच्चं जं
 भुरिकयवसेण किं नुंवरु पच्चइ ॥ २७ ॥ तिहुअणसामिअ
 पासनाह मइंअप्पय यासिउ, किज्झउ जं नियरुवमरिसुन
 मुणंवहुं जंपिउ ॥ असण जिणजगतुहसमोविद रिकणदयास
 उ जइ अवगिणंसि तुंहिजअहहकिंहोइसहयासउ ॥ २८ ॥
 जइ तुहरूविणकिणविपेअ पाइणवेलांविउ, तउजाणुंजिण.
 पास तुम्ह हउं अंगीकरिअउ ॥ इयमदइत्थिअ जं न होइ
 सातुहओ हाक्का, ररकंतइ नियकिचीणे य जुज्झइअवहीर
 ण ॥ २९ ॥ एवमहाऱिहजत्तदेवइयन्हवणमहुसअ, जं अ;
 णालिय गुणगहण तुम्ह मुणिजणअ णिसिद्धउ ॥ इय मेइं
 पसियमुपासनाहथंभण यपुरइअ, इय मुणिवरसिरि अ-
 भयदेव त्रिणवइ आणिदिअ ॥ ३० ॥ इति श्रीस्तंभनक
 तीर्थ राजश्रीपार्श्वनाथस्तवनम् ॥

पीछें जय महायस कहे, सो लिखते हैं ॥

अथ जय महायस प्रारंभ ॥

जय महायस जय महायस जय महाभाग जय चिं-
तिय सुह फलय ॥ जय समत्य परमत्यजाणय, जय जय
गुरु गिरिम गुरु ॥ जय दुहत्त सत्ताण ताणय, थभणय-
द्विय पासजिण ॥ भवियठ भीम भवत्तु, भव अवण ताण
त गुण ॥ तुज्जि संज नमोत्थु ॥ १ ॥ इति ॥

पीछें शक्रस्तव कह के खडा हो कर अरिहंत चेड-
याण० कगेमि काउस्सग्ग बंदणवत्ति आए० अन्नत्थु०
इत्यादि पाठ कह के काउस्सग्गमाहे, एक नवकार चितवी
एक श्रावक काउस्सग्ग पारी नमोऽर्हत्सिद्धा० कही एक
गाथा स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

अथ महावीर जिन स्तुति प्रारंभ ॥

मृगति मन मोहन, कंचन कोमल काय सिद्धारथ
नदन, त्रिशलादेवी समाय ॥ मृगनायक लब्धन, सात हाथ
तनु मान ॥ दिन दिन सुखदायक० स्वामी श्रीवर्द्धमान १ ॥

ए स्तुति एक श्रावक कहे. और दूसरे श्रावक सब काउस्सगमें रहे उनके सुने. पीछे णमो अरिहंताणं कह के काउस्सग पारे. इसी तरे आगे पण स्तुति की चारों गाथामें जान लेना.

पीछे लोगस्स कह कर सबलोए अरिहंत चेइयाणं वंदणवत्ति० । अन्नत्थू० कहि के एक नवकारका काउस्सग करे. पारि के उक्त स्तुति की दूसरी गाथा कह, सो लिखते हैं ॥

सुर नर किन्नर, वंदित पद अरविंद ॥ कामित भर पूरण, अभिनव सुरतरु कंद ॥ भवियणने तारे, प्रवहण समं निशिदीस ॥ चौवीश जिनवर, प्रणमुं विशवावीस ॥ २ ॥ यह दूसरी गाथा कहि के काउस्सग पारे. पीछे पुरकरवरदी० वंदणवत्तिआए ० अन्नत्थू० कहि के एक नवकार का काउस्सग कर के, पारि के उक्त स्तुति की तीसरी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

अर्थे करि आगम, भांख्या श्रीभगवंत ॥ गणधर ने गुंध्या, गुणनिधि ज्ञान अनंत ॥ सुरगुरु पण महिमा, कह न शके एकंत ॥ समरुं सुखसायर, मन शुद्ध सूत्र

मिद्धांत ॥ ३ ॥ यह गाथा कहि कें सिद्धाणें बुद्धाणें० ॥
 बेयावच्च गराणं अब्बत्थु० ॥ कही काउस्सग्ग पारी उक्त
 स्तुति की चौथी गाथा कहे सो लिखते हैं ॥

सिद्धायिका देवी, वारे विघर्न विशेष ॥ सहु सकट
 चूरे, पूरे आश अशेष ॥ अहोनिश कर जोड़ी, सेवें सुर
 नर इंद्र ॥ जंपे गुण गण इम. श्रीजिनलाभ सूरिंद ॥४॥
 इति महावीरजिनस्तुति ॥ यह चौथी स्तुति कहि कें बैठ
 कें नमोत्थूण कहे. पीछै एक खमासमण देईकें श्रीआचार्य
 मिश्र दूसरा खमासमण दीये. पीछै श्रीउपाध्यायजी मिश्र
 तीसरा खमासमण दे कर श्री वर्तमान आचार्यजी का
 नाम ले कें मिश्र चौथे खमासमण में सर्व साधुजी मिश्र
 इसी तरें कह कर गोडा लीयें बैठ कें मस्तक नमावी
 मव्वस्मवि देवसिय० इत्यादि कह कर तस्स मिच्छामि
 दुक्कड कहे, परंतु ' इच्छाकारेण सदस्सह इच्छं ' ए
 पड न कहे ॥

पीछै खडे हो कर करोमि भंतेसामाइय० इच्छामि
 ठामि काउस्सग्ग जो मे देवसिओ० ॥ तस्सुत्तरि० अब्ब-
 त्थु० ॥ इत्यादि कहि कें, आठ न वकार का काउस्सग्ग

करे. काउस्सग माहे आजूना चउ प्रहर में ॥ इत्यादि पाठ मन में चिंतवी, णमो अरिहंताणं कही काउस्सग पारि के प्रगट लोगस्स केहे ॥

पीछें संभासा प्रमार्ज्जन पूर्वक बैठ के तीसरे आव-
ह्यक सूत्र वांदणां मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिले-
हेह. पीछें मुहपत्ती पडिलेहि के वांदणां देवे. पीछें अवग्र-
हमांहिज उभो थको इच्छा० ॥ सं० भ० देवसियं आ-
लोउं, ऐसा कहे. तव गुरु कहे आलोएह, पीछें इच्छं
आलोएमि० ॥ यह पाठ कह के अतिचार आलोवे. पीछें
सव्वस्सवि देवसियं इत्यादि थी मांडी ने इच्छाकारेण
संदिस्सह पर्यंत कहे, तव गुरु पडिक्कमह. यह पाठ कहे॥

पीछें इच्छं तस्स मिच्छामि दुक्कडं कहि के संभासा
प्रमार्ज्भि प्रमार्जित भूमियें आसन पर बैठ के भगवन् !
सूत्र भणुं ऐसा कहे. तव गुरु कहे भणेह. पीछें इच्छं
कही तीन नवकार गणी, तीन करेमि भं ते भणी ने
इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे देवसिओ इत्यादि कही एक
आवक वदित्तु कहे. दूसरा सब सुने. पीछें खड़ा होकर
अण्णुद्विओमि आराहणाए इत्यादि संपूर्ण पाठ कही, दो

वांटाणा देवे, अरु अवग्रहमाहिज खडा, हुवा इच्छा० ॥
 स० भ० अभुष्टिओमि अभितर देवसियं स्वामेव ? गुरु
 कहे, स्वामेह ॥

पीठे इच्छं स्वामेमि देवसियं, कहि कें गोडालीये बैठ
 कें वाम हाथे मुहपत्तो मुखें धर कें दक्षिण हाथ गुरु
 सन्मुख कर कें सर्व पाठ कहे. पीछे विधि सेंती दो वाट-
 णा दे कर आयरिय उवघाय इत्यादि त्रण गाथा कहि
 कें करेमि भं ते सामाइयं इच्छामि ठामि काउस्सगं इत्या-
 दि कही चारित्र शुद्धि निमित्तें करेमि, काउस्सगं अन्न-
 त्थु० ॥ कहि कें आठ नवकार अथवा दो लोगस्सक
 काउस्सग करि पारि कें पीछें दर्शनशुद्धि निमित्तें प्रगट
 लोगस्स कही, सन्वलोए अरिहंत चेइयाणं० ॥ वंदणव-
 त्ति० ॥ अन्नत्थु० कहि के एक लोगस्सका काउस्सग
 करी पारि कें ज्ञान शुद्धि निमित्तें पुरुरवरदीवइहे, कहि
 कें सुयस्स भगवओ० ॥ वंदणवत्ति० ॥ अन्नत्थु० ॥
 कहि कें एक लोगस्सका काउस्सग करे. पीछें पारिकें
 सिद्धाणं बुद्धाणं० कहि कें वेयावच्चगराणं न कहे पीछे
 मृयदेवयाए करेमि काउस्सगं अन्नच्छू० कही एक नव-

कारनो काउस्सग करे. पीछें गुरुका योग न होवे तां
 एक श्रावक काउस्सग पारि कें एमो अर्हत्सिद्धा० कहि
 कें श्रुत देवताकी स्तुति कहे. गुरु हुवैं तो, गुरु कहे.
 और दूजा सर्व स्तुति सुण कें काउस्सग पारे. अब श्रुत
 देवता का स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रुतदेवताकी स्तुति ॥

॥ सुवर्णशालिनी दयाद् द्वादशांगी जिनोद्भवा ॥
 श्रुतदेवी सदा मह्य, महेश श्रुतसपदम् ॥ १ ॥ पीछें खित्त
 देवयाए, करेमि काउसगं० ॥ अन्नत्थु० कहि कें, एक
 नवकार चितवी पूर्वली परें क्षेत्र देवताकी स्तुती कहे,
 सो लिखते हैं ।

॥ अथ क्षेत्र देवताकी स्तुती ॥

॥ यासां क्षेत्रगताः संति, साधवः श्रावकादयः ॥
 जिनाङ्गो साधयंतस्ता, रक्षंतु क्षेत्र देवताः ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पीछें खडा हुआ एक नवकार कही, संडासा
 ममार्जि उकडू बैस कें छट्टे आवश्यककी मुहपत्ती पडिलेहुं?
 गुरु कहे पडिलेहेह ।

पीछें मुहपत्ती पडिलेही विधिशुं दो वादणां देउ उ-
वरकनक कहे, सो लिखते हैं ।

॥ अथ वरकनक प्रारंभः ॥

॥ उ वरकणय संख विट्ठम मरगय घणसन्निहं विगय
मोहं ॥ सित्तरि सयं जिष्णाण, सब्बा मर पूइय वंदे ॥
स्वाहा ॥ १ ॥ उं भवणवय वाण मतर, जोइसवासवि
माण वासीय ॥ जे केभि दुट्ठदेवा, ते सब्बे उवसमतु मे
स्वाहा ॥ १ ॥ पच्चवखाण नहिं लिया होय तो करे ॥
सामायिक चोइसत्यो पडिक्कमणा, वादणा, काउस्सग,
पच्चवखाण छ आवड्यक साधता कानो, मात्रा, उछो
अधिको अत्तर उंचो नीचो कहो होय, ते सर्वे मन वचन
कायायें करी मिच्छामि दुक्कहं ॥ इच्छा मो अणु
सट्ठिं ॥ कही बैठे. पीछें गुरु स्तुति कहा पीछें श्रावक
समस्त, मस्तर्के अजलि करिकें एमो स्वमासमणाणं ॥
एमोऽर्हत्तिसद्धा ॥ कही ॥ एमोऽस्तु वर्द्धमानाय ० इत्या
दि तीन स्तुति कहे. श्राविका एमो स्वमासमणाण कही
ससार दावाकी स्तुति कहे.

॥ अथ नमोऽस्तु वर्द्धमानाय ॥

॥ नमोऽस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्मणा ॥
 तज्जयावाप्तपोक्षाय, परोक्षाय कुतार्थिनाम् ॥ १ ॥
 येषां विक्रचारविंदराज्या, ज्यायः क्रमकमलावलि दधत्या
 ॥ सदृशैरिति संगतं प्रशस्यं, कथितं संतु शिवाय ते
 जिनेन्द्राः ॥ २ ॥ कपायतापादितजंतुनिर्वृतिं, करोति यो
 जैनमुखांबुदोद्गतः ॥ स शुक्रमासोद्भववृष्टि सन्निभो, ददा
 तु तुष्टिं मयि विस्तरोगिराम् ॥ ३ ॥ श्वसितसुरभिगंधा
 लीढं भृङ्गीकुरङ्गं, मुख शशिनमजत्वं विभ्रती या विभर्ति ॥
 विकच कमलमुच्चैः साऽस्तुवाचित्यप्रभावा, सकलसुखवि
 धात्री प्राणभाजां श्रुताङ्गी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ यह तीन गाथा कहि कैं पीछें एमोच्छूणं० कहि
 कैं, एक श्रावक खमासमण देई कहेः— इच्छाका० ॥ सं०
 ॥ भ० ॥ स्तवन सांभलु ? गुरु कहे, भणेह सांभलेह
 पीछें आसन पर बैठ कैं नमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कहिकैं बढो
 स्तवन कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्री चिंतामणि पार्श्वजिनस्तवनम् ॥

'भविका' श्रीजिनविंव जुहारो, आतप परम आधारो
 रे ॥ भ० ॥ श्री ० ॥ जिनप्रतिमा जिन सारखी जाणो,
 न करो शंका कांई ॥ आगम बाणीने अनुसारें, राखो
 प्रीति सवाई रे ॥ भ० श्री० ॥ १ ॥ जे जिनविंव स्वरूप
 न जाणो, ते कहियें किम जाणो ॥ भूला तेह अज्ञानें भ-
 रिया, नहिं तिहा तत्त्व पिछाणे रे ॥ भ ० ॥ श्री ० ॥
 ॥ २ ॥ अंबड श्रावक श्रेणिक राजा, रावण प्रमुख अ-
 नेक ॥ विविजपरें जिन भगति करंता, पाम्या वर्म विवे-
 क ॥ भ० ॥ ॥ श्री० ॥ ३ ॥ जिन प्रतिमा बहु भगते
 जोता, होय निश्चय उपगार ॥ परमारथ गुण प्रगटे पूर,
 ण, जो जो आर्द्र कुमार रे ॥ भ ० ॥ श्री ० ॥ ४ ॥
 जिनप्रतिमा आकारें जलचर, छे बहु जलधि मभार ॥ ते
 देखी बहुला मत्स्यादिक, पाम्या विरतिप्रकार रे ॥ भ०
 ॥ श्री० ॥ ५ ॥ पाचमा अंगें जिन प्रतिमानो, प्रगटपणें
 अधिकार ॥ मूरियाभ सुर जिनवर पूज्या, रायपसेणी म-
 भार रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ दशमे अंगे अहिंसा दा-
 खी, जिन पूज्या जिनराज ॥ एहवा आगम अरथ मरो-

ढी, करिये केम अकाज रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ७ ॥ सम-
 कितधारी सतीय द्रौपदी, जिन पूज्या मन रंगें ॥ जो जो
 एहनो अरथ विचारी, छठे ज्ञाता अंगें रे ॥ भ० ॥ श्री०
 ॥ ८ ॥ विजयसुरें जिम जिनवर पूजा, कीथी चित्त धिर
 साखी ॥ द्रव्य भाव विहुं भेदें कीनी, जीवाभिगम ते
 साखी रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ९ ॥ इत्यादिक बहु आगम
 साखें, कोइ शंका मति करजो ॥ जिनप्रतिमा देखी नित
 नवली, प्रेम घणो चित्त धरजो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ १० ॥
 चिंतामणि प्रभु पात पसायें, सरधा होजो सवाई ॥ श्री
 जिनलाभ सुगुरु उपदेशें श्री जिनचंद्र सवाई रे ॥ भ० ॥
 ॥ श्री० ॥ ११ ॥ इति श्रीचिंतामणि पार्श्वजिन स्तवन-
 म् ॥

॥ पीछैं तीन खमासमण आचार्य, उपाध्याय, सर्व
 साधु वादी, अट्ठाइज्जमेसु कहनां, फेर खमासमणे ॥ इच्छा
 का० ॥ सं० ॥ भ० ॥ देवसि पायच्छित्त विशुद्धि निमि-
 त्त काउसग्ग करुं ? गुरु कहे करेह. पीछैं इच्छं कहि के
 देवसि पायच्छित्त विशुद्धि निमित्तं करेमि काउस्सग्ग अ-
 च्छू० कहि शोले नवकार अथवा चार लोगस्स का काउ-
 स्सग्ग करे पारी के लोगस्स कहे.

पीछें खमासमण देकर इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥
 खुदोवद्व उडाबखान्ध करेमि काउस्सगं ॥ अन्न-
 त्थु ॥ इत्यादि कही शोल नवकार अथवा चार लोग
 स्सका काउसग करे, पारि कें प्रगट लोगस्स कहे, पीछे
 खमासमण देई ॥ सज्झाय करुं ! तीन नवकारगुणोजै.
 पीछें खमासमण देई के ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भगवन् चै-
 त्यवंदन करुं जी ॥ ऐसा कह कर थभणा पार्श्वनाथजी
 का चैत्यवंदन करे, सो लिखते हैं ॥

अथ श्रीथंभणा पार्श्वनाथजी का चैत्यवंदन

॥ श्रीसेढातटिनीतटे पुरवरे श्रीस्तंभने स्वर्गिरो, श्री
 पूज्याभयदेवसूरिविबुधाधीशै समारोपित ॥ ससिक्त
 स्तुतिभिर्जलैः शिव फलं स्फूर्जत्फणापल्लवः, पार्श्व-कल्प
 तरुः समे प्रथयता नित्यं मनोवाछितम् ॥ १ ॥ आधिव्या-
 धिहरो देवो जीरावल्लो शिरोमणि ॥ पार्श्वनाथो जग
 आथो, नित्यनाथो नृणा श्रिये ॥ इति ॥

॥ पीछें नमोत्पुर्णमे लेकें जयगीरराय सुधी कहे ॥
 पीछें खमासमणपूर्वक मस्तक नमावी 'भिरि थंभणय

द्विये पास सामिणो० ' इत्यादि दोय गाथा कहे सों लिखते हैं.

॥ अथ श्रीथंभयद्वियपाससामिणो ॥

॥ श्री थंभयद्वियपाससामिणो सेस तित्थ सामीणं
॥ तित्थ समुन्नय कारणं, सुरासुराणं च सञ्चेसि ॥ १ ॥
एस मंहं सरणत्थं, काउस्सगं करेमि सत्ताए ॥ भत्तीए
गुणं सुद्वियस्स, संघस्स समुन्नय निमित्तं ॥ २ ॥ इति ॥

॥ श्रीथंभणा पार्श्वनाथजी आराधवा निमित्तं करेमि
काउस्सगं ॥ पीछें खडे हो के वंदण व ० ॥ अन्न ० ॥
कही चार लोगस्सका काउस्सग करि कें पीछें पारी प्र-
गट लोगस्स कहि कें ॥ श्रीखरतरगच्छ सिणगारहारजं-
गम युगप्रधान भट्टारक दादाजी श्रीजिनदत्त सूरिजी चा-
रित्र चूडामणीजी आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सगं ॥
॥ अन्नत्थू० कहि कें, एक लोगस्सका काउस्सग करे,
पीछें प्रगट लोगस्स कहि कें

॥ श्रीखरतरगच्छ सिणगारहार जंगमयुग प्रधान
भट्टारक दादाजी श्रीजिन कुशल सूरिजी चारित्र चूडाम-
णीजी आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सगं ॥ अन्नत्थू ०

कहि कें एक लोगस्सका काउस्सग करे. पीछैं प्रगट लो-
गस्स कहि बैठ कें डावो गोढो उंचो करि कें खमासपण
देई कें, इच्छा० ॥ स ० ॥ भ ० ॥ चैत्यवदन करुं जी.
ऐसैं कहि कें चैत्यवन्दन करे.

॥ अथ चउकसाय ॥

॥ चउकसाय पढिमन्लून्लूरण, दुज्झय मयण
घाण भुसुमूरण ॥ सरस पियंगु वञ्जु गय गामिउ, जयउ
पास भुवणत्तय सामिय ॥ १ ॥ जसु तणु कति कडप्प-
सिणिद्धउ सोढउ फणमाणि किरणालिद्धउ ॥ ननव जल-
हर तडिल्लय लब्धिय, सो जिणु पासु पयच्छउ वंद्धिय ॥
॥ २ ॥

॥ अर्हन्तो भगवंत इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता,
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः ॥
श्रीसिद्धातसुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः, पंचते पर-
मोष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वतु बोधंगलम् ॥ १ ॥

॥ पीछैं नमुत्पूणसे ले कें जयवीराराय पर्यंत कहि
कें, पक्खी, चउम्मासी अरु संबच्छरीके रोज तो बड़ी

शांति सुणे, परंतु और दिनों में छोटी शांति सुणे, सो लिखते हैं.

अथ लघुशांतिस्तवः ।

शांतिं शांतिनिशांतं, शांतं शांताशिवं नमस्कृत्य ॥
 स्तोतुं: शांतिनिमित्तं, मंत्रपदैः शांतये स्तौमि ॥ १ ॥
 ओमिति निश्चितवचसे, नमो नमो भगवतेऽर्हते पूजाम् ॥
 शांतिजिनाय जययते, यशस्विने स्वामिने दामिनाम् ॥ २ ॥
 सकलातिशेषकमहा, संपत्तिसमन्विताय शस्याय ॥ त्रै-
 लोक्त्यपूजिताय च, नमोनमः शांतिदेवाय ॥ ३ ॥ सर्वा-
 मरसुसमूह, स्वामिन्संपूजिताय निजिताय ॥ भुवनजन-
 पालनोद्यत, तमाय सनतं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥ सर्वदुरितौघ-
 नाशन, कराय सर्वाशिवप्रशमनाय ॥ दुष्ट ग्रह भूतपिशा-
 च, शाकिनीनां प्रमथनाय ॥ ५ ॥ यस्येति नाम मंत्र,
 प्रधानवाक्यो पयोगकृततोषा ॥ विजया कुरुते जनहित,
 मिनि च नुता नमत तं शांतिम् ॥ ६ ॥ भवतु नमस्ते
 भगवति, विजये सुजये परापरैरजिते ॥ अपराजिते जग-
 त्यां जयतीति जयावहे भवति ॥ ७ ॥ सर्वस्यापि च
 संवत्स्य, भद्र कल्याण संगलप्रददे ॥ साधूनां च सदा

शिव, सुतुष्टिपुष्टिप्रदे जीयात् ॥ ६ ॥ भव्यानां कृतसिद्धे,
 निर्द्वेति निर्वाणजननी सत्त्वानाम् ॥ अभय प्रदाननिरते,
 नमोस्तु स्वस्तिप्रदे तुभ्यम् ॥ ६ ॥ भक्ताना जन्तुनां, शु-
 भायहे नित्यमुद्यते देनि ॥ सम्यग्दृष्टीना धृति, रति मति
 बुद्धि प्रदानाय ॥ १० ॥ जिनशासननिरतानां, शांतिन-
 तानां च जगति जनतानाम् ॥ श्रीसंपत्कीर्त्ति यशो, वार्द्धि-
 नि! जय देवि विजयस्य ॥ ११ ॥ सलिलानल विपवि-
 पधर दुष्ट ग्रह राज रोगरणभयतः ॥ राक्षस रिपुगण मा-
 री, चारेतिश्वापदादिभ्य ॥ १२ ॥ अथ रत्न रत्न सुशि-
 वं, कुरु कुरु शांति च कुरु कुरु सदेति ॥ तुष्टि कुरु कुरु
 पुष्टि कुरु कुरु स्वस्ति च कुरु कुरु त्वं मे ॥ १३ ॥ भग-
 वति गुणवति शिवशा, तितुष्टि पुष्टि स्वस्तीह कुरु
 कुरु जनानाम् ॥ ओमिति नमो नमो हौं, हौं हूँ ह यः क्ष
 ह्रीं फद् फद् म्वाहा ॥ १४ ॥ एव यन्नामाक्षर, पुरस्सर सं-
 स्तुती जया देवी ॥ कुरुते शांति नमता, नमो नम शांत
 ये तस्मै ॥ १५ ॥ इति पूर्वमूरि दाशित, मत्रपदविदर्भितः
 स्तयः गाते । सलिलादिभय विनाशी, शांत्यादिकरश्च
 भक्ति मताम् ॥ १६ ॥ यथैनं पठति सदां शृणोति भाव-

यति वा यथायोग्यम् ॥ स हि शांतिपदं या यात्, सूरिः
 श्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥ उपसर्गाः क्षयं यांति, छिद्यंते
 विघ्नवल्लयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे
 ॥ १८ ॥ सर्वमंगल मांगल्यं, सर्व कल्याण कारणम् ॥
 प्रधानं सर्व धर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ १९ ॥ इति ॥

॥ पीछें चीराकका अथवा बीजली का चांदणा पड़ा
 होय तो इरियावहि०, तस्सुत्तरी० अन्नत्थू० कहि कैं, एक
 लोगस्सका काउस्सग करे, पीछें प्रगट लोगस्स कही पूर्व
 ली परें सामायिक पारे. पीछें एक स्तवन दादाजी का
 कहे ॥ इति देवसी पाडिकसण विधिः संपूर्णः ॥

॥ अथ कमलदलस्तुतिः ॥

॥ कमलदलविपुलनयना, कमलमुखी कमलगर्भसम
 गौरी ॥ कमले स्थिता भगवती, ददातु श्रुतदेवता सौख्य-
 म् ॥ १ ॥ ज्ञानादिगुणयुतानां स्वाध्यायध्यानसंयमरता-
 नाम् ॥ विदधातु भुवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनाम्
 ॥ २ ॥ यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रियाः
 ॥ सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥ ३ ॥
 इति क्षेत्रदेवता स्तुतिः ॥

॥ कल्याणकमला गेह, नीलदेह महासह ॥ नवखंडा
भिधं पार्श्वं सदा ध्यायामि मानसे ॥

॥ अथ छुटक चैत्यवंदनस्तुतिलिरूप्यते ॥

॥ तत्र प्रथम श्रीपार्श्वजिन स्तुतिः ॥

॥ सकलकुशलवल्ली, पुष्करावर्त्तमेघो, दुरिततिमिर
भानुः कल्पवृक्षोपमानः, भवजल निधिपोत सर्वमंपत्तिहेतु
स भवतु सततं व, श्रेयसे पार्श्वदेवः ॥ १ ॥ इति श्री
पार्श्वजिन० ॥

॥ अथ जिनस्तुतिः ॥

॥ दर्शनाद्दुरित-वन्सी वंदनादिच्छिन्नमदः ॥ पूजना
त्पूरकः श्रीणा, जिन-साक्षात्सुरद्रुमः ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ आदिजिन स्तुतिः ॥

॥ सुवर्णवर्णं गजराजगामिनं, प्रलयबाहुं सुविशाल
लोचनम् ॥ नरामोर्द्धं स्तुतपादपंकजं, नमामि भक्त्या रूपभं
जिनोत्तमम् ॥ ३ ॥ इति आदिजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ शांतिजिनस्तुति ॥

॥ सोलम जिनवर शांतिनाथ, सेवो शिर नाथी ॥
 कंचन वरण शरीर कान्ति, अतिशय अभिरामी
 ॥ अचिरा अंगज विश्वसेन, नरपति कुलचंद ॥
 मृगलंछन धर पदकमल, सेवे सुरनरवृंद ॥ जुगमां अमृत
 जेह्वी ए, जास अखंडित आण ॥ एक मन आराधतां,
 लहिये कोडि कल्याण ॥ ४ ॥ इति श्री शांतिनाथस्तुतिः ॥

॥ अथ नेमिनाथस्तुतिः ॥

॥ प्रह सम प्रणमुं नेमिनाथ, जिनवर जयवंत । याद-
 वकुल अवतंस हंस, उत्तम गुणवंत ॥ समुद्रविजय शिवा
 देवी जास, मति सहितउदार ॥ सुंदर श्याम शरीर ज्योति,
 सोहे सुखकार ॥ गढ गिरनारें जिण लहयं ए, अमृत पद
 अभिराम ॥ तास क्षमा कल्याण मुनि, निशि दिन नमंत
 कल्याण ॥ ५ ॥ इति श्री नेमिनाथ० ॥

॥ अथ श्रीपार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ पुरसादाणी पास नाह, नमिये मन रंग ॥ नील
 वरण अश्व सेन नंद, निरमल निःशंक ॥ कामित पूरण

कल्प साख, वामासुत सार ॥ श्री गोर्डी पुर स्वामि, नाम
जपिये निरंवार ॥ त्रिभुवन पति त्रेवीशमो ए, अमृत
मम जसु वाण ॥ व्यान धरंता एहनुं, प्रगटे परम कल्या-
ण ॥ ६ ॥ इति पार्श्वनाथ स्तुति ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्तुतिः ॥

॥ बद्ध जगदाधार सार, शिव संपात्ति कारण ॥ जन्म
जरा मरणादि रूप, भव ताप निवारण ॥ श्रीसिद्धार्थ
तात मात, त्रिशला तनुजात ॥ सोवन वरण शरीर वीर,
त्रिभुवन विख्यात ॥ अमृतरूपे राजतो ए, चौबीशमो जि-
नराय ॥ क्षमाप्रमुख कल्याण मुखि, आपो करि सुपसा-
य ॥ ७ ॥ इति श्री महावीर ० ॥ अथ पाक्षिकादि पाडि-
क्कमण विधि लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम वंदितु सूत्र पर्यंत दैवसिक पडिक्कमी ॥
॥ १ ॥ खमासमण देई देवसी आलोइय पडिक्कंता ॥ इ-
च्छा ० स ० ॥ भ ० ॥ पक्षिय मुहपत्ती पडिलेहु ? चव-
मासीए चउम्मासिय मुहपत्ती, संवच्छरीये सवच्छरी मुह-
पत्ती पडिलेहुं ॥ एम कहे, पीछें गुरु कहे, पडिलेहेह ॥

पीछें इच्छं कहे, दूजी खमासमण देइ, मुहपत्ती पडिलेहीं,
 बांढणां देई तिहां परेकीमें परुको वइकंतो ॥ चउमासी
 पडि० ॥ चउमासीओ वइकंतो संवच्छरीमें संवच्छरो व-
 इकंतो. एम यथायोगे कहे ॥ पीछें गुरु कहे. पुण्यवंतो
 देवसूने स्थानकें पाक्षिक ॥ चउमासिक सांवच्छरिक भ-
 णजो. छीकिं जयणा करजो. मधुर स्वरें पडिक्कमजो,
 खासे सो विवरा शुद्ध खासजो. मांडलमें सावचेत रहेजो.
 पीछें सघलाही तहात्ति कहे ॥ पीछें ऊठी ॥ इच्छाका० ॥
 ॥ सं० ॥ भ० ॥ संबुद्धा खमाणेणं ॥ अप्पुठिओमि अ-
 ष्मितर परिकयं ॥ २ ॥ खामेऊं ? गुरु कहे, खामेह ॥
 पीछें मस्तकें अंजलि करतो थको, इच्छं खामेमि परिकयं
 ॥ ३ ॥ कही, गोडा लीयें वेसी मस्तक नमावी दक्षिण
 हाथ गुरु साहामो करी, मुहपत्ती मुखें देई ॥ परिकयें प-
 नरसहं दिवसाणं पनरसहं राईणं जं किंचि अप्पत्तियं ॥
 इत्यादि सर्व पाठ कहे. चउमासं चउहं मासाणं अट्ठहं प-
 परुकाणं बीसोत्तरसो राइंदियाणं जं किंचि अप्पत्तियं ॥
 इत्यादि कहे. संवच्छरीयें दुवालसहं मासाणं चउवीसहं
 परुकाणं तिन्निस्सयसट्ठिराइंदियाणं ॥ जं किंचि अप्पत्तियं

इत्यादि कहे ॥ तेवारें गुरु पण मिच्छामि दुक्कडं कह ॥
 तिहा दोय साधु उचरता हुवे तो पाखियें तनि, चउमा-
 सीयें पाच, संवच्छरीयें सात साधुने खमावे ॥ पीछें उठी
 अवग्रहमाहि रहो कहे ॥ इच्छा ॥ सं० ॥ भ ० ॥ प-
 लिंकयं आलोवुं? गुरु कहे आलोएह ॥ पीछें इच्छं आलो-
 एमि, जो मे पाखिकओ ॥ ३ ॥ अइयारोकओ, इत्याद
 सूत्र भणी ॥ संक्षेपें अथवा विस्तारें पाखी चउमासी स-
 वच्छरी, अतिचार आलोवे, सो लिखते ह ॥

अथ बृहदतिचारा लिख्यंते ।

नाणंमि दसणंमिय, चरणंमि तवेय तह यविरियंमि॥
 आयरण आयारो, डअ एसो पंचहा भणिओ ॥ १ ॥
 ज्ञानाचार १, दर्शनाचार २, चारित्राचार ३, तपाचार
 ४, वीर्याचार ५, एव पाच विधि आचारमाहि जिको
 अतिचार पक्ष दिवसमाहि सूक्ष्म, बाढर, जाणता अण-
 जाणतां हुओ होई, ते सह मन, वचन, कायाई करी
 मिच्छामि दुक्कड ॥

अथ ज्ञानाचारना आठ अतिचार ।

काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे ॥
 वंजण अत्थ तदुभय, अट्टविहो नाण मायारो ॥ १ ॥
 ज्ञानः—कालवेलापांहि पढिउं गुणिउं नहीं, अकालें
 पढिउं, विनय हीन बहुमान हीन उपधान हीन श्री उपा-
 ध्यायकनें नहीं पढिउं, अथवा अनेराकने पढिउं अनेरो
 गुरु कहो व्यंजन अर्थ तदुभय कूडो पढ्यो, देव वांदणे
 पडिक्कमणे सिज्झाय करतां, पढतां, गुणतां, कूडो अक्षर
 काने मात्रें अधिको ओछो आगल पाळल भएयो, मूत्र
 अर्थ कूडा भएया, भणीनें बीसारयो, तपोधन तणे धर्म
 काजो अण ऊधरे दांडो अणपडिलेही, वसती अणसो-
 धी, असिज्झाई अणोझा कालवेलापांहि दशवैकालिक
 प्रमुख सिद्धांत भण्यो गुण्यो, योग वहां पखें भएयो
 ज्ञानोपगरण पाटी, पीथी, ठवणी, कवली, नवकरवाली,
 सांपडा सांपडी वहीदस्तरा ओलीया कागल प्रमुखप्रतें
 आशातना हुई, पग लागो थूंक लागो ओसीसे मूक्यो
 कनें छतां आहार नीहार कीधो, ज्ञानद्रव्य भक्षण उपे-
 क्षण कीधो, प्रज्ञापराधें विणाइयो विणसतो उवेख्यो,

उती गते सार मभाल न कीधी, ज्ञानवंत प्रते मच्छर
 बहो, अयज्ञा आजातना कीरी, कोई प्रते भणता गुणतां
 प्रदेप . मत्सर अंतराय अप्रगत कोरो. मातिज्ञान,
 श्रुतज्ञान, अयधितान, मनःपर्ययज्ञान, केवलज्ञान. ए
 पाच ज्ञानतणी अमहंत्वा कर्भी, कोई तोतलो घोडो
 हस्यो, पितर्यो आपणा जाणपणा तणो गर्व चितव्यो,
 अष्टारिअ ज्ञानाचार विपर्ययो जिको अतिचार पक्ष दिवस
 माहे मृन्म, वादर, जाणता, अजाणता, हुबो हांय, ते
 सह मन उचन कायाड रगीमि० ॥

दर्शनाचारना आठ अतिचार ॥ .

निष्क्रिय निष्कारिअ, निष्क्रातिगिच्छा अमृददिहो
 अ ॥ वयूह धिरीकगणे, उच्छल पभावणे अह ॥ १ ॥
 देव गुरु धर्म तणे विषे नि शक पणो न कीधो, तथा
 पकात निश्रय धर्मो नही, मयलाड मत भला छे, ए-
 र्वी'अट्टा कीरी, धर्मनबंधिया फलतणे विषे नि मदेह
 वृद्धि धरी नही. चारित्रिया साधु साधवी तणां मलम-
 लीन गात्र देयी दुगला उपजारी, मिथ्यान्वीतणां पूजा
 प्रभायना देवी, मृददृष्टिणां कीरो. मघमाहे गुणयन

तणी अनुपवृंहणा अस्थिरी करण अवात्सल्य अप्रीति
 अभक्ति चिंतवी. संघमांहे भिरीकरण वात्सल्य शक्ति
 छतें प्रभावना न कीधी, देवद्रव्य विनाशिओ, विणसंतुं
 उवेखीउं छती शक्ते सार संभाल न कीधी, साधर्मिकशुं
 कलह कर्म कीधुं, जिन भवन तणी चोराशी आशातना
 कीधी, गुरुप्रतें तेत्रीश आशातना कीधी, अधौतवस्त्रें देव
 पूजा कीधी, तिहुं ठाम पाखें देवपूजा, वासकूपी कलश
 तणो ठवको लागो, मुखतणी वाफ लागी, ठवणारिय
 हाथथकी पडीउ, पडिलेहवो वीसारयो, नवकारवाली नें
 पग लागो, दर्शनाचार विपईओजिको अतिचा. ० ॥ ३ ॥

॥ चरित्राचारना आठ अतिचार ॥

पणिहाणजोग जुत्तो, पंचहिं समिईहिं तिहिं गुत्तीहिं ॥
 एस चरित्तायारो, अट्टविहो होइ नायव्वो ॥ १ ॥ इरि-
 यासमिती १, भासासमिती २, एषणासमिती ३, आवाण-
 भंडमत्तनिख्केवणासमिती ४, उच्चारपासवणखेलजन्ल
 संघाप्पपरिट्ठावणीयासमिती ५. मनोगुप्ति १, वचन-
 गुप्ति २, कायगुप्ति ३, ए पंच समिती तीन गुप्ति रूडी परें

पाली नहीं ॥ साधु तर्णें सदैव श्रावक तर्णे पोसह पडि-
कमणें लीधे अष्टविध चरित्राचार विषईभोजिको आति-
चार० ॥ ४ ॥

॥ विशेषतः श्रावकतर्णें धर्में श्रीसम्यक्त्वमूल बारह
व्रत श्रीसम्यक्त्वव्रतणा पांच अतिचार,—संका कंख विंगि
च्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु ॥ संका—श्रीअरिहंत
तणा वल अतिशय ज्ञान लक्ष्मी गाभीर्यादिक गुण, शा-
श्वती प्रतिमा चारित्रियाना चारित्र जिन वचन तर्णो संदेह
कीधो. आकाक्षाः—ब्रह्मा विष्णु महेश्वर क्षेत्रपाल गोगो
गोत्र देवता ग्रह पूज्या विणाइग हनुमंत इत्येवमादिक ग्राम
गोत्र देश नगर जू जूआ देव देहराना प्रभाव देखी रोगें
आतंके इहलोक परलोकार्थें पूज्या मान्या, बौद्ध सांख्या
दिक सन्यासी भरडा भगत लिंगिया योगी ढरवेश अनेराइ
दर्शनियानो कष्ट मंत्र चमत्कार देखी परमार्थ जाण्या विण
भूल्या, अनुमोद्या, कुशास्त्र शीख्यां, साभल्या, शराधसं-
त्सरी होली बलेव माहीपूनिम अजापडिवो प्रेतबीज गोरत्रीज
विणायगचोथ नागपंचम भूलणाछठ शीलसातम ओ आ-
ठम नउली नवम अहवदसम व्रत इग्यारस वत्सवारस ध-

नेतरस अनंतचौदश आदित्यवार उत्तरायण नवोदक,
जाग भोग उत्तारण कीधा, पिंपल पाणी घाल्यां घलाव्यां
वर बाहिर कूई तलाव नदी समुद्र कुंडमे पुण्य हेतु स्नान
कीधां, दान दीधां, ग्रहण शनिश्वर माहामास नवरात्रि
नाहिया, अजाणनां थाप्यां, अनेराई व्रत व्रतोलां कीधां,
कराव्यां. त्रिचिकित्साः-धर्म संबंधिया फल तणा संदेह
कीधो, जिण अरिहंत धर्मना आगर विश्वोपकार सागर
मोक्षमार्ग दातार देवाधि देव बुद्धे शुद्ध भावें न पूज्या,
न मान्या, महात्मा ना भात पाणी तणी दुगंछा कीधी,
कुचारित्रिया देखी चारित्रिया ऊपरें अभाव हुआ मि
थ्यात्वी तणी प्रभावना देखी प्रशंसा कीधी, प्रीति मांडी,
दाक्षिणलगें तेहनो धर्म मान्यो ॥ श्रीसमकितविषे अनेरो
जिको अतिचार पक्ष दिवस मांहि सूक्ष्म, वादर, जाणतां
अजाणतां हुआ होय, ते सहूमन, कायाई करी मिच्छा-
मि ० ॥ १ ॥

॥ प्रहिले प्राणातिपात विरमणव्रतें पांच अतिचार,
वह बंध छविच्छेए, अइभारे भक्तपाण बुच्छेए ॥ द्विपद
चउपद प्रतें रीशवशें गाढो वाउ प्रहार घाल्यो, गाढे वं-

जन रांध्या, धरणे भारे पीड्या, निर्लाछन कर्म कीधां.
 चारा पाणी तणी वेला सार संभार न कीधी, लाहिणे दे-
 णे किराहीप्रतें लघाव्युं, तेणें भूखें आपण जिम्या, अ-
 णगल पाणी वावरयु, रुढे गल्युं नही, गलाव्युं नही, अ-
 णगल पाणी जील्या लूगडां धोया, इधण अणसोध्यु
 जाल्युं. साप कानखजूरा सुलहला माकड जूआ गो-
 गिडा साहता मूत्रा, दूखव्या, रुढे यानक न मू-
 क्या, कीडी मकोडी उढेही घीवेली कातरा चूढेलीप-
 तांगिया डेडका अलसिया ईली कूति भांसमसा वगतरा
 माखी प्रमुख जे कोई जीव विणठा चांपिया दूहव्या
 माला हलावता पर्या काग चिडकलाना इंडा फूटा, अ-
 नेरा एकेंद्रियादिक जिके जांव विणठा चाप्पा, दूहव्या,
 हालता चालता अनेरुं कांड काम काज करतां विध्वंस-
 पणुं कीधु. जीव रक्षा रुढी न कीधी, संखारो मूकव्यो,
 सुल्याधान ताउडे दीधां टलाव्या, भरडाव्या खाडला
 ताउडे भाटक्या, मूत्र्या, मूकाव्या, जीवाकुल भूमि ली-
 पावी, वाशी मार राखी रग्यावी, दलणे खांडणे लीपणे
 रुढी जयणा न कीरी. आठम चउदशना नियम भांग्या

धूणी करावी ॥ पहिला प्राणातिपात व्रत विषईओ
अनेरो० ॥ १ ॥

बीजुं स्थूल मृषावाद विरमणव्रतें पांच अतिचार ॥

सहसा रडस्सदारे, मोसुवएसे य कूड लेहे य ॥
सहसात्कारः किण्हिके प्रतें अयुक्तो आल दीधो, किण-
हिक प्रतें एकांतें वात करतां देखी तुम्हें तो राजविरुद्ध
चित्तवो छो. इत्यादिक कहुं. स्वदार मंत्र भेद कीधो,
अनेराई किणहीनो मंत्र आलोच मर्म प्रकाशयो, किणही
नें कूडी बुद्धि दीधी, कूडो लेख लिखयो, कूडी साख
भरी, थापण मोसो कीधो, कन्या ढोर माय भूमि संव-
धिया लेहणें देयणें व्यवसाय वाद वढावढि करतां मोट-
कुं झुठ वोल्युं, हाथ पग भणी शाल दीधी, करडका
मोड्या, अधर्म वचन वोल्यां ॥ बीजे मृषावाद व्रत
विषई० ॥

बीजे अदत्तादानविरमण व्रतना पांच अतिचार ॥
तेनाहडप्पओगे, घर बाहिर क्षेत्र खले पराई वस्तु अण-

मोकलावी लीधी, दीधी, वावरी, चोरीनी वस्तु मोल
 लीधी, चोर धाडीत प्रते संवल दीधु, संकेत कह्युं, विरुद्ध
 राज्यातिक्रम कीधो, नवा पुराणां सरस विरस सजीव
 निर्जीव वस्तु तणा भेल संभेल कीधा खोटे तोल मान
 बहोरथा, दाणचोरी कीधी साटे लांच लीधी, माता
 पिता पुत्र कलत्र परिवार वची जूदी गांठ कीधी, किरण-
 हीनें लेखे पळेखे भुलव्युं पढी वस्त ओलवी लीधी जीने
 अदत्तादान व्रतविपइड० ॥

॥ चौथे स्वदार संतोप मैथुनव्रते पाच अतिचार ॥
 अपरिगृहीत्या इत्तर, अणंग विवाह तिन्वअणुरागे ॥ अप
 रिगृहीतागमन, इत्तर परिगृहीतागमन विधवा वेश्या स्त्री
 कुलाङ्गना स्वदार शोक्तणे विपे दृष्टिविपर्यास कीधो,
 सराग वचन वोल्या, आठम चउदस अनेराई पर्व तिथि
 तेणा नियम भांगा, घर घरणा कीधां, कराव्यां, अनु
 मोदीया, कुविकल्प चित्त्या, अनङ्गक्रीडा कीधी, पराया
 विवाह जोड्या, काम भोगतणेविपेतीव्राभिलाप कीधो,
 कुस्वपन लाधां, नट विट पुरुषशुं हांसुं कीधु, चौथे मैथुन
 व्रत वि०

पांचमे परिग्रह परिमाणव्रतें पांच अतिचार ॥ धन धन खित्त वस्तु ॥ धन धान्य क्षेत्र वस्तु रूप्य सुवर्ण कुप्प द्विपद चतुष्पद नवविध परिग्रह तणा नियम उपरांत वृद्धि देखी मूर्च्छालगें संक्षेप न कीधी, माता पिता पुत्र कलत्रादि तणें लेखें कीधी, परिग्रह परिमाण लेई पढ्यो नहीं. पढी बीसारिओ, नियम बीसारिओ ॥ पांचमे परिग्रह परिमाण व्रतविषयओ ॥

॥ छट्टे दिग्ग्विरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ गमणस्सय परिमाणे ॥ ऊर्द्धदिसि अधोदिसि तिर्यग्दिसि जायवा आयवा तणो नियम जे कोई आज्ञाणे भांगो, एक गमा संकोडी बीजी गमा वधागी, विस्मृति लगें अधिक भूमि गया, पाठवणी आधी मोकली ॥ छट्टे दिग्व्रत वि० ॥६॥

॥ सातमे भोगोपभोग परिमाण व्रत ॥ जेहना भोजन आश्री पांच अतिचार अने करम हूँती पन्नरे, एवं वींश अतिचार ॥ सच्चिते पाडिवद्धे, अपोल दुण्यो लयं च आहारे० सच्चित तणे नियम लीधे अधिक सच्चित लीधुं, तथा सच्चित मली वस्तु अपक्वाहार दुपक्वाहार तुच्छौषधि तणुं भक्षण कीधुं. होला

उंबी पहुंरु काकडी भट्या कीमां, सुल्यां घान प्रमुख भ-
 क्षण कीमां ॥ सच्चित दब्ब विगई, पालह तंवोल वत्थ
 कुसुमेसु ॥ बाहण सयण विलेवण, वंभ दिसि एहाण भ-
 क्षेसु ॥ १ ॥ ए चवदे नियम दिन प्रते संभारया संक्षेप्या
 नहिं, लेई नियम भाग्या. बावीस अभक्ष, वत्तीस अनंत-
 कायमाहि आहुं मूला गाजर पींदाळू सूरण सेलरा काची
 भावली गोल्हा खाधां, चोमासा प्रमुखमांहे वासी कठोल
 नी रोटी खाधी त्रिहुं दिवसनुं दही लीधुं, मधु महुडा मा-
 खण माटी वंगण पीळू पीचू पंपोटा पीपी विप हीम कर-
 हा घोलवडां अणजाण्या फल टांवरु अथाणुं आमणवोर
 काचुं मीठु, तिल स्वसखस काचा कोठिंबडां खाधा, रा
 त्रिभोजन कीधुं, लगवगतीवेलायें व्याळू कीधुं, दिवस उ-
 ग्या विण शिराव्या तथा, पन्नेरे कर्मादान इगालि कम्मे,
 वणकम्मे, साडीकम्मे, भाडीकम्मे, फोडीकम्मे, टंतवाणि-
 ज्ये, लख्ख वाणिज्ये, रस वाणिज्ये, केगवाणिज्ये, विप
 वाणिज्ये, जतपीलणकम्मे, निल्लंछणकम्मे, दयागिदाव-
 णया, सर दह तलाव सोसणया, असई पोसणया, ए
 पांच वाणिज्य पांच कर्म, पांच सामान्य, महारंभ ली-

हाला कराव्या. इंटवाह नीवाह पचाव्या, धाणी चणा पकान्न करी वेच्या. वासी माखण तपाव्यां, अंगीठा की-
धा कराव्या, तिलादिक संचीया, फागुण मास उपरांत
राख्या, कूकडा सूडा प्रमुख पोण्या, अनेकं जे कांई बहु
सावद्य कठोर कर्मादिक समाचरयुं ॥ सातमा भोगोपभोग
व्रत विषइओ० ॥

आठमा अनर्थ दंड विरमणव्रतना पांच अतिचार ॥
कंदप्पे कुक्कुइए० कंदर्प लगे विटनी परें हास्य कुतूहल
मुखादि अंग कुचेष्टा कीधी, मूरख पणा लगे कुणहीने
असंवद्ध वाक्य बोल्या. खांडा कटारी कुसि कुहाडा
रथ ऊखल मूसल अगन घरटी आदिक सज करी
मेल्या, माग्यां आप्यां कणक वस्तु ढोर लेवराव्यां,
अनेरो कांई पापोपदेश दीधो, अंगोलनाहण, दांतण
पगधोअण पाणी तेल अधिक आण्यां, हींडोले हींच्या,
राजकथा देशकथा भक्तकथा स्त्रीकथा पराई वात
कीधी, आर्त रौद्र ध्यान ध्यायां, कर्कश वचन बोल्या,
करडका मोडया, संभेडा लाया, भेंसा सांड कुकडा, मि-
ढा श्वानादि जूभतां कलह करतां जोयां, खाधी लगे अ-

देखाई चितवी माटी मीठुं कण कपासिया काजाविए चां-
 प्या, तेह उपर बयठा, आळे वनस्पति खुंदी, छास-पा-
 णी विरस तेळ गुल आम्लवेतस बेरजादिक तथा भा-
 जन उघाढां मूक्यां. ते मांही कीढी कंयुआ माखी उंदर
 गिरोली प्रमुख जीव विणडा, सूडा प्रमुख जीव क्रीडा हे-
 तें बांधी राख्या, घणी निद्रा कीधी, राग द्वेष लेंगें ए-
 कने रुद्धि परिवार बांछी एकने मृत्युहाणे विमासी आं-
 ठमा अनर्थ दंडव्रतावि० ॥

॥ नवमा सामायिकव्रतें पांच अतिचार ॥ तिविहे
 दुष्पाणिहाणे सामायिक लीधे मन आहट दोहट चितव्यु,
 वचन सायद्य, बोल्युं, काय अणपडिलेह्युं हलाव्यु, छती
 नेलाइं सामायिक न लीधुं, सामायिक लई उघाडे मुखे
 बोल्या, ऊंच आवी कीधी, बजि दीवा तथा उजाही
 लागी. कण कपासीया माटी मीठुं नील फूल हरिकायना
 सघट्ट हुआ, पुरुष तिर्यचना संघट्ट हुआ, तया स्त्री
 तिर्यची आभही, मुहपत्तीयो सघट्टी, सामायिक अण
 पूरउ पारिउ, पारउ बीसारिउ, नवमे सामायिक व्रत-
 विषयो० ॥

॥ दशमे देशावकाशिक व्रतें पांच अतिचार ॥ आ-
 रावणे पेसवणे ० ॥ आणवणप्पओगे पेसवणप्पओगे स-
 दाणुवाइ रूवाणुवाइ वाहिया पुग्गल करेवे ॥ नियमित
 भुमिकामांहि वाहिर थकी कांई अणाव्युं, आप कन्दाथी
 वाहिर मोकल्या, साद करी रूप देखाडी कांकरी नाखी
 आपणपणुं छतुं जणाव्युं ॥ दशमे देशावकासिग व्रतवि-
 षड्यो ० ॥ १० ॥

॥ इग्यारमे पोपधोपवास व्रतें पांच अतिचार ॥ सं-
 थारुच्चार विही, पमाय तह चेव भोअणा भोए ० ॥ पो-
 सह लीधे संथारा तणी भूमि वाहिरला थंडिलां दिवसें
 शोध्यां पडिलेह्यां नहीं, मातरुं अणपाडिलेह्युं वावरिउं,
 अणपुंजी भूमिकाइं परठाविउं, परठवतां चिन्तवणा न की-
 धी, अणुजाणह जस्सुग्गहो न कहो. परठव्यां पूठें वार
 ञ्ण वोसिरामि वोसिरामि न कहुं. पोसदशालामांहि प-
 इसतां नीसरतां निस्सही आवस्सही कहेवी वीसारी, पृ-
 थ्वीकाय, अप्पकाय तेऊकाय वनस्पतिकाय त्रसकाय त-
 णा संघट्ट परिताप उपद्रव हुआ, संथारा पोरसि तणी
 विधि भणओ वीसारिओ. पोरसि मांहि उंघ्या, अवधि

संथारुं पाथरुं, काल वेलायें पडिक्कमणुं न कीधउं, पा-
रणादिक तणी चिंता निपजावी, कालवेला देव वांदवा
वीसारिया, पोसह असूरो लीयो, सवारो पारीयो, पर्व
तिथि आवी पोसह लीथो नहीं ॥ इग्यारमे पोपधोपवास
व्रतविषयो० ॥

॥ वारमे अतिथि संविभागव्रतें पांच अतिचार ॥
सच्चित्ते निक्खवणे० सच्चित्तवस्तु हेठे ऊपरि थेंके महा-
तमा प्रतें असूभतुं दान दीधुं, अदेवा तणी बुद्धं सूभतुं
फेढी असूभतुं कीधुं, आपणु फेढी परायु कीधुं, विहरवा
वेला टलि गया असुर करी महातमा तेड्या, मच्छरलगें
दान दीधु, गुणवंत आवे भगति न साचवी, छती शक्ति
साधार्मिक वात्सल्य न कीधुं अनेराइ धर्म क्षेत्र सीढाता
छती शक्तें उद्धरया नहीं वारमे अतिथि संविभाग व्रत
विषयो० ॥

सल्लोहणा तणा पांच अतिचार. इहलोए, परलोए० ॥
इहलोका ससप्पओगे परलोगासंसप्पओगे जीविआसंस-
प्पओगे मरणासंसप्पओगे कामभोगासंसप्पओगे इहलोक
मनुप्पभव मान महत्त्व लोक तणी सेवा ठकुराई बुलदेव

वासुदेव चक्रवर्ति पद वाञ्छयां. परलोक इंद्र अहमिंद्र
 देवाधिदेव पदवी वांछी, सुख आव्ये जीववा तणी वांछा
 कीधी, दुःख आव्ये मरवा तणी वांछा कीधी कामभोग
 तणी इच्छा कीधी ॥ संलेहणाव्रतावि० ॥

तपाचार वारभेदे ॥ छ अभ्यंतर, छ बाहिर, अण-
 सणमूणोयारिया, अणसण कहिये उपवास, ते पर्वतिथि
 छती शक्ते कीधुं नहीं. जणोदरी ते पांच सात कवल
 जणा रखा नहीं, द्रव्य संचेप विगय प्रमुख परमाण कीधुं
 नहीं. आसनादिक काय किलेश न कीधो, संलीणता
 अंगोपांग संकोच्यां नहीं, नवकारसी पोरसी गंडसी
 मूठसी साठपोरसि पुरिमद्द एकासणो वेआसणो नीवी
 आंबिल प्रमुख पच्चरकाण पारवां वीसारयां. वेसतां
 नवकार भणयो नहीं, ऊठतां दिवसचरिमं न कीधुं, नी-
 वी आंबिल उपवासादिक तप करी काचुं पाणी पीधुं,
 वमन थयुं ॥ बाह्य तपव्रत विपइयो० ॥

अभ्यंतर तप ॥ पायच्छित्तं विणओ० गुरु कर्ने मन
 सुद्धे आलोयणा लीधी नहीं, गुरुदत्त प्रायच्छित्तं तप ले-
 खा शुद्ध पुहचाइयुं नहीं, देव गुरु संघ साहम्मी प्रते वि-

नय साचव्यो नहीं, वाचना पृच्छना परावर्त्तना अनुमेक्षा
धर्मकथा लक्षण पंचविध सिञ्जाय कीधी नहीं, धर्म
ध्यान शुक्लध्यान ध्यावु नहीं, कर्म क्षय निमित्त लोगस्स
दस वासनो काउस्सग्ग न कीधो ॥ अभ्यंतर तेष
विषइयो० ॥

वीर्याचारना तीन अतिचार ॥ अणगूहिय वलवि-
रीओ पडिक्कमइ जो जहुत ठाणेषु ॥ जुंजइअ जहा धाम
नायव्वो वीरियायारो ॥ १ ॥ पढवे गुणवे विनय वेया-
वच्च देवपूजा सामायिक दान शील तप-भावना प्रमुख
धर्म्य कृत्यतणे त्रिपे मन वचन कायतणु छतु वल वीर्य
गोपव्यु, रुढा पंचाङ्ग खमासमण न दीग, वेठा पडि-
क्कमणु कीधुं ॥ वीर्याचारव्रत विषइयो० ॥

नाणाइ अट्ठ अइ वय, समसंलेहण पण पनर कम्पेसु
वारस तवविरिअ तिगं, चउवीस सय अइयारा ॥ १ ॥
पडिसिद्धाण करणे० ॥

जिनप्रतिपिद्ध बावीस अभक्ष्य वत्तीस अनंत काय
बहुबीज भक्षण महाआरंभ महापरिग्रहादिक कीधा, नित्य
कृत्य देवपूजा सामायिकादिक तथा तीर्थयात्रादिक न

कीधां, जीया जीवादि विचार सदहिया नहीं, आपणी कुमति लगें उत्सूत्र प्ररूपणा कीधी, प्राणातिपात १, मृषा वाद २, अदत्तादान ३, मैथुन ४, परिग्रह ५, क्रोध ६, मान ७, माया ८, लोभ ९, राग १०, द्वेष ११, कलह १२, अभ्याख्यान १३, परपरिवाद १४, पैशून्य १५, अरतिरति १६, मायामृषावाद १७, मिथ्यात्वशल्य १८, ए अदारह पापस्थानकमांहि जे कांइ कीधो करान्यो अनुमोद्यो ॥ एवं प्रकारें श्रावक धर्म श्री सम्यक्तत्व मूल वारह व्रत चोवीसां सो अतिचारमांहि जिको कोई अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म वादर जाणतां अजाणतां हुवो होय ते सहू मन वचन कायायें करी मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति श्री श्रावकोंके वारह व्रतका अतिचार सं ०

पीछें सव्वस्सवि पक्खिखय ॥ इतियादि इच्छाकारेण संदिस्सह पर्यंत कहे. तेवारें गुरु कहे चउत्थेण पडिक्कमह. चउमासे छठेण पडिक्कमह. संवच्छरीय अठमेण पडिक्कमह. इच्छं तस्स मिच्छामि दुक्कडं कही. द्वादशावर्त्त वांदणां देवे. पीछें इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन्, देवसियं आलोईयं पक्खिकंता ॥१॥ पत्तेयखामणेणं, अप्पिण्ठिओमि

अभितरपक्खियं ॥ ३ ॥ खामेज्जं? गुरु कहे खा० ॥ पीछें
 इच्छं खामेमि पक्खियं ॥३॥ इत्यादि पाठ सर्व पूर्वं कह्यो,
 तिम कही मिच्छामि दुक्कहं देई खमावे, पीछे वे वांदणा
 देई भगवन्? देवसिय आलोइयं पडिक्कंता पक्खियं ॥३॥
 पडिक्कमा वह? गुरु कहे सम्मं पडिक्कमह. पीछें इच्छं क-
 ही करोमि भते सामाइय ॥ इच्छानि ठामि काउस्सगं जो
 मे पक्खिओ ॥ ३ ॥ इत्यादि कही तस्सुत्तरी ०
 अन्नत्थू० ॥कही ॥ काउस्सग करे, गुरु, पाखीसूत्र कहे,
 ते सांभले. अने गुरुथकी जूदा पडिक्कमता हुवे, तो एक
 श्रावक खमासमण देई कहे. भगवन्। सूत्र भणुं गुरु क-
 हे, भणोह. एसो वचन मनम धारी ॥ इच्छं कही, उभो
 थको, हाथ जोड़ी मुहपत्ती मुखें देई. तीन नवकार कही,
 मधुर स्वरें सूत्रार्थ मनमें चिंतवतो वादित्तु सूत्र गुणे. वीजा
 श्रावक करोमि भं ते ० इत्थामि ठामि काउस्सगं तस्सुत्त-
 री० अन्नत्थू० कही काउस्सगमें रह्या सुणे, सूत्रप्रांते ण-
 यो अरिहताण कही. काउस्सग पारी, उभा थका तीन
 नवकार गुणी वैसे. पीछें ॥ ३ ॥ नवकार ॥ ३ ॥ करोमि
 भ ते कही, इच्छामि पडिक्कमिजं जो मे पक्खिओ ॥ ३ ॥

इत्यादि कही, वंदि-तु सूत्र गुणे, पडिक्कमे देवसियं सव्वं।
 एहने ठिकारें पडिक्कमे पक्खियं, चउम्मासियं, संक्ख-
 रियं सव्वं कहे. पीछें उठी, अण्णुठिओमि आराहणाए इ-
 त्यादि पूर्ण भणी, खमासमण देई इच्छा ० ॥ सं ० ॥
 भ ० ॥ मूलगुण उत्तरगुण अतिचार विशुद्धि निमित्तं,
 काउस्सग करुं? गुरु कहे करेह. पीछें इच्छं कही, करेमि
 भंते सामा० इच्छामि ठामि काउस्सगं तस्सु० अन्नत्थू
 इत्यादि कही, पाखी यें वार लोगस्स चउमासियें वीस
 लोगस्स संवच्छरीयें चालीस लोगस्सनो काउस्सग
 कर एक नवकार उपर, काउस्सग करी. पारी लो-
 गस्स कहे. वेसी मुह पत्ती पाडिलेही, वे वांदणां देई इच्छा
 ॥ सं० ॥ भ० ॥ समाप्ति खामणेणं ॥ अण्णुठिओमि
 अण्णितर पक्खियं ॥ ३ ॥ खामेउं गुरु कहे खामेह पीछें
 इच्छं खामेमि पक्खियं ॥ इत्यादि पाठ पूर्वे कळो. तिमं
 कहे पीछें इच्छाका० सं० ॥ भ० ॥ पाखी ॥ ३ ॥ खाम
 णां खामूं? गुरु कहे, पुण्यवंतो चार वेर खमासमण
 देई. तीन तीन नवकार कही, पाखी ॥ ३ ॥ समाप्त
 खामणा खामेह. पीछें श्रावक एक खमासण देई. मस्तक

नीचुं नमावी, तीन नवकार गुणे इम चार वार कहे,
 पीछें गुरु कहे नित्यारग पारगाहोह. पीछें श्रावक कहे.
 इच्छं उच्छामि अणुसट्ठि कही, गुरु कहे, पुण्यवंतो पाखी
 ने लेखे, एक उपवास अथवा दोय आंविल अथवा तीन
 नीवी अथवा चार एकासणा, अथवा वे हजार सज्भाय
 करी, एक उपवासनीं पेठै पूरज्यो पाखीनें स्थान कें देव
 सिक भणजो एम चउमासे ए सर्व दुगुणो कहणो, संव
 च्छरींय त्रिगुणो कहणो पीछें जिण तप कीधो हुवे ते
 पइष्टिय कहे, न कीधी हुवे ते तहाचि कहे ॥ पीछे वे वां-
 दणां देई, अभुद्धिउमि अभितर देवसियं खामेमि इत्यादि
 कहे पीछें वे वांदणा देई आयरिय उजभाए० तीन गाथा
 कहे, इम आगे सर्व विधि देवसिक पढिक्मणानी करें,
 पण इतरो विशेष है श्रुत देवतानो काउस्सग करी स्तुति
 कहे, पीछें भवण देवयाए करोमि काउस्सगंग, इत्यादि
 त्रिधे भवन देवता के काउस्सग करी स्तुति कहे, सो
 लिखते हैं ॥

॥ अथ भुवनदेवता स्तुति ॥

चतुर्वर्णाय संघाय, देवी ' भुवनवासिनी ॥ निहत्य
 दुरितान्येषा, करोतु सुखमक्षयम् ॥ १ ॥

॥ क्षेत्र देवतानो काउस्सग्ग करे, तथा तीन पवे
 वडा स्तवन अजितशांति कहणी, लघु स्तवन उपसर्गद्वर
 स्तोत्र कहणी, तथा पाडिकमणो पुरो हुवां पीछे एक
 थावक गुर्वाज्ञायें नमोऽर्हत्तिसद्धा० कही, वडी शांति का
 स्तोत्र कहे, बीजों सर्व सुणे, जिएने रात्रि पोसह न दुए
 ते पोसह सामयिक पारी सांभले ॥ इति पात्तिकादि
 तीन पाडिकमणाविधि ॥

अथ दस पच्चरूपाणविचार लिख्यते ॥

तिहां प्रथम चउदे नियम संभारे, सो इस तरे पच्च-
 रूपाण करे । उगए सूर नमुकार सहियं मुंठसहियं पच्च-
 रूपाइ चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं
 अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वस-
 माहिवत्तियागारेणं विगइओ पच्चरूपाइ अण्णत्थणाभो-
 गेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहित्थसंसिद्धेणं ढक्कित्त-
 विवेगेणं पडुच्चमस्सिकएणं पारिद्धावणियागारेणं महत्तरा-
 गारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं देसावगासियं भोगपरि-
 भोगं पच्चरूपाइ अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्त-

रागारेणं सञ्चसमादिवृत्तियागारेण वोसिरड ॥ इति नव-
कार सी पञ्चस्वाण ॥ १ ॥

तथा जो श्रावक नियम संभारे नहिं, सो विगड्का
ओर देसावगासिकेका आगार न पञ्चस्वते निकेवल नव-
कारसी आदिक पञ्चरकाण करे सो लिखते है ॥

॥ उगए सूर नमुक्कार सहियं पञ्चरकाई ॥ चउव्वि-
हपि आहार असणं पाण खाइमं साइम अन्न० ॥ सह०
वोसिरामि ॥ इति नवकारसी पञ्चस्वाण ॥ आगार ॥ २ ॥

॥ पोरसी मुठसी पञ्चस्वामि उगए सूर चउव्विहपि
आहारं असण पाणं खाइम साइम अणत्थ० ॥ सहसा०
पत्थणकालेण दिसा मोहेण ॥ साहुवयणेणं सञ्च० वि-
गड पञ्चस्वामि. इत्यादि पृथ्वं की परें रुहणा ॥ इति
पोरसी पञ्चस्वाण ॥ ३ ॥ आगार ॥ ६ ॥

॥ इस माफक सादह पोरसी का पञ्चरकाण जाण-
ना इतना विशेष है, पोरसि पञ्चरकाई के ठिकाने इहा
सादह पोरमि पञ्चस्वाइ रुहणां ॥ इति सादह पोरसि-
पञ्चकाण ॥ आगार ॥ ६ ॥

सूरे उगए पुरिमद्ध अबद्ध वा पच्चरकाई, चउन्वि-
हंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण० ॥ सह०
॥ पच्छ ० ॥ दिसागो० ॥ साहु० ॥ मह० ॥ सव्व० ॥ वि-
गइउ पच्चरकाई इत्यादि पूर्ववत् ॥ इति पुरिमद्धपच्च-
क्काण ॥ ६ ॥ आगार ॥ ७ ॥

॥ पोरसिं साट्ठ पोरसिं वा पच्चक्काई, उगए सूरे
चउन्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण०
सह० पच्छ० दिसा० साहु० सव्व एकासणं विआसणं वा
पच्चक्खाइ. दुविहं तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं
अण० सह० सागारिआगारेणं आउट्टणपसारेणं गुरुअप्पु
ट्ठाणेणं पारि० मह० सव्वं० देसा वगांसियं० इत्यादि
पूर्ववत् ॥ ४ ॥ इति एकासण विआसण पच्चक्खाण ॥
आगार ॥ ८ ॥

॥ पोरसिं साट्ठ पोरसिं वा पच्चक्खाइ. उगए
सूरे चउन्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण०
सह० पच्छणका० दिसा० साहु० सव्व एकासण एग
ट्ठाणं पच्चक्खाइ. दुविहं तिविहं चउन्विहंपि आहारं असणं
खाइमं साइमं अण० सह० सागारिआगारेणं गुरुअप्पु

द्वाणेणं पारिद्धाव० मह० सन्व० देसाव० इत्यादि पूर्ववत्
॥ ५ ॥ इति एकलद्धाणा पच्चक्खाण ॥ आगार ॥ ७ ॥

॥ पोरसिं साद्ध पोरसिं वा पच्चक्खाइ, उग्गए
सूरे चउव्विहंपि आहार असणं पाणं खाइम सा० अणण०
सह० पत्थ० दिसामो० साहु० सन्व० आयंविण पच्च-
क्खाइ अणत्थ० सह० लेवालेवेणं गिहत्थससिठेणं उरि-
कत्ताववेगेण पारिठा० मह० सन्व एकासण पच्चक्खाइ,
तिविहंपि आहार असण खाइम साइमं अणण० सह० सागा
रिआगारेणं आउट्टणपसारेणं गुरु अण्णुद्धाणेणं पारिद्धा०
मह० सन्व० वासिरइ ॥ ६ ॥ इति आविण पच्चक्खाण
॥ आगार ॥ ८ ॥

॥ पोरसिं साद्ध पोरसिं वा पच्चक्खाइ उग्गए सूरे
चउव्विहंपि आहार असण पाणं खाइमं साइमं अणत्थ०
सह० पत्थ० दिसा० साहु० सन्व० ॥ निव्विगइयं पच्च
क्खामि, अणण० सह० लेवालेवेणं गिहत्थसंसिठेणं उरिख-
त्तविवेगेणं पडुच्चमक्खिणणं पारि० मह० सन्व० एका-
सणं पच्चक्खाइ, तिविहंपि आहार असणं खाइमं साइम
अणण० सह० सागा० आउट्ट० गुरु० पा० मह० सन्व०

देसावगासियं भोगपरिभोगं पञ्चकखामि अण० सह०
मह० सव्व० वोसिरामि ॥ इति नीवी पञ्चकखाण ॥
आगार ॥ ९ ॥

॥ सूरे उग्गए अप्पत्तद्धं पञ्चकखामि. चउव्विहंपि
आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण० सह० मह०
सव्व० देसा वगासियं भोगपरिभोगं पञ्चकखामि. अण०
सह० म० सव्व० वोसिरामि इति चउव्विहार उपवाम
पञ्चकखाण ॥ ६ ॥

सूरे उग्गए अप्पत्तद्धं पञ्चकखामि. ति विहंपि आहारं
असणं खाइमं साइमं अण० सह० पाणहार पोरसिं सा-
ह पोरसिं पुरिमद्धं अवद्धं वा पञ्चकखाइ अण सह० पत्थ
ण० दिसा० साहु० सव्व देसावगासियं भोगपरिभोगं पञ्च
कखामि. अ० स० म० सव्व० वोसिरामि इति ति विहारं
उपवास पञ्चकखाण ॥

॥ पोरसिं साह पोरसिं पुरिमद्धं अवद्धं वा पञ्च
कखामि. उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं
खाइमं साइमं अण० सह० पत्थ० दिसा० साहु० सव्व०

एकासणं एगट्ठाणं दत्तियं पच्चक्खामि. तिविहं चउव्वि-
हपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अएण० सह०
सागा० गुरु० मह० सब्बविगडओ पच्चक्खामि. इत्यादि
पूर्ववत् ॥ इति दत्तिपच्चक्खाण ॥ ६ ॥

॥ दिवसचरिमं पच्चक्खाड. चउव्विहंपि आहारं
असणं पाणं खाइमं साइमं अएण० सह० मह० ॥ सब्ब
वोसिरड ॥ इति दिवसचरिमं पच्चक्खाण ॥ १० ॥

॥ दिवसचरिमं पच्चक्खामि दुविहंपि आहारं असणं
खाइमं अएण० सह० मह० सब्ब० वोसिरामि देसाग्गा
मियं पूर्ववत् ॥ इति दिवसचरिमं दुविहारं पच्चक्खाण ॥ ६ ॥

॥ पाणहारं दिवसचरिमं पच्चक्खामि अन्न० सह०
मह० सब्ब० वामिरामि ॥ इति पाणहारं उपवासरो
पच्चक्खाण ॥ ६ ॥

॥ भवचरिमं पच्चक्खाड तिविहंपि चउव्विहंपि आ-
हारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्न० सह० मह० सब्ब०
वोसिरामि ॥ आगार ॥ ४ ॥ भवचरिमं, दो आगारकाभी
दोय ॥ इति भवचरिमं पच्चक्खाण ॥

॥ तथा इमहिज गंतिसहि मुट्टिसहि अंगुट्ट सहि प्रमु-
ख अभिग्रह पच्चक्खाणकेभी ए चार आगार. अण्ण०
स० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ पांचमो चोलपट्टागारेणं
तो साधुकों होय ॥ इति अभिग्रह पच्चक्खाण ॥

अहण्णं भंते तुम्हाणं समीवे देसावगासियं पच्चक्खा-
मि दच्चओ वित्तओ कालओ भावओ दव्वओणं देसावगा-
सियं वित्तओणं उत्थ वा अण्णत्थ वा कालओणं मुहुत्त
धारणाप्रमाणं जावनियमं पच्चक्खामि भावओणं जावग-
हेणं न गहिज्झामि छलेणं न छलिज्झामि अण्णेणकेवि
रायकेणं वा एसो परिणामो न पडिवज्झइ ता अभिग-
ह अण्णत्थणाभोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सव्व-
समाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥ इति देसावगासी पच्च-
क्खाण ॥

॥ तथा साधु पच्चक्खाण करे. तव देसावगासी
तुहीं पच्चक्खे. अरु तविहार उपवासमें आबिलमें नीवी
में एकासण प्रमुखमें पाणस्सका छ आगार पच्चक्खे सो
लिखते हैं. पाणस्सलेवाडेण वा अलेवाडेण वा अत्थेण
वा बहुलेण वा ससित्थेण वा असित्थेण वा वोसिरइ ॥

॥ अथ पञ्चक्खाण आगार संख्या ॥

॥ दोचेव नमुक्कारो आगार छच्च हुति पोरसिए ॥
सत्तेवत्त पुरिमहे, एगासणांमि अट्टेव ॥ १ ॥ सत्ते गट्ठाण-
स्सउ, अट्टेवय आयंवल्लमि आगारा ॥ पंच वयभाट्टे,
अप्पाणे चरिम चत्तारि ॥ २ ॥ पंच चउरो अभिमहे,
निवीए अट्टनवय आगारा ॥ अप्पावरणे पंचउ, हवति
सेसेसु चत्तारि ॥ ३ ॥ इति आगार संख्या ॥

॥ अथ सप्त स्मरणानि प्रारभ्यते ॥

, ॥ तत्र प्रथम ॥

॥ श्री बृहदजितशांति स्मरणं लिख्यते ॥

॥ अजिअं जिअसन्वभयं, संतिं च पसतसन्वगय-
पाव ॥ जय गुरु संति गुणकरे, दोवि जिणवरे पाणिव-
यामि ॥ १ ॥ गाहा ॥ ववगय मंगुलभावे, तेहं विजल तव-
निम्मल सहावे ॥ निरुवम महप्पभावे, थोसामि सुदिट्ठ
सप्भावे ॥ २ ॥ गाहा ॥ सन्व दुक्ख प्पसंतीणं, सन्व
पावप्पसातिणं ॥ सया अजिय संतीण, नमो अजिअ
संतिणं ॥ ३ ॥ सिलोगो ॥ अजिय जिण सुहप्पवत्तण, तव

पुरिसुत्तमं नामाकित्तणं ॥ तह य धिइ मेइ प्पवत्तणं, तवय
 जिणुत्तमं संतिकित्तणं ॥ ४ ॥ मागाहिआ ॥ किरिआविहि
 संचिअ कम्म किले सविमुक्खियरं, आजिअं निचित्रं च
 गुणेहिं महामुणि सिद्धिगयं ॥ अजिअस्स य संति महा
 मुणिणोवि अ संतिकरं, सययं मम निब्बुइ कारणयं च
 नमंसणयं ॥ ५ ॥ अलिंगणयं ॥ पुरिसा जइ दुक्खवारणं,
 जइअ विमग्गह सुक्खाकारणं ॥ अजिअं संति च भा-
 वओ, अभयकरे सरणं पवज्झहा ॥ ६ ॥ मामाहिआ ॥
 अरइ रइ तिमिर विरहिअ मुवरय जरमरणं, सुर असुर
 गरुल भुयगवई पयय पणिवइअं ॥ अजिअ महम-
 विअ सुनय नय निउणमभयकरं, सरणमुवसरिअ भुवि
 दिविजमाहिअं सयय मुवणमे ॥ ७ ॥ संगययं ॥ तं च
 जिणुत्तमं मुत्तमं नित्तमं सत्तंधरं, अज्झव मत्तव खंतिविमु-
 त्तिं समाहि निहिं ॥ संतिअरं पणमामि दमुत्तमं तित्थियरं,
 संति मुणी मम संति समाहिवरे दिसउ ॥ ८ ॥ सोवाणयं ॥
 सोवत्थिपुण्वपत्थिवं च वरहत्थि मत्थय पसत्तं वित्थिन्नं
 संधिअं धिरं संरित्थं वत्थं मयगल लीलायमाणं वरं गंधं
 हत्थि पत्थाणं पत्थियं संथवारिहं हत्थिहत्थं बाहुं धंतक-

णग रुअग्गे निरुवहय पिंजरं पवर लक्खणो वचिअ सोम्म
 चार रूप सुइ सुहमणाभिराम परम रमणिञ्च वरदेव दुंदु
 हि निनाय महुरयर सुहगिरं ॥ ९ ॥ वेढुओ ॥ अजिअ
 जिअरारिगणं, जिअ सन्वभय भवो हरिउ ॥ पणमामि
 अहं पयओ, पावं पसमेउ मे भयवं ॥ १० ॥ रासात्तुद्ध-
 ओ ॥ कुरु जणवय हत्थिणाउर नरीसरो पढम तओ
 महाचक्काट्टिभोए महण्णभावो जो बाहत्तरि पुरवर सहस्स
 वर नगर शिगम जणवयवई वत्तीसारायवर सहस्साणु-
 जाय मग्गो चउदस वर रयण नव महानिहि चउसट्ठि
 सहस्स पवर ज्झुवईण सुंदर वइ चुलसी हय गय रह सय
 सहस्स सामी छणवइ गाम कोढि सामी आसिज्झो भार
 हंमि भयवं ॥ ११ ॥ वेढुओ ॥ तं सतिं संतियर, संतिन्नं
 सन्व भया ॥ संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे ॥ १२ ॥
 रासाणदिअय ॥ इक्खाणु विदेह नरीसर, नरवसहा शुण
 वसहा ॥ नव सारयससि सऊलाणण, विगय तंमा बिडु-
 अरया ॥ अजिउत्तम तेअ गुणेहिं महामुणि, अमिय वला
 विऊल कुला ॥ पणमामि ते भवभय मूरण, जग सरणा
 मम सरण ॥ १३ ॥ चित्तेहा ॥ देव दाणविंद चंद मूर

बंद हृद तुद जिद परम, लद रुव धंत रूप पद सेअ सुद
 निद धवल ॥ दंतपंति संति सत्ति कित्ति मुत्ति जुत्ति
 शुत्ति पवर, दित्ति तेअवंदधेअ सब्वलाअ भाविअ प्पभावसे
 अ पइसमे समाहिं ॥ १४ ॥ नारायओ ॥ विमल सत्ति-
 कलाइरेअसोम्मं, वित्ति मिरसूर कलाइरेअ तेअं ॥ तिय
 सवइगणाइरे अं रुवं, धरणिधर प्पवराइरेअ सारं ॥ १५ ॥
 कुसुमलया ॥ सत्ते अ सया अजिअं, सारीरे अवले अ-
 जिअं ॥ तव संजमेअ अजिअं, एस अहं थुणामि जिणं
 अजिअं ॥ १६ ॥ भुअगप रिरिंणिअं ॥ सोम्मगुणेहिं
 पावइ न तं नवसरय ससी, तेअ गुणेहिं पावइ न तं नव-
 सरय रवी ॥ रुवगुणेहिं पावइ न तं तिअस गणवइ, सार
 गुणेहिं पावइ न तं धरणिधरवइ ॥ १७ ॥ खिज्झिअयं ॥
 तित्थवर पवत्तयं तमरयरहिअं, धीरजण थुअच्चिअं चुअ
 कलिकलुसं ॥ संतिसुहप्पवत्तयं तिगरण पयओ, संतिमहं
 महा मुत्तिं सरण सुवणमे ॥ १८ ॥ लालिअयं ॥ विणओ
 णय सिरिरइ अंजलि, रिसिगण संथुअं थिमिअं ॥ विबु
 हाहिं धणवइ नरवइ, थुअ महिअच्चिअं बंहुसो ॥ अइ
 रुग्गय सरय दिवायर, समहिअ सप्पभं तवसा ॥ गयंणं

गण वियरण समु'अ, चारण वंदिअं भिरसा ॥ १६ ॥
 किसलयमाला ॥ असुर गरुल' परिवंदिअं, किन्नरोरग
 णमंसिअ ॥ देव कोढिसयसथुयं, समणसंघ परिवंदिअ
 ॥ २० ॥ सुमुहं ॥ अभयं अणहं अरयं अरुयं ॥ अजिअं
 अजिअं पयओ पणमे ॥ २१ ॥ विज्झुविलसिअं ॥ आग
 यावर विमाण, दिव्व कणग रढ तुरय पढकर सप्पाहं
 हुलिअं ॥ ससंभमो अरण वरुभिअ लुलिअ चल कुंडल
 गय तिरीढ सोढत मऊलिमाला ॥ २२ ॥ वेदढओ ॥ ज
 मुरसंघा सासुर संघा वेर विउत्ता भत्ति सुजुत्ता, आयर
 भूसिअ संभमपिंडिअ सुद्धु सुगिहिअ सव्वपलोघा ॥
 उत्तम कंचण रयण परुविअ भासुर भूतण भासुरिअगा,
 गाय समोणय भत्तिवसागय पंजलिपेसियसीस पणामा
 ॥ २३ ॥ रयणमाला ॥ वंदिऊण थोऊणतोर्णिणं, तिगुण
 मेवय पुणोपयाहिण ॥ पणमिऊणय जिणं सुरासुरा,
 पमुइआ सभवणाइतो गया ॥ २४ ॥ खित्तयं ॥ तं महा-
 मुणिमहापि पंजलि, राग ढोस भय मोह वज्झिअं ॥ देव
 दाणव नरिंद वदिअं, सति मुत्तम महातवं नमे ॥ २५ ॥
 खित्तयं ॥ अवरंतरविअरारणिआहिं, ललिअ हंस बहुगा-

मिणिआहिं ॥ पणि सोणिथण सालणिआहिं, सकल
 कमल दललोआणिआहिं ॥ २६ ॥ दीवयं ॥ पीण निरं-
 तर थणभरविणमिय गायलयाहिं, मणिकंचण पसिडिल
 मेहल सोहिअ सोणितडाहिं ॥ वराखिंखिणि नेउर सति-
 लय वलय विभूसणियाहिं, रइकर चउर मणोहर सुंदर
 दंसणियाहिं ॥ २७ ॥ चित्तक्खरा ॥ देवसुंदरीहिं पाय वंदिआ
 हिं वंदिआय जस्स ते सुविक्कमाकमा अप्पणो निडाल
 एहिं मंडणोड्डुणप्पगारएहिं केहिं केहिं वीअवंग तिलय
 पत्तलेह नामएहिं चिल्लएहिं संगयं गयाहिं भत्ति सन्निविट्ठ
 वंदणागयाहिं हुंति ते वंदिआ पुणो पुणो ॥ २८ ॥ नारा
 यओ ॥ तमहं जिणचंद, अजिअं जिअमोहं ॥ धुअस-
 व्व किलेसं पयओ पणमामि ॥ २९ ॥ नंदिअयं ॥ थुअवं
 दिअस्सारिसिगण देवगणेहिं, तो देव वहुहिं पयओ पण
 मिअस्सा जस्स ॥ जगुत्तमसासणयस्सा, भत्तिवसागयपिंडि
 अआहिं ॥ देव वरत्थरसा वहुआहिं, सुरवर रइगुण
 पंडिअआहिं ॥ ३० ॥ भासुरयं ॥ वंस सह तंति ताल
 मे लिए तिउक्खराभिराम सह मीसएकए अ, सुइसमाण-
 णेअ सुद्ध सज्झ गीअ प्राय जालघंदिअहिं ॥ वलय

मेहला कलावनेउराभिराम सह ममिण कण अ ठेव
 नट्टिआहिं ॥ हावभाव विष्णमप्पगारणहिं नच्चिऊण अंग
 हारणहिं वंदिआय जस्स ते सुविक्कमाकमा ॥ तयं तिलो
 अ सव्व सत्त संतिकारयं पसंत सव्व पाव दोस मेसह
 नमामि संतमुत्तमं जिणं ॥ ३१ ॥ नागयओ ॥ उत्त चामर
 पढागंजूअ जव मंडिआ, ऋयवर मगर तुरय सिरिवत्थ
 सुलळणा दीव सथुह मंदरटिसागयसोहिआ, सत्थिअ
 वसह सीहासिरिवत्थसुलंछणा ॥ ३२ ॥ ललिजयं ॥ सहा
 वलट्टासमप्पइट्टा अदोस दुट्टागुणेहिं जिट्टा ॥ पसायसिट्टा
 तरेण पुट्टा, सिरीहिंइट्टा रिसीहिं जुट्टा ॥ ३३ ॥ वाणवाभिआ ॥
 ते तवेण धुअसव्वपावया, सव्वलोअहिअ मूल पावया स-
 थुआ अजिअ संति पायया, हुंतु मे भिव सुहाणढायया
 ॥ ३४ ॥ अपरातिया ॥ एव तव वल विडल, थुअ मए
 अजिअ संति जिणजुयलं ॥ ववगय कम्म रयमल, गइ
 गयं सासया विमला ॥ ३५ ॥ गाहा ॥ तं बहुगुणप्पसाय,
 मुख सुहेण परमेण अविसायं ॥ नासेउ मे विसायं,
 कुणउअ परिसाविअ पसायं ॥ ३६ ॥ गाहा ॥ तं मोएउ
 अनंदिं, पावेउअ नट्टिसेणमभिनंदिं ॥ परिसाइवि सुहनदि-

मम य दिसउ संजमेनंदि ॥३७॥ गाहा ॥ पक्खिअ चाउ-
म्मासिय, संवच्छरिए अवस्म भणिअव्वो ॥ सोअव्वो
सव्वेहिं, उवसग्ग निवारणो एसो ॥ ३८ ॥ जो पढइ
जोअ निसुणइ, उभउ कालंपि अजिअ संतिथयं ॥ न हु
हुंति तस्स रोगा, पुवुप्पन्ना विनामंति ॥ ३९ ॥ जइ
इच्छइ परम पयं, अहवा किंत्ति सुवित्थंढा भुवणे ॥ ता
तेलुक्कुद्धरणे, जिणवयणे आयरं कुणह ॥ ४० ॥ गाहा ॥
इति श्री बृहद् जितशांतिस्तवनं प्रथमस्मरणम् ॥ १ ॥

॥ अथ बृद्धशांतिलिख्यते ॥

॥ भो भो भव्याः शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्व मेतत्,
ये यात्रायां त्रिभुवनगुरोरार्हतां भक्तिभाजः ॥ तेषां
शांतिर्भवतु भवतामर्हदादिप्रभावा, दारोग्यश्रद्धितिमतिक-
री क्लेशविध्वंसहेतुः ॥ १ ॥ भो भो भव्यलोका इह हि
भरतैरावत विदेहसंभवानां, समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासन
प्रकंपानन्तरं अवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः सुवोर्षोधि-
टाचालनानन्तरं सकलसुरा सुरैर्द्रैः सह समागत्य सवि-
नयमर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा, गत्वा कनकाद्रिशृंगे, विहितज-
न्माभिषेकः, शान्तिमुदघोषयति, ततोऽहंकृतानुकारमिति

कृत्वा, महाजनो येन गतस्स पन्थाः ॥ इति भव्यजनैः सह समागत्य, स्नात्रपीठे स्नात्रं विधाय, शान्तिमुद्घोषयामि ॥ तत्पूजायात्रास्नात्रादि महोत्सनानन्तरं ॥ इति कृत्वा कर्णं दत्वा निशम्यतां स्वाहा ॥ ॐ पुण्याहं २, प्रीयंतां २, भगवन्तोऽर्हन्तः, सर्वज्ञा सर्वदर्शिन ॥ त्रैलोक्यनाथाः, त्रैलोक्यमहिताः त्रैलोक्यपूज्याः त्रैलोक्येश्वराः त्रैलोक्योद्योतकरा ॥ ॐ श्रीकेवलज्ञानी १, निर्वाणी २, सागर ३, महायश ४, विमल ५, रार्नानुभूति ६, श्रीधर ७, दत्त ८, दामोदर ९, सुतेज १०, स्वामी ११, सुनिसु त्त १२, सुमति १३, शिवगवि १४, अस्ताग १५, नमीश्वर १६, अनिल १७, यशोरा १८, कृतार्थ १९, जिनेश्वर २०, शुद्धमति २१, शिवकर २२, स्पन्दन २३, संप्रति २४, एते अतीतः ।

॥ चतुविंशतित्थिकराः ॥

॥ ॐ श्रीरूपभ १, अजित २, संभव ३, अभिनन्दन ४, सुमति ५, पद्मप्रभ ६, सुपार्थ ७, चंद्रप्रभ ८, सुविधि ९, शीतल १०, श्रेयास ११, वासुपूज्य १२, विमल १३, अनन्त १४, धर्म १५ शान्ति १६, कुंद १७,

अर १८, मातृ १९, मुनिसुव्रत २०, नमि २१, नेमि २२, पार्श्व २३, वर्द्धमान २४, एते वर्त्तमानजिनाः

॥ ॐ श्रीपद्मनाभ १, सुरदेव २, सुपार्श्व ३, स्वयंप्र-
भ ४, सर्वानुभूति ५, देवश्रुत ६, उदय ७, पेढाल ८,
पोट्टिल ९, शतकीर्त्ति १०, सुव्रत ११, अमम १२, नि-
ष्कपाय १३, निष्पुलाक १४, निर्मम १५, चित्रगुप्ति १६,
समाधि १७, संवर १८, यशोधर १९, विजय २०, म-
ल्लि २१, देव २२, अनन्तवीर्य २३, भद्रंकर २४.

॥ एते भावितीर्थकराः जिनाः ॥ शान्ताः शान्तिक-
रा भवंतु मुनयो मुनिप्रवरा, रिपुविजयदुर्भिक्षकान्तारेषु
दुर्गमार्गेषु रक्षंतुषो नित्यं ॥ ॐ श्रीनाभि १, जितशत्रु २,
जितारि ३, संवर ४, मेघ ५, धर ६, प्रतिष्ठ ७, महसेन
नरेश्वर ८, सुग्रीव ९, दृढरथ १०, विष्णु ११, वासुपू-
ज्य १२, कृतवर्म १३, सिंहसेन १४, भानु १५, विश्व-
सेन १६, सूर १७, सुदर्शन १८, कुंभ १९, सुमित्र २०,
विजय २१, समुद्रविजय २२, अश्वसेन २३, सिद्धार्थ
२४ ॥ इति वर्त्तमान चतुर्विंशतिजिनजनकाः ॥

॥ ॐ श्रीमरुदेवा १, विजया २, सेना ३, सिद्धार्था
४, सुमंगला ५, सुसीमा ६, पृथिवीमाता ७, लक्ष्मणा ८,

रामा ६, तदा १०, विष्णु ११, जया १२, श्यामा १३,
 सुयशा १४, सुवर्ता १५, अचिरा १६, श्री १७, देवी
 १८, प्रभावती १९, पद्मा २०, वप्रा २१, शिवा २२,
 वामा २३, त्रिशला २४ ॥ इति वर्तमान जिनजनन्य ॥

॥ ॐ गोमुख १, महायज्ञ २, त्रिमुख ३, यक्षना-
 यक ४, तुषुरु ५, कुसुम ६, मातंग ७, विजय ८, अजित
 ९, ब्रह्मा १०, यक्षराज ११, कुमार १२, पणमुख १३,
 पाताल १४, किन्नर १५, गरुड १६, गंधर्व १७, यक्षरा
 ज १८, दुर्गे १९, वरुण २०, भृकुटि २१, गोमेय २२,
 पार्श्व २३, ब्रह्मशांति २४ ॥ इति वर्तमानजिनयक्षाः ॥

॥ ॐ चक्रेश्वरी १, अजितवला २, दुरितारि ३,
 काली ४, महाकाली ५, श्यामा ६, शांती ७, भृकुटि ८,
 सुतारका ९, अशोका १०, मानवी ११, चंडा १२, वि-
 दित्ता १३, अरुणा १४, कटर्षा १५, निर्वाणी १६,
 मला १७, धारिणी १८, धरणप्रिया १९, नरदत्ता २०,
 दासारी २१, अधिका २२, पद्मावती २३, सिद्धायिका
 २४ एते वर्तमानचतुर्विंशति तीर्थकरशासनदेव्यः ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं धृति, कीर्ति, कांति, बुद्धि, लक्ष्मी,
मेधा, विद्या, साधन, प्रवेशनिवेशनेषु, सुगृहीतनामानो
जयन्ति ते जिनेन्द्राः ॥ ॐ रोहिणी १, प्रज्ञप्ति २, वज्रशृङ्ख
ला ३, वज्राङ्कुशा ४, चक्रेश्वरी ५, पुरुषदत्ता ६, काली ७,
महाकाली ८, गौरी ९, गांधारी १०, सर्वास्त्रमहाज्वाला ११,
मानवी १२, वैरोध्या १३, अच्छुप्ता १४, मानसी १५,
महामानसी १६, एताः षोडश विद्यादेव्यो रक्षन्तु मे स्वाहा
ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्ण्यस्य श्री श्रमणसंघस्य
शांतिर्भवतु, ॐ तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ॐ ग्रहाश्चंद्रसूर्यागारक
बुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्चरराहुकेतुसहिताः सलोकपालाः सो
मयमवरुणकुबेरवासवादित्यस्कन्दाविनायक ये चान्येऽपि
ग्रामनगरक्षेत्रदेवतादयस्ते सर्वे प्रीयन्तां ॥ २ ॥ अक्षीणको
शकोष्ठागारा नरपतयश्च भवन्तु स्वाहा ॥ ॐ पुत्रमित्रभ्रातृ
कलत्रसुहृत्स्वजनसंबन्धिवंधुवर्गसहिताः नित्यं चामोदप्रमोद
कारिणो भवन्तु ॥ अस्मिंश्च भूमंडले आयतननिवासिनां
साधुसाध्वीश्रावकश्राविकाणां रोगोपसर्गव्याधिदुःखदौर्मन
स्योपशमनाय शान्तिर्भवतु ॥ सदाप्रादुर्भूतानि दुरितानि पापा
नि शाम्यन्तु शत्रवः पाराङ्मुखा भवन्तु स्वाहा ॥ श्रीमते

शान्तिनाथाय, नमः शान्तिविनायिने ॥ त्रैलोक्यस्यामरा
 धीश, मुकुटाभ्यर्चिताद्वये ॥ १ ॥ शान्ति शान्तिकरः
 श्रीमान्, शान्तिं दिशतु मे गुरु ॥ शान्तिमेव सदा तेषां,
 येषां शांतिर्गृहेगृहे ॥ २ ॥ ॐ उन्मृष्टरिष्टदुष्ट ग्रहग-
 तिदुःस्वप्नदुर्निमित्तादि ॥ संपादिताहितसंपत्, नामग्र-
 हण जयति शांते ॥ ३ ॥ श्रीसगपौरजनपद, राजाधिप-
 राजसन्निवेशानाम् ॥ गोष्ठीपुरमुख्याना व्याहरणैर्वर्गाहरे-
 च्छातिम् ॥ ४ ॥ श्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु, श्रीपारलोक-
 स्य शांतिर्भवतु ॥ श्रीजनपदानां शांतिर्भवतु, श्री राजाधि-
 पानां शांतिर्भवतु श्रीराजसंनिवेशानां शांतिर्भवतु, श्रीगो-
 ष्ठीकानां शांतिर्भवतु, ॐ स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्व-
 नाथाय स्वाहा ॥ एषा शांतिः प्रतिष्ठायात्रास्नात्रावसानेषु
 शांतिकलशं गृहीत्वा कुंकुमचंदनकर्पूरागरुधूपवासकुसुमाज-
 लिसमेत, स्नात्रपीठे श्रीसंघसमेतः, शुचि शुचिवपु-
 पुष्पवस्त्रश्चटनाभरणालंकृत, चन्दन तिलक विधाय पुष्प-
 माला कटे कृत्वा, शांतिगुदघोषयित्वा शांतपानीयं मस्त-
 के दातव्यमिति ॥ नृत्यंति नृत्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजति गा-
 यंति च मंगलानि ॥ स्तोत्राणि गोत्राणि पठंति मंत्रान्,

कल्याणभाजोहि जिनाभिपेके ॥ १ ॥ अहं तिथ्यरमाया
 शिवा देवी, तुम्हनयरनिवासिनी ॥ अम्ह शिवं तुम्ह शिवं
 असुहोवसमं शिवं भवतु स्वाहा ॥ शिवमस्तु सर्वजगतः
 परहितनिरता भवतु भूतगणाः ॥ दोषाः प्रयांतु नाशं सर्वं
 त्र सुखी भवतु लोकः ॥ २ ॥ उपसर्गाः क्षयं यांति, छि-
 द्यन्ते विघ्नवल्लयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वर
 ॥ ३ ॥ इति श्रीष्टद्धशांति समाप्ता ॥

॥ अथ जिन पंजरस्तोत्रं लिख्यते ॥

ॐ ह्रीं श्रीं अर्ह अर्हद्भ्यो नमोनमः, ॐ ह्रीं श्रीं
 अर्ह सिद्धेभ्यो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्ह आचार्येभ्यो
 नमोनमः ॐ ह्रीं श्रीं अर्ह उपाध्यायेभ्यो नमोनमः ॥
 ॐ ह्रीं श्रीं अर्ह श्री गौ तमस्वामिप्रमुखतर्वसाधुभ्यो
 नमोनमः ॥ १ ॥ एष पंच नमस्कारः, सर्व पापक्षयकरः
 ॥ मंगलानां च सर्वेषां, प्रथमं भवति मंगलं ॥ २ ॥ ॐ
 ह्रीं श्रीं जयविजये, अर्ह परमात्माने नमः ॥ कमल प्रभसूरीं
 ज्ञो, मापते जिनपंजरम् ॥ ३ ॥ एकभक्तोपवासेन, त्रि-
 कालं यः पठेदिदं ॥ मनोभिलषितं सर्वं, फलं स लभते
 ध्रुवं ॥ ४ ॥ भूशय्या ब्रह्मचर्येण, क्रोधलोभाविवर्जिभूतः

॥ देयता ग्रे पवित्रात्मा, पण्णसैलभते फलं ॥ ५ ॥ अहं
 म्धापयेन्मूर्ध्नि, सिद्धं चक्षुर्ललाटके आचार्य श्रोत्रयोर्मध्ये,
 उपाध्याय तु घ्राणके ॥ ६ ॥ साधुवृन्दं मुखस्याग्रे, मनः
 शुद्धं विषय च ॥ सूर्यचंद्रनिरोधेन, सुधीः सर्वार्थसिद्धये
 ॥ ७ ॥ दक्षिणे मदनद्वेपी, रामपार्श्वे स्थितोजिनः ॥ अंग-
 मधिपु सर्वज्ञ, परमेष्ठी शिवकर ॥ ८ ॥ पूर्वांशं श्री-
 जिनो रक्षे, दक्षिणां विजितेन्द्रियः ॥ दक्षिणां परं ब्रह्म
 नेहति च त्रिकालं पितृ ॥ ९ ॥ पश्चिमांशं जमनाथो,
 गायत्रीं परमेश्वर ॥ उत्तरां तीर्थकृत् सर्वा, मीशानीं च
 निरंजन ॥ १० ॥ पानालं भगवानहं, आकाशं पुरुषो-
 त्तमं राक्षसीप्रमुखा देव्यो रक्षतु सकलं कुलं ॥ ११ ॥
 ऋषभो मस्तकं रक्षे, दक्षिणोऽपि त्रिलोचने ॥ संभव 'वर्ण-
 युगलं, नासिकां चाभिनदनः ॥ १२ ॥ श्रोणीं श्रीं सुमतीं
 रक्षेत्, दंतान्पद्मप्रभो विभुः जिह्वां सुपार्श्वदेवोऽयं, तालुं चन्द्र-
 प्रभो विभु ॥ १३ ॥ कंठं श्रीं सुविधीरक्षेत्, हृदयं श्रीं सु-
 शीतलः श्रेयसां सो वाहु युगलं, बाहुं पूज्यं करद्वयं ॥ १४ ॥
 अंगुलीर्विमलो रक्षे, दन्ततोऽर्धं स्तनपि ॥ सुगर्भोऽप्यु-
 दरास्थीनि, श्रीशक्तिर्नाभिमहल ॥ १५ ॥ श्रीरुधुर्गुणकं

रक्षे, दरो रोमकटी तटं ॥ मल्लिरूरु पृष्ठिवंशं, जंघे च मुनि
 सुव्रतः ॥ १६ ॥ पादांगुलीर्नमी रक्षेत्, श्रीनेमिश्चरणद्वयं
 ॥ श्री पार्श्वनाथः सर्वांगं, वर्द्धमानश्चिदात्मकं ॥ १७ ॥
 पृथिवी जलतेजस्क, वाय्वाकाशमयं जगत् रक्षेदशेषपा-
 पेभ्यो, वीतरागो निरंजनः ॥ १८ ॥ राजद्वारे श्मशाने
 वा, संग्रामे शत्रुसंकटे ॥ व्याघ्रचौराग्निसर्पादि, भूतप्रेत
 भयाश्रिते ॥ १९ ॥ अकालमरणे प्राप्ते, दारिद्र्यापत्स-
 माश्रिते ॥ अपुत्रत्वे महादोषे, मूर्खत्वे रोगपीडिते ॥ २० ॥
 डाकिनी शाकिनीग्रस्ते, महाग्रहगणार्दिते ॥ नद्युत्तारेऽध्व-
 वैषम्ये, व्यसने चापदि स्मरेत् ॥ २१ ॥ प्रातरेव समु-
 च्छाय, यः स्मरेज्जिनपंजरं ॥ तस्य किञ्चिद्भयं नास्ति,
 लभते सुखसंपदं ॥ २२ ॥ जिनपंजरनामेदं, यः स्मरंत्य-
 नुवासरं ॥ कमलप्रभराजेंद्र, श्रियं स लभते नरः ॥ २३ ॥
 प्रातः समुच्छाय पठेत् कृतज्ञो, यः स्तोत्रमेतज्जिनपंजरा-
 ख्यं ॥ आसादयेत्सः कमलप्रभाख्यां लक्ष्मीं मनोवाञ्छित-
 पूरणाय ॥ २४ ॥ श्रीरुद्रपल्लीयवरेण्यगच्छे, देव प्रभा-
 चार्य्यपदाब्जहंसः ॥ वार्दीन्द्रचूडामणिरपजैनो, जीयाद्-
 गुरुः श्रीकमलप्रभाख्यः ॥ २५ ॥ इति श्रीजिनपंजरस्तोत्रं
 संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्री श्रावक करणीनौ सज्भाय ॥

॥ चौपाई ॥ श्रावक तुं ऊठे परभात, चार घडी ले पाछ-
ली रात ॥ मनमां समरे श्री नवकार, जेम पामे भव सायर पार
॥ १ ॥ कवण देव कवण गुरुर्म, कवण अपारुं छे कुल कर्म
कवण अपारो छै व्यवसाय, एवुं चितवजे मनमाय ॥ २ ॥
सामायिक लेजे मन शुद्ध, धर्मनी हेठे वरजे बुद्ध ॥ पेढि-
कमणुं करे रयणी तणु, पातक आलोई आपणु ॥ ३ ॥
कायाशक्तं करे पच्चक्खाण, सूधि पाले जिननी आण ॥
भणजे गणजे स्तवन सज्भाय, जिणहूँती निस्तारो थाय
॥ ४ ॥ चितारे नित्य चउदे नेम, पाले दया जीवतां
मीम ॥ देहरे जाई जुहारे देव, द्रव्यभावथी करजे सेव
॥ ५ ॥ पोषालं गुरु वदन जाय, सुणो वखाण सदा चित
लाय ॥ निर्दूषण सृजंतो आहार, साधुने देजे सुविचार
॥ ६ ॥ साहम्मिवत्सल रुग्जे घणां, सगण महोटा साह
म्पीतणा ॥ दुःखीया हीणा दीना देवि, करजे तास दया
मु विशेष ॥ ७ ॥ घर अनुसार देजे दान, महोटाशुमत
करे अभिमान ॥ गुरुने सुखे लेजे आखदी, धर्म न मूकीण
पक घडी ॥ ८ ॥ वारु शुद्ध करे व्यापार, ओछ अधि-

कानो परिहार ॥ मत भरिशकेनी कूडी साख, कूडा जनशुं
 कथन म भाख ॥ ६ ॥ अनंतकाय कहीजे वचीश, अभ-
 द्य बाविशे विश्वावीश ॥ ते भक्षण नवि कीजे किमे.
 काचा कवला फल मत जिमे ॥ १० ॥ रात्रिभोजनना
 बहु दोष जाणीने करजे संतोष ॥ साजो सावू लोह ने
 गुली, मधु धावडी मत वेचो वली ॥ ११ ॥ वली मत
 करावे रंगण पास, दूपण वणां कक्षां छे तास ॥ पाणी
 गलजे वे वे वार, अणगल पीतां दोष अवार ॥ ११ ॥
 जीवाणीनां करजे यत्न, पातक छंडी करजे पुण्य ॥ छाया
 इंधण चुले जोय, वावरजे जिम पापन होय ॥ १३ ॥
 घृतनी परें वावरजे नीर, अणगल नीर मत धोइश चीर ॥
 ब्रह्मव्रत सूधुं पालजे, अतिचार सघला टालजे ॥ १४ ॥
 कक्षां पन्नरे कर्मादान, पापतणी परहरजे खाण ॥ किशुं
 म लेजे अनरथ दंड मिथ्या मेल मत भरजे पिंड ॥ १५ ॥
 समकित शुद्ध हैडे राखजे, बोल विचारी ने भाखजे ॥
 पांच तिथि मत करो आरंभ, पालो शीयल तजो मन दंभ
 ॥ १६ ॥ तेल तक्र घृत दूध ने दहि, ऊंघाडा मत मेलो
 सही ॥ उत्तम ठामे खरचो वित्त, पर उपगार करो शुभ

चित्त ॥ १७ ॥ दिवस चरिम करजे चौविहोर, चारे
 आहार तणा परिहार ॥ दिवस तणा आलोए पाप, जिम
 भाजे सघला संताप ॥ १८ ॥ संध्यायें आवश्यक साचवे
 जिनवर चरण शरण भव भवे ॥ चारे शरण करी दृढ
 होय, सागरी अणसण छे सोय ॥ १९ ॥ करे मनोरथ
 मन एहवा, तीरथ शत्रुजे जायवा ॥ समेत शिखर आय
 गिरनार, भेटीश हुं यन यन अवतार ॥ २० ॥ आवरुनी
 करणी छे एह, एहथी थाये भवनो छेह ॥ आउं कर्म पडे
 पातला, पाप तणा छूटे आमला ॥ २१ ॥ चारु लाहियें
 अमर विमान, अनुक्रमे पाये शिवपुर धाम ॥ कहे जिन
 हर्ष घणे ससनेह, करणी दु खहरणी छे एह ॥ २२ ॥
 इति श्री आवरुनी करणी स० ॥

॥ अथ अट्टपुहरी पोसह विधि लिख्यते ॥

रात्रिनी पाछली घडीयें निद्रा दूर करीने, पंच पर-
 मेष्टि स्मरण करी, गृहचिंता परिहरी, पर्व दिवसथकी
 प्रथम दिवस पडिलेही राख्या, जे पोसहना उपकरण, ते
 लेई पोमहगालामें थापनाचार्य समीपें, अथवा गुरुनो स-
 योग हुवे तो गुरुनी पासे आवी, भूमि प्रमार्जी एरु खमास-

मण देई, इरियावहि पडिकमि पीछें खमासमण देई ॥ इच्छा-
 का० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पोसह मुंहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे
 पडिलेहेह- इच्छां कही खमासमण देई, मुंहपत्ति पडिलेहे.
 पीछें उभो थई खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥
 पोसह संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह, पीछें इच्छां
 कही खमासमण देई. इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पोसह
 ठाउं ? गुरु कहे ठाएह; पीछे इच्छां कही खमासमण देई
 उभो थई, आधो शरीर नवावी मुखें मुंहपत्ति देई, मधुर-
 स्वरें तीन नवकार गुणी कहे इच्छाकार भगवन् पसाय
 करी पोसह दंडक उच्चरावो ? गुरु कहे उच्चरावेमो ॥
 पीछें करेमि भंते पोसहं ॥ इहांसैं ले के अप्पाणं वोसिरा-
 मि ॥ तक कहे. अब पोसह का पच्चक्खाण लेये, सो
 लिखते हैं.

॥ अथ पोसहका पच्चक्खाण प्रारंभः ॥

करेमि भं ते पोसहं, आहार पोसहं देसओ सव्वओ
 वा, सगीरसक्कार पोमहं, मव्वओ बंभचेर पोसहं, सव्व-
 ओ अन्वावार पोसहं सव्वओ चउविहे पोसहं, सावज्झं

जोग पच्चकखामि, जावदिवसं अहोरत्ति वा पज्जुवासामि
 दुविह तिबिहेणं मणेणं वायाए काएण, न करेमि न-
 कारवेमि, तस्स भते पडिक्कमामि निंदामि, गेरिहामि अप्पा
 ण बोसिरामि

॥ ए पाठ तीन बार गुरुवचन अनुभाषण करता
 उच्चरे ॥ पीछें एक खमासमण ॥ इच्छाका० स० ॥ भ०
 सामायिक मुहपत्ती पाडिलेहुं ? गुरु वहे पाडिलेंदह. बीजी
 खमासमण देई मुहपत्ति पाडिलेहे. पीछें दोय खमासमण
 सामायिक संदिस्साउ ? सामायिक ठाउं कही,
 खमासमण देई. अर्धावनतगात्र ऊभो थको तीन नवका
 गुनी तीन करेमि भंते उच्चरी दोय खमासमणे वेसणो
 संदिस्साउं, वेसणो ठाउं, कही, पीछें दोय खमासमणें
 सिज्झाय संदिस्साउं, सिज्झाय करु, वही खमासमण
 देई उभो थको, आठ नत्रकारनो सिज्झाय करे. शांतादि
 परिसहें दोय खमासमण पांगरुणु संदिस्साउ, पांगरुणु
 पडिग्घाउ ? कहे ए सर्व सामायिकविधि पूर्वें कह्यो छेतिभर्ज
 कररो, पण इतनो विशेष छे. पहिलां डरियावही पडिक्कमी
 छे तेमाटें इहां सामायिक दहक उच्चया पीछें इरिया

वही नहीं पडिक्कमीजें ॥ पीछें चैत्यवंदन, जयवीरराय
सूची करो कुमुमिण दुस्सामिण काउरसग्ग करे. पीछें
पडिक्कमणवेलासीम सिक्काय ध्यान करे. पीछें पूर्वोक्त
रीते पडिक्कमण करे. पण इतरो विशेष के चारे थुईयें
देव वांछा पीछें खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥
भ० ॥ बहुवेला संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सा वेद.
पीछें इच्छं कहीं, खमासमण देई कहे, इच्छाका० ॥ सं० ॥
॥ भ० ॥ बहुवेला करुं ? गुरु कहे, करेह पीछें इच्छं कहीं
तीन खमाममणें श्री आचार्यजी मिश्र १, श्री उपाध्याय
जी मिश्र २, त्रीजे सर्व्वनाथु वांदी, कम्मभूमिहिं कम्म-
भूमिहिं इत्यादि नमस्कार भणे, जो पडिलेहणवेला नहिं
हुवे तो सीमंधरस्वापीनुं चैत्यवंदनादि करी सिज्जाय
करे. हवे पडिलेहण वेला पडिलेहण करे, ते विधि पूर्व्व
आग्रंथमां लिख्या छे तो पण संक्षेपे फेर लखी ये
छेयें. दोय खमासमणे, इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥
पडिलेहण करुं ? कहीं मुहपत्ती पडिलेह. पीछें दोय खमा-
समणें अंग पडिलेहण संदिस्साउं अंग पाडलेहण करुं ?
कहे पीछें गुरुवचनें इच्छं कहीं, धोतियो कण दोरो पडि-

लीही वस्त्र पहिरी, स्वमासमण देई इच्छकार भगवन् !
 पसाउ करी, पडिलेढण करावोजी ॥ एम कहे, रथापना
 चार्य पहिले शी स्थापे, अने जो गुर्वादिकु स्थापनाचार्ये
 पडिलेहे, तो पण स्वमासमण देई उक्त गीते आग्या मागे
 पीछे स्वमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ म० ॥ भ० ॥ उप-
 धि मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेढेह. पीछे इच्छ
 कही, मुहपत्ती पडिलेही दोस्वमासमणे ॥ इच्छाका० ॥
 म० ॥ भ० ॥ ओही पडिलेढण सदस्माउ ? गुरु कहे,
 सहिस्सावेढ ओही पडिलेढण करू ? गुरु कहे, करेढ
 ॥ अथ २४ थंडिलां पडिलेढण पाठ लिख्यते ॥

॥ आगाढे आसन्ने उच्चारें पासवणे अणहियासे ।
 ॥१॥ आगाढे मज्झे उच्चारें पासवणे अणहियासे ॥२॥
 आगाढे दूरे उच्चारें पासवणे अणहियासे ॥३॥ आगा
 आसन्ने पासवणे अणहियासे ॥४॥ आगाढे मज्झे पार
 वणे अणहियासे ॥५॥ आगाढे दूर पासवणे अणहिया
 ॥६॥ आगाढे आसन्ने उच्चारें पासवणे अणहियासे ॥ ७
 आगाढे मज्झे उच्चारें पासवणे अणहियासे ॥८॥ आग
 दूरे उच्चारें पासवणे अणहियासे ॥ ९ ॥ आगाढे आसन्ने

पासवणे अहियासे ॥ १० ॥ आगाढे मज्जे पासवणे अ-
 हियासे ॥ ११ ॥ आगाढे दूरे पासवणे अहियासे ॥ १२ ॥
 अणागाढे आसन्ने उच्चारं पासवणे अणहियामे ॥ १३ ॥
 अणागाढे मज्जे उच्चारं पासवणे अणहियासे ॥ १४ ॥ अ-
 णागाढे दूरे उच्चारं पासवणे अणहियामे ॥ १५ ॥ अ-
 णागाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे ॥ १६ ॥ अणा-
 गाढे मज्जे पासवणे अणहियासे ॥ १७ ॥ अणागाढे दूरे
 पासवणे अणहियासे ॥ १८ ॥ अणागाढे आमन्ने उच्चारं
 पासवणे अहियामे ॥ १९ ॥ अणागाढे मज्जे उच्चारं पा-
 सवणे अहियासे ॥ २० ॥ अणागाढे दूरे उच्चारं पासव-
 णे अहियासे ॥ २१ ॥ अणागाढे आसन्ने पासवणे अहि-
 यासे ॥ २२ ॥ अणागाढे मज्जे पासवणे अहियासे ॥ २३ ॥
 अणागाढे दूरे पासवणे अहियासे ॥ २४ ॥ ए थंडिल-
 पडिलेहण पाठ कहा ॥

॥ यह चौवीस थंडिलां कहां कहां करनां ?
 सो लिखते हैं.

॥ ६ थंडिला शय्याके दोनुं तरफ दहिणें पासे ३,
 वामपासे ३, पडिलेहे ॥ ६ थंडिलां दखज्जेके भीतर पा-

सैं ढहिणें ३, वामें ३ पडिलेहे ॥ ६ थंडिलां दरबज्जेके, बाहर दोनुं पासे पडिलेहे ॥ ६ थंडिलां जिहा उच्चार प्रसवणकी जगा होवे, ते दोनु तरफ पडिलेह ॥ इति २४ थंडिला पडिलहणविवि संपूर्ण ॥

पीछें इच्छं करी, कंबल वस्त्रादि पडिलेही पोसह शाला प्रमाजी काजो विधिशुं परठवी, एक खमासमण देई इरियावही पडिकमे. इहा आचार दिनकरमें नहो छे. दोय खमासमणें इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ वसती सदिससाउ ? वसती पडिलेहुं ? कही वसती मागो प्रमुख प्रमार्जे. इत्यादि पण विप्रिपपा प्रमुखमें न कह्यो ॥

॥ हवे एक खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० भ० ॥ सिज्झाय सदिससाउं ? गुरु कहे, सदिससावेह. वीजे खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सिभभाय करु ? गुरु कहे करेह पीछें इच्छं कही नवकार एक कथन पूर्वक उपदेशमाला प्रमुख सिभभाय करी, नवकार एक कही धर्मध्यान करे, भणे, गुणे, वखाण सुणे. इम करता पूर्ण पहुर दिन चढ्या. उग्याडा पोरिसी अथवा, बहुपडिपुन्ना पोरिसी कही, खमासमण देई इरियावही

पडिकमी दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥
 पडिलेदण करुं? गुरु वचनें इच्छं कही, मुदपत्ती पडिलेही
 पान भोजन पात्र पडिलेही राखे, पीछें सिज्झाय ध्यान
 करे ॥

॥ हवे कालवेलार्ये आवस्मही पूर्वक देठरे जई पांचे
 शक्रस्तवें देववांदण विधि दो प्रकारसं लिखते हैं ॥

॥ तीन प्रदक्षिणा देई. तीन वार नमस्कार करी,
 भूमि प्रमार्जी, पुरुष हुवे तो प्रभुजीके दक्षिण पासें वेसे,
 स्त्री हुवे तो वाम पासें वेसे. पीछें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥
 भ० ॥ चैत्यवंदन करुं? इच्छं कही, चैत्यवंदन कहे पीछें
 नमोत्थुगं कहे. खमासमण देई इरियावही पडिककमे. एक
 लोगस्सनो काउस्सग करे. मुखें लोगस्स कहे. संडासा
 प्रमार्जी वेसे. तीन तथा चार तथा पांच आदि देई
 नमस्कार कहे- “जं किंचि नाम तित्थं” इत्यादि कही पीछें
 नमोत्थुणं कहे. उभो थई अरिहंत चेइयाणं करेमि काउ-
 स्सगं वंदणवत्ती० अन्नत्थू० कही, एक नवकारलो का-
 उस्सग करे. पारी एक थुई की गाथा कहे ॥ पीछें लो-
 मस्स० सव्वलोए अरि० वंदणव० अन्नत्थू कही एक न

१० पारी दूसरी थुई की गाथा कहे पीछे पुनः खर वरदी०
 सुअस्त भग० वंदन० अन्नत्थु कही एक नवकार० पारी
 तीसरी थुईकी गा० पीछे मिद्धाणं बुद्धाणं वेयावच्च
 गगण० अन्नत्थु० इत्यादि कथन पूर्वक चौथी थुईकी
 गाथा कह कर बैठके नमोत्थूर्ण कहे. फेर अरिहतचेइ०
 कहे. इसी तरे चार थुईये देव वादी वेमे ॥ नमोत्थूर्ण
 कहे. नगोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय -इत्यादि कही पीछे
 स्तवन कहे. पीछे जयरीयराय कही. नमोत्थूर्ण सन्वे
 तिहिवेण वदामि पर्यंत कहे ॥ एम पाच शक्रस्तत्र देव-
 वदन विवि जाणवो ॥

ए त्रिधि प्रवचनसारोद्धार प्रमुख ग्रथमें कहो छे.
 तथा चेत्यवदनं बृहद्भाष्य मे एम कहो छे ॥ नमस्कार
 कथन पूर्वक शक्रस्तत्र कही, इरियायही प्रतिक्रमणादि
 कहे, वली नमस्कार कथनपूर्वक शक्रस्तत्र कही दोय बार
 चार थुई से देव वादे फेर शक्रस्तत्र कही " जायंति
 चेइयाइं " गाथा भणी समाममण पूर्वक जायंति के०
 वाजी गाथा कही, स्तवन कह वली नमोत्थूर्ण कही,
 जयरीयराय कहे ॥ इति देववदन त्रिधिः ॥

पीछें निस्सही पूर्वक पोसहशाला मांहे आवी, डरियावही पडिक्कमें. पीछें सिज्भाय ध्यान करे, जो तिविहार उपवास क्रियो हुवे, तो पच्चक्खाण वेला पूर्ण हुवां जल पाणकुं पच्चक्खाण पारे ॥

हवे पच्चक्खाण पारणेका विधि लिखते हैं ।

खमाममण देई डरियावही पडिक्कमें. फिर एक खमासमण ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पच्चक्खाण पारवा मुहपत्ती पाडलेहुं ? गुरु कहे, पाडलेहेह ॥ पीछें इच्छे कही खमासमण देई, मुहपत्ती पडिलेहे. फेर एक खमासमण देई, इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पाणहार अमुक पच्चक्खाण पारुं ? गुरु कहे, पुणोवि कायव्वो. पीछें यथाशक्ति कही, खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पाणहार पारुं ? गुरु कहे, आयारो न मोतव्वो. पीछें तहत्ति कही, अमुक पच्चक्खाण चउविहार कह्यो, एम कही एक नवकार गुणी पच्चक्खाण फासियं, पालियं, मोहियं, तीरियं, किट्टियं, आगाहियं, जं च न आराहियं. तस्स मिच्छामि दुक्कडं, कही ॥ चैत्यवंदन करे. क्षणमात्र सिज्भाय कही यथासंभवं अतिथिसंविभाग करी पाणी पीने ॥

तथा उपधानवाही हुवे तो पोरिसी प्रमुख पंचचक्खाण पारी आहार करे. पीछे आसण धैठो थकोहीज दिवस चरिम पंचचक्खे, पाछे इरियावही पडिक्कमी चैत्यवंदन करे. ए चैत्यवदन आहार संवरण निमित्त, छे ॥ इति पंचचक्खाण पारणे का विधि ॥

पीछे जो वहिभूमि जावणो हुवै, तो आवस्सही कही उपयोगी थको, निर्जाव थडिलेजई अणुजाणह जस्सुग्गहो कही पूर्व, उत्तर, सूर्य, ग्रामादिकेने पूठि अण देई, मलमूत्र परिठवे, प्राशुरुजलें शुद्ध थई तीन वार वो सिरामि, एहयु कहिये करी मल मूत्र वो सिरावी, पोसहशालायें निस्सही पूर्वक पेसी इरियावही पडिक्कमे. खमासमण देई कहे; । इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ गमणागमणं आलोयइ ? गुरु कहे, आलोएइ. पीछे इच्छ कही गमणागमण आलोवे ॥ ते इम आवस्सही करी, प्राशुरु देशें जई, संडासा पूंजी, थंडिलो पडिलेही, उच्चार प्रश्रवण बोमिरावी, निस्सही करी पोसहशालायें आव्ये ॥ आवति जंतेहिं जं खविय, जं विराहियं, तस्स मिच्छामि दुक्कठं, एम कही वैसे. पीछे पडिलेइण वेळा सीम सिज्जाय ध्यान करे ॥

॥ हुवे पावले, पहुरे इरियावही पडिक्कमी खमासम-
ण देई कहे. इच्छाका ० ॥ सं ० ॥ भ ० ॥ पडिलेहण
करुं ? गुरु कहे करेह. इच्छं कही दूजे खमासमणे
इच्छाका ० ॥ सं ० ॥ भ ० ॥ पोसहशाला प्रमार्जु ?
गुरु कहे, प्रमार्जह. पीळें इच्छं कही, मुहपत्ती पडिलेही
दोय खमासमणे अंग पडिलेहण संदिस्साडं ? अंग पडि-
लेहण करुं ? कहे. पीळें गुरु वचनें इच्छं कही मुहपत्ती
पडिलेही दंडासणो पूंजणी प्रमुखसें प्रमार्जी पोसहशाला
प्रमार्जे. पीळें काजो शुद्ध करी, उद्धरी, एकांत विस्वरतो
परठवी इरियावही पडिक्कमी, खमासमण पूर्वक कहे ॥
इच्छकार भगवन् पसाउ करी पडिलेहणा पडिलेहावोजी॥
पीळें स्थापनाचार्य पडिलेही स्थापे. गुरु समीपें अथवा
थापनाचार्य समीपे एक खमासमण देई ॥ इच्छाका ० ॥
सं ० ॥ भ ० ॥ मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह-
पीळें इच्छं कही खमासमण देई, मुहपत्ती पडिलेहे. पीळें
दोय खमासमणे ॥ इच्छाका ० ॥ सं ० ॥ भ ० ॥ सिक्काय
संदिस्साडं ? सिक्काय करुं ! उक्त रीतें क्षणमात्र सिक्काय
करी तिविहार उपवास की थो हुवे तो गुरु साखें पा-

णिहार पंचचरेख ॥ उपधानवाही प्रमुख आहार कीधो
 हुवे, तो वादणां दोय देई, पंचचखाण करे पीछें एक
 खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ उपधि
 भडिलां पडिलेहण संदिस्साउं; बीजे खमासमणें इच्छा
 का० ॥ सं० ॥ भ० ॥ उपधि थडिला पडिलेहुं । गुरु
 बचनें इच्छं कही, दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥
 भ० वेसणो सदिससाउ वेसणो-ठाउ कही वैसे. वस्त्रकंवल्लादि
 पडिलेहे. पुंजणी हुवे, तो ते पण मुहपत्तीशुं पडिलेहे
 छपपासी तो छे तेमाटें सर्व पाछो कडिपट्टो धोतीयां कण
 दोरो पडिलेहे, उपधानवाही प्रमुख भोजन कीधो हुवे तो
 कडिपट्टादि पडिलेह्या. पीछें वस्त्र कंजलादि पडिलेहे. ए
 विशेष छे ॥ पीछें कालवेला सीम सिंभाय ध्यान करे,
 पीछें उच्चार मंत्रवण २४ थडिला पडिलेहे, जो चरदश
 हुवे, तो पाखी चउमासी पडिक्कमणो करे, संवच्छरीयें
 संवच्छरी पडिक्कमणो करे. तिहा देवसी पडिक्कमणो
 पूर्वे लिख्यो छे, तिमहज करे, पण इतरो विशेष छे ॥
 इच्छा० ॥ देवसियं आलोपमि इत्यादि देवसी आलोयां
 पीछें “ ठाणे कमणे चंकमणे ” इत्यादि पाठ करे. सुद्धो-

वदव काउस्सग कियां पीछें दोय खमासमणें ॥ इच्छा-
का० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सिम्हाय संदिस्साउं ? सिम्हाय
करूं ? कही वैठो थको तीन नवकार प्रमुख सिम्हाय
करे ॥ इति ॥

पात्तिकादि तीन पडिक्कमणविधि एही पुस्तक में
लिख गये हैं वहांसे जान लेनां.

हवे पडिक्कमणो हुवा पीछें साधुको बेयावच्च करी
पोरसी सीम सिम्हाय ध्यान करे, जो लघुनीति प्रमुख
करवी हुवे, तो आसज्झ कहे तो थको, भूमिं प्रमार्जे वं-
डिले स्थानकें जई, देहशंका निवारे, प्रश्रवण वोसिरावी,
स्वस्थान कें आवे. भगवत् ! बहु पडिपुन्ना पोरसी एम
कही खमासमण देई इरियावही पडिक्कमे. पीछें राइसं
थारो विधि करे ॥

हवे राइ संथारा विधि कहे छे ।

खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० भ० ॥ राइ
संथारा मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह. पीछें
इच्छं कही, खमासमण देई मुहपत्ती पडिलेहे. एक खमा-

समणे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ राइ संधारो संदि-
 स्साउं ? वीजें खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥
 राइ संधारो ठायु ? पीछें गुरु वचनें इच्छं कही, चउक्क-
 साय पढिमल्लुवल्लूरण इत्यादि नमस्कार कथन पूर्वक ज-
 यवीयराय सूधी चैत्यवदन करे. भूमि प्रमार्जी, संधारो
 उत्तर पट्टो पायरे. पीछे शरीर प्रमार्जी निस्सही निस्सही
 हम कही संधारे बेसो, तीन नवकार तीन करेमि भं ते
 छच्चरी ॥ एमो खमासमणाणं, गोयमार्इणं महामुणीणं,
 'अणुजाणह जिट्ठिज्झा अणुजाणह परम गुरु' इत्यादि
 राइ संधारा गाथा भणो, वाम हाथ सिराणे देई सोवे.
 निद्रा नावे जां सीम मुनिवर चरित्र चितवे, पसवाडो
 फेरे तो शरीर संधारो प्रमार्जी फेरे, जो देह शंकायें ऊठे,
 तो पूर्वोक्त विधे देहशका निवारी, इरियावही पढिक्कमे॥
 पीछे जघन्ये पण तीन गाथानी सिंभाय करी सोवे ॥
 इति राइ संधारा विधि कह्यो ॥

हवे रात्रिनें पाळिले पहोर ऊठी, नवकारा दि गुणी,
 इरियावही पढिक्कमे. खमासमण देई कुसुमिण दुस्सुमिण
 काउस्सग करी, पूर्वोक्त विधे सामायिक लेवे, इहा इरे-

यावही न पडिक्कमे. पीछें दोय खमासमणें सिझाय सं-
दिस्सावी आठ नवकार गुणी, पडिक्कमण वेला सोम
सिझाय करे. पडिक्कमण वेला हुवां पडिक्कमणो पूर्वली
परें करे, पण इतरो विशेष छे, के राइ आलोयां पीछें
संधारा उवठणकी इत्यादि पाठ कहे. एम संपूर्ण पडिक्क-
मणो कगी पडिलेहण वेलायें पूर्वोक्त विधे पडिलेहण करी,
धर्मशाला पूंजी काजो ऊद्धरी इरियावही पडिक्कमे. दोय
खमासमणें सिझाय संदिस्सावी, उपदेशमाला प्रमुख
सिझाय करे. पीछें पोसह पारे ॥

अथ पोसह पारने का विधि लिखते हैं ॥

खमासमण देई मुहपत्ती पडिलेहे. फेर खमासमण
देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पोसह पारुं ?
गुरु कहे, पुणोवि कायव्वो. पीछें यथाशक्ति कही, खमा-
समण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पोसह
पारयुं ? गुरु कहे, आयारो न मोत्तव्वो. पीछें तहत्ति कहे
खमासमण देई अर्धावनत्त गात्रें उभो थको तीन नवकार
गुणी, खमासमण देई, मुहपत्ती पडिलेहे, पीछें खमासमण

देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सामायिक पारुं ?
 गुरु कहे पुणोवि कायव्यो. पीछे यथाशक्ति कही, खमास-
 नण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ । सामायिक पा-
 रयु ? गुरु कहे आचारो न मोत्तव्यो. पीछे तदति कही
 खमासनण देई अर्धावनत गात्रे उभो थको हाथ जोड्यां
 मुहपत्ती मुखे । दया थका तीन, नवकार, गुणी संडासा
 पडिलेहे. गोडालीये वेसी मस्तक नमावी, " भयवं दस-
 न्नाभदो " इत्यादि भावनारूप गाथा कहे. पीछे पोसहना
 उपकरण सवरी, देहरे जई देव जुहारे. घरे आवी आहार
 निष्पन्न हुवो देखी साधु समीपे आवे, अतिथि सविभाग-
 व्रत साचवण निमित्त साधु भणी निमंत्रणा करी, घरे लै
 जावे, साधु पण शुद्ध आहार लैई, स्वस्थानके आवे, ति-
 नार पीठे साधुने जे आहार दीधो. तेहनोहीज शेष आहार
 आप करे ॥ इति आठपुहरी पोसह ग्रहण पारण विधि ॥

हवे दिन ऊग्या पीछे पोसह लै, तेहनो
 विधि कहे छे ॥

घरधकी निश्चित थई धर्मस्थानके आवी. सर्व उपग-
 रण पडिलेही. कचरो विधिशु परटवी इरियावही पडि-

ककमे. खमासमण पूर्वक आग्या मांगी. पोसह मुहपत्ती
 पडिलेहे. आाँ पोसह ग्रहणका विधि पूर्वें लिखा है. तिम
 हीज जाणवो. पण दिवस पोसहहिज करणो हुवे. तो
 पोसह दंडक उच्चरतां जावादिवसं पञ्जुवासामि, एहवो
 पाठ कहे. अने जो अष्ट पुढरी करवां हुवे. तो जाव अहां
 राक्कें पञ्जुवासामि एहवो पाठ कहे. पीछें सामायिक वि-
 धि सर्व करी चैत्यवंदन कुसुमिण दुस्समिण काउस्सग
 करी पडिक्कमणो करी दोय खमासमणें बहुवेलं संदि;
 स्सावे २, अने जो पूर्वें पडिक्कमणो गुरु साथें करयो
 हुवे. तो पडिक्कमणानें अंतें पडिलेही राख्यां जे वस्त्र. ते
 पहिरी पोसह सामायिक सर्व विधि करी दोय खमासमणें
 बहुवेलं संदिस्सावे २. तथा जो गुरुसैं जूदो पडिक्कमणो
 करयो हुवे. तो गुरुपासैं आवी पोसह सामायिक सर्व
 विधि करी. आलोयण खामणादि निमित्तें मुहपत्ती पडि-
 लेही वे वांदणां देई इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ राइयं
 आलोउं ? गुरु कहे. आलोएह. पीछें राई आलोवे. फेर
 एक खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ अ-
 ष्टदिओमि अभितर. राइयं खामेमि ? गुरु कहे खामेह.

पीछे सब पाठ कहे. राई खामे. पहिला पढिक्कमणामे
नवकारसी पच्चख्यो थो तेमाटे पीछे गुरु सार्वे पच्च-
क्खाण उपवासनो करे. पीछे दोय खमासमणे बहुवेल्
सदिस्सावे ॥ ए तीन प्रकारका विकल्प जाणना. हवे प-
ढिलेहण तो पूर्वे करी छे. तो पण आदेश मागवो ते
एम खमासमण देई० ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥
पढिलेहण सदिस्साउ ? बीजे खमासमणे पढिलेहण करुं ?
कही मुहपत्ती पढिलेहे. पीछे इमहीज दोय खमासमणे त्र-
ग पढिलेहण सदिस्सावी मुहपत्ती पढिलेहे पीछे वली
खमासमण देई. इच्छाकार भगवन् ' पस्साउ करी पढिलेह-
ण पढिलेहावो जी, एम कहे, पीछे एक खमासमण देई ॥
इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ उपरि मुहपत्ती पढिलेहे ?
कही कोई चस्त्र अणपढिलेहो राख्यो हुये, तो पढिलेहे.
नहीं तो वली असण पढिलेहे दोय खमासमणे सिधाय
सदिस्सावी उपदेशमाला प्रमुख सिज्ञाय करे आगे सर्व
क्रिया पूर्वे अठ पुहरी पोसहमें लिखी है, तिमहीज जाण-
नी, पण इहा अठ पुहरी पोसह तो पाछली राते
वली सामायिक न लेवे. जिणें दिवस सबधी चउ
पुहरो पोसह लीयो हुये, ते पाछले पुहरे पच्च-

करवाण किया, पीछें दोय खमासमणें ओही पडिलेहण
 संदिस्साव ? ओही पडिलेहण करुं ? कहे, पण थंडिला
 पद न कहें. अने थंडिला नही पडिलेहे. यह निःकेवल
 दिन संवंधी पोसह ग्रहण करणें में विशेष विधि ही, सा
 बताई ॥ इति दिन संवंधी पोसह ग्रहण विधि:

॥ अथ रात्रि संवंधि चउपुहरी पोसहनो विधि कहे हैं ॥

॥ तिहां जिणे प्रथम चउ पुहरी दिवस पो सो ऊच्च
 रथो हे. पीछें संध्यानी पडिलेहण करतां रात्रि पोसहनो
 भाव थयो, तो पच्चवखाण कियां पीछें दोय खमासमण
 पोसह मुहपत्ती पडिलेही तीन नवकार गुणी तीन वार
 पोसह दंडक उच्चरे. तिहां जाव रत्ति पञ्जुवासामि एम
 पाठ उच्चरे पीछे सामायिक विधि पूर्व लिख्यो हैं, तिम
 करे पणे सामायिक ऊच्चरयां पीछें दोय खमासमणें
 सिभाय संदिस्सावी आठ, नवकार कही वेमणो संदि-
 स्सावी, पांगरणो संदिस्सावी, पीछें दोय खमासमणें ॥
 इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ ओही थंडिला पडिलेहण

संदिस्साउं ओही थंडिला पडिलेहण करुं ? गुरु कोह,
करेह इच्छं कही उपधि पडिलेहे. आगे सर्व क्रिया पूर्वे
लिखी तिम जाणवी. तथा जे श्रावक उपवासी तोंव
अपणें दिवसें पोसह न करी शक्यो, ते रात्रि पोसहनी
भाव थये, पाळले पहर धर्मस्थानके आवे. जो वसती
प्रमार्जी, हुवे, तो सरथो नहीं तो वसती प्रमार्जी काजो
परिठवी सर्व उपगरण पडिलेही इरियावही पडिक्कमे.
पाछें चउविहार पच्चक्खाण करी दोय खमासमण पोसह
मुहपत्ती पडिलेही दोय खमाणमण देई पोसह संदिस्सावे फेर
खमासमण देई, तीन नवकार गुणी, तीन वार पोसह दंडक
उच्चरे. तिहा दिवसेसरात्ति पज्झुवासा॥मि कहे. सध्या हुवे,
तो रात्ति पज्झुवासा॥मि कहे. पीछें बिहुं खमासमणें सा-
मायिक मुहपत्ती पडिलेहे. दोय खमासमणें देई, सामायि-
क संदिस्सावे फेर खमासमण देई, तीन नवकार गुणी,
तीन करोमि भं ते उच्चरे. दोय खमासमण देई सिझाय
संदिस्सावी, आठ नवकार कहे. फेर दो खमासमण देई,
बेसणो संदिस्सावी सांतादिकें वे खमासमण देई पागर-
ण, संदिस्सावे. पीछें वे खमासमण देई, अंग पडिलेहण

संदिस्सावी, मुहपत्ती पडिलेहें. फेर वे स्वमासमण देई,
 ओही थंडिलां पडिलेहण संदिस्सावी जो अणपडिलेहो
 उपगरण हुवे तो पडिलेहे. जो सर्व उपगरण पडिलेहो
 हुवे तो पण यानक शून्यता टालवा भणी वली आसण
 पडिलेही, पडिकमण वेला मीम गिम्हाय ध्यान करे.
 धीछें उच्चार प्रश्रवणा २४ थंडिलां पडिलेही पडिकम-
 णां करे. तथा पाछली रातें वली सामायिक न लेवे.
 इतना निजेवल रात्रिसंबंधि पोसह लेवाना विकल्प जा-
 णवा ॥ इति रात्रि पोसहविधि; संपूर्णः ॥

अथ ठाणेकमणे चंक्रमणे लिख्यते ॥

ठाणेकमणे चंक्रमणे आउत्ते अणाउत्ते ॥ हरिअ-
 कायसंघट्टे वीयकायसंघट्टे यावरकाय संघट्टे छप्पइयासंघट्टे
 सच्चस्सवि देवसिअ, दुच्चितिय दुग्भासिय दुच्चिट्ठिअ ॥
 इच्छाकारेण संदेस्सह, इच्छं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥
 ॥ १ ॥ संथाराउवट्टणकी, आउट्टणकी, परिअट्टणकी,
 पसारणकी, छप्पइयासंघट्टणकी. अच्चक्खुविसयकायकी,
 सच्चस्सविराड्अ, दुच्चितिय, दुग्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ,

इच्छाकारेण संदिस्सह, इच्छ तस्स मिच्छामि दुक्कदं ॥
१ ॥ इति ॥

॥ अथ देववांदणमें अथवा प्रातःकाल संध्याकालके
प्रतिक्रमणमें कहने की स्तुति ॥

॥ तत्र प्रथम वीजकी स्तुति ॥

॥ महीमटण पुन्नसोवन्नदेहं, जणाणंदणं केवलन्नाण-
गेहं ॥ महानंद लत्थी बहु बुद्धिरायं, सुसवामि सोमंधर
तित्थराय ॥ १ ॥ पुरा तारगा जेह जीवाण जाया, भव-
स्सति ते सव्व भव्वाण ताया तहा संपयं ज जिणा वट्ठमा
णा, सुहं दित्तु ते मे तिलोयप्पहाणा ॥ २ ॥ दुरुत्तार स-
सार कुब्बार पोयं, कलंका वली पक्कपत्तखालतायं मणोव
च्चियत्थे सुमदार कप्पं, जिणंटागम वदिमो सुमहप्प ॥ ३ ॥
विकोसे जिणंटाणणभाजलीणा, कलारूप लावणण सोहग्ग
पीणा ॥ वहं तस्स चित्तमि णिच्चं पि भ्माणं, सिरी भारडं
देहि मे सुद्धन्ताणं ॥ ४ ॥ श्री सीमधरजीनी स्तुति ॥ १ ॥

॥ अथ पंचमी स्तुतिः ॥

पचानतकसुप्रपंचपरमानन्दप्रदानक्षम, पंचानुत्तरसी-
मदिव्यपदवीवश्याय मन्त्रोत्तमम् ॥ येन प्रोज्ज्वलपंचमी

वरतपो व्याहारितत्कारिणां, श्री पंचाननलाङ्घनः स
 वनुतां श्रीवर्द्धमानः श्रियम् ॥ १ ॥ ये पंचाश्वरोथसाधन
 पराः पचप्रमादीहराः, पंचाणुव्रतपंचसुव्रतविधिप्रज्ञापना-
 सादराः ॥ कृत्वा पंचऋषीकनिर्जयमथो प्राप्ता गतिं पंचमीं,
 तेऽमी संतु सुपंचमीव्रतभृतां तीर्थकराः शंकराः ॥ २ ॥
 पंचाचारधुरीणपंच मगणाधेशेन संसूत्रितं, पंचज्ञानवि-
 चारसारकलितं पंचेषुपंचत्वदम् ॥ दीपाभं गुरुपंचमा-
 रतिमिरेष्वेकादशी रोहिणी पंचम्यादिफल प्रकाशनपटुं
 ध्यायामि जैनागमम् ॥ ३ ॥ पंचानां परभेष्टिनां
 स्थिरतया श्रीपंचमेरुश्रियां, भक्तानां भविनां गृहेषु बहुशो
 मा पंचादिव्यं व्यधात् ॥ प्रहो पंचजने मनोमतकृतौ स्वा-
 रत्नपंचालिका, पंचम्यादितपोवतां भवतु सा सिद्धायिक
 त्रायिका ॥ ४ ॥ इति श्रीज्ञानपंचमीस्तुतिः ॥

अथ अष्टमी स्तुति ॥

चउवीसे जिनवर, प्रणमुं हुं नितमेव ॥ आठम दिन-
 करिये, चंद्रप्रभुनी सेव ॥ मूरति मन मोहे, जाणे पूनिम
 चंद ॥ दीठां दुःख जाये, पामे परमानंद ॥ १ ॥ मिलि

चोसद्व इंद्र, पूजे प्रभु जाना पाय ॥ इंद्राणी अपच्छर,
 'कर जोड़ी गुण गाय ॥ नदीश्वर द्वीपें मिलि सुरवरनी
 कोठ ॥ अट्टाई महोच्छव, करता होडा होठ ॥ २ ॥ शे
 भुजा शिखों, जाणी लाभ अपार ॥ चउमासें रहिया,
 गणधेर मुनि परिवार ॥ भवियणने तारे, देई धरम उप-
 देश ॥ दूय साकरथी पण, वाणी अधिक विशेष ॥ ३ ॥
 षोसो पढिक्कमणु, करियें व्रत पच्चक्खाण ॥ आठम तप
 करता, आठ करमनी हाण ॥ आठ मंगल थाये दिन
 दिन कोडि कल्याण ॥ जिन सुखसूरि कहे, इम जीवत
 जनम प्रमाण ॥ इति अष्टमी स्तुति ॥

अथ मौनैकादशी स्तुति ॥

अरस्य प्रव्रज्या नमिजिनपतेर्ज्ञानमतुल, तथा मल्ले-
 र्जन्तम व्रतमपमलं केवलमलं ॥ बलचैकादश्या सहसि लस
 दुहाममहसि, चित्तौ कल्याणानां क्षपति विपद पचकमदः
 ॥ १ ॥ सुपर्वेद्रभ्रेण्यागमनगमनैर्भूमिवलय, सदा स्वर्गत्ये-
 बाहमहमिकया यत्र सलयं ॥ जिनानामप्यापुः क्षणमति-
 सुख नारकसदः, चित्तौ ॥ २ ॥ जिना एवं यानि प्रणिज-
 गदुरात्मीयसमये, फलं यत्कर्तृणामिति च विदितं शुद्ध-

समये ॥ अनिष्टारिष्टानां क्षितिर्नुभवेयुर्वहुमुदः, क्षि० ॥
 ॥ ३ ॥ सुरा सेंद्रा सर्वे सकलजिनचंद्रप्रमुदिता, स्तथा
 च ज्योतिष्काखिलभवननाथाः समुदिताः ॥ तपो यत्क-
 र्तृणां विदधति सुखं विस्मितहृदः, क्षितौ० ॥ ४ ॥ इति
 मौनैकादशीस्तुतिः ॥

अथ पार्श्वजिनस्तुति ॥ हरिगीत छंद ॥

द्वेद्वेकि धपमप, धुधुमि धोधो ध्रसकिधर, धपधोरवं ॥ दो-
 दौकि दो दौ, दाग्दिदि दाग्दिदिंकि, द्रमकि द्रण रण
 द्रेणवं ॥ भकिभ्र्योकि भ्र्येभ्र्ये झणणरणरण, निजकि
 निजजन, रंजनं ॥ सुरशैल शिखरे, भवतु सुखदं पार्श्व-
 जिनपतिमज्जनं ॥ १ ॥ कटरेंगिनि थोंगिनि, किटति
 गिग्ददां धुधुकि धुटनट, पाटवं ॥ गुणगुणण गुणगण,
 रणकि रणें, गुणणगुणगण, गौरवं ॥ भझिझेंकि भ्रूंभ्रूं.
 भ्रणण रणर रण, निजकि निजजन, सज्जना ॥ कलयं-
 ति कमला, कलितकलमल, भुकलमीश, महेजिनाः ॥ २ ॥
 ठकि ठेंकि ठेंठें, ठदिद्रक ठदिद्रक, ठदिद्रपट्टा, ताड्यते ॥
 तलल्लोकि लोल्लो त्रेंषि त्रेंपिनि, डेंपिडेंपिनि, वाद्यते ॥
 ॐ ॐ कि ॐ ॐ, थुंगि थुंगिनि, धोंगिधोंगिनि, कलरवे ॥

जिनमतमनतं, महिम तनुतां, नमति सुरनर, मुञ्छवे ॥३॥
 पुंदाकि पुदा पुपुद्दि पुदा पुपुद्दि दों दों, अवरें ॥
 चाचपट चचपट, रणाकि रों रों दणण देंदें, हवरें ॥
 तिहा सरगमपयुनि, निःपमगरस, सस ससस सुर, सेव-
 ता ॥ जिननाथ्यरगे, कुशलमुनिशं, दिशतु शासन, देव-
 ता ॥ ४ ॥ इति श्रीजनकुशलसूरिजीकृत पार्वजिन० ॥

अथ आंविल की स्तुति :

निरुपम सुखदायक जगनायक लायक शिवगति
 गामी जी, करुणासागर निजगुण आर्गर शुभ समता
 रस वामी जी ॥ श्रीसिद्धचक्र शिरोमणि जिनवर व्यावे
 जे मन रंगें जी, ते मानय श्रीपालतणी परें पामे सुख सुग
 संगेजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध आचारिज पाठक, साधु
 महा गुणयता जी ॥ दरिमण नाण चरण तप उत्तम,
 नवपद जम जययता जी ॥ एहनुं ध्यान धरंता लदिये,
 अविचल पद अग्निनाशी जी, ते सवला जिननायक न-
 मिये, जिणें ए नीति प्रकाशी जी ॥ आसूमास मनोहर
 तिम बलि, चैत्रक मास जगीशें जी ॥ उजवाली सातम
 धी करिये, नर आंविल नव दिवसें जी ॥ तेर महस

बलि गुणियें गुणगुणं, नवपद केरो सारोजी ॥ इण परि
 निर्मल तप आदरियें, आगम साख उदारोजी ॥ ४ ॥
 विमल कमलदल लोयण सुंदर, श्रीचक्केसारि देवी जी ॥
 नवपद से चक्र भविजन केरां विघ्न हरो सुर सेवी जी ॥
 श्रीखरतर गच्छ नायक सद्गुरु, श्रीजिनभक्ति मुणिंदा
 जी ॥ तासु पसायें इणपरि पभण्ये, श्री जिन लाभ सूरि-
 दा जी ॥ ४ ॥ इति श्री नवपद० ॥

॥ अथ पञ्चसूक्तकी स्तुति ॥

॥ बलि बलि हुं ध्यावुं गाउं जिनवर वीर, जिन
 पर्व पञ्चसूक्त, दाख्यां धरमनी शीर ॥ आषाढ चौमासे
 हुंती दिन पचास, पढिक्रमण संवच्छरी करियें त्रण उप-
 वास ॥ १ ॥ चउवीशे जिनवर पूजा सत्तर प्रकार करियें
 भलें भावें भरिये पुण्य भंडार ॥ बलि चैत्य प्रवाडें फिरतां
 लाभ अनंत, इम परव पञ्चसूक्त सहुमें महिमावंत ॥ २ ॥
 पुस्तक पूजावी नव वांचनायें वंचाय, श्रीकल्पसूत्र जिहां
 सुणतां पाप पुलाय ॥ प्रतिदिन परभावना धूप अगर
 उकखेव, इम भवियण प्राणी परव पञ्चसूक्त सेव ॥ ३ ॥
 बलि साहम्मीवच्छल करियें वारं वार, केइ भावना भावे

रुइ तवसी शिलधार ॥ अढदीह पजूसण एम सेवत आ-
णद सुयदेवी सोनिय रुहे जिनलाभ सूरिंद ॥ ४ ॥ इति
श्री पर्युषणप० ॥

अथ उपदेशमाला पोसह सिधाय लिख्यते ॥

जग चूडामणिभूओ, उसभो वीरो तिलोय सिरि
तिलओ ॥ एगो लोगाइच्चो, एगो चक्खूतिहुअणस्स ॥
॥ १ ॥ सवच्छरमुसभ जिणो, छम्मासे बद्धमाण जिणो-
चदो ॥ इइ विहरिया निरसणा, जण्णभए ओवमाणेण
॥ जइता तिलोयनाहो, विसहइ बहुयाइं असरिसंजण-
स्स ॥ इय जीयंतकराइं, एस खमा सब्वसाहूण ॥ ३ ॥
न चइज्झइ चालेउ, मइइ महावद्धमाण विणचदो ॥ उव-
मगग सहस्सेहिं वि, मेरु जहा आयगुजाहिं ॥ ४ ॥ भदो
विणीय विणओ, पढम गण हरो समत्त सुयनाणी ॥ जा-
णतो वि तमच्छ, विम्विय हियओ सुणइ सब्व ॥ ५ ॥
ज आणपेइ राया, पयइओ त सिरिण इच्छति ॥ इय
गुरुजण मुह भणिय, कयजलिउडेहिं सोउव्व ॥ ६ ॥
जह सुर गणाण उटो, गहगणतारागणाण जह चदो ॥
जहय पयाग नरिंटो, गणस्म वि गुरु तहाणटो ॥ ७ ॥

बालुत्ति महीपालो, न पया परिहवइ एस गुरु उवमा ॥
 जंवा पुरओ काउं, विहरंति मुणी तहा सोवि ॥ ८ ॥
 चडिखवो तेहस्सि, जुगप्पहाणागमो महुरवक्को ॥ गंभीरो
 धिंइमंतो, उवएसपरो य आयरिओ ॥ ९ ॥ अपरिस्सवी
 सोमो, संगहसीलो अभिग्गहमई य ॥ अत्रिकच्छणो अ-
 चवलो, पसंतहियओ गुरु होई ॥ १० ॥ कइयावी जिण-
 परिंदा, पत्ता अयरामरं पंहं दाउं ॥ आयगिण्हिं पवयणं,
 धारिज्जई संपयं सयलं ॥ ११ ॥ अणुगम्पए भगवई,
 रायसुयज्झा सहस्स वंदेहिं ॥ तहवि न करे इ माणं, प-
 रियत्थइ तं तहा नूणं ॥ १२ ॥ दिण दिक्खिपस्स दमग
 स्स अभिमुहा अज्झचंदणा अज्झा ॥ नेत्थइ आसरांगदणं,
 सो विणओ सव्व अज्झाणं ॥ १३ ॥ व ससय दिक्खि-
 माए, अज्झाए अज्झदिक्खिओ साहू ॥ अभिगयण वं-
 दणं नमं, सगेण विणएण सो पुज्जो ॥ १४ ॥ धम्मो
 पुरिसज्जभवो, पुरिसवरदेसिओ पुरिसजिहो ॥ लोएवि
 पट्ट पुरिसो, किंपुण लोगुत्तमे धम्मो ॥ १५ ॥ संवाहनस्स
 सरणो, तइया वाणारसीइ नयरीए ॥ कन्ना सहस्समहि
 यं, आसी किरुववन्तीणं ॥ १६ ॥ तहवि य सा राय-
 सिंरी, उल्लट्ठंती न ताइया ताहिं ॥ उयरट्ठि एण इक्के,

रा ताइया अंगवीरेण ॥ १७ ॥ महिलाणसुं बहुयाण वि,
 मज्झाओ इह समत्त वरसारो ॥ रायपुग्गिसेहिं निज्झइ,
 जणेवि पुरिमो जहिंनत्थि ॥ १८ ॥ किं परजग बहुजा-
 णा, उणाहि वरमप्प सक्खिय सुकया ॥ इह भग्गहचक्कवट्ठी,
 पग्गच्चदो य दिट्ठता ॥ १९ ॥ वेसो वि अप्पमाणो, अ-
 मज्जम पणसु वट्ठमाणस्स ॥ किं पग्गित्तियवे सं, विसं न
 मोरेट्ठ खज्झतं ॥ २० ॥ यम्म रक्खड वेसो, संरुइ वेसेण
 दिक्खिओमि अहं ॥ उम्मग्गेण पढंतं, रक्खइ राया जण-
 वओ य ॥ २१ ॥ अप्पा जाणड अप्पा, जहट्ठिओ अप्प-
 गक्खियओ यम्मो ॥ अप्पा करेइ तं तड, जह अप्पसुहावह
 होइ ॥ २२ ॥ ज जं समय जीवो, आबिस्सइ जेण जेण
 भात्रेण ॥ सा तंमि तंमि समण, सुहासुइ बंधण कम्म ॥
 ॥ २३ ॥ यम्मो मणण हुंतो, तोन वि सीउन्ह वायाविक्क-
 हिओ ॥ संयच्छग्गणसीओ, बाहुउलां तड किलिस्सतो ॥
 ॥ २४ ॥ नियगमइ विगप्पिय चिं, तिण्ण सच्छड्ढुद्धि-
 चग्गिण ॥ कत्तां पारत्ताहियं, कीरड गुरु अणुवणसेण ॥
 ॥ २५ ॥ यद्धो निगोयारी, यविणीओ गन्विओ निर-
 वणामो ॥ साहुजणस्स गराहियो, जणेवि वयणिङ्गमयं
 ल्हड ॥ २६ ॥ योवेण वि सण्णुरिसा, सणंकुमारु व्वरेड

बुभ्रंति ॥ देहे खणपरिहाणी. जंकिर देवेहिं से कहियं ॥
 ॥ २७ ॥ जइता लवसत्तम सुर, विमाण वासीवि पग्वि-
 डंति सुरा ॥ चिंतिज्झंतं सेसं, संसारे सासयं कयरं ॥ २८ ॥
 कहंत भन्नइ सुखं, सुचिरेण वि जस्स दुक्खमल्लिहियए ॥
 जं च मरणा वसाणे, भव संसाराणुवंधि च ॥ २९ ॥
 उवएस सहस्सेहिं. वोहिज्झंतो न बुज्झई कोई ॥ जहवंभद-
 त्तराया, उदाइनिव मारओ चव ॥ ३० ॥ गयकन्न चंच-
 लाए, अपरिच्चत्ताइ रायलच्छीए ॥ जीवासक्कम्म कलि
 मल, भरिय भरातो पडंति अहे ॥ ३१ ॥ वोत्तूणवि
 जीवाणं, सदुक्करा इंति पावचरियाइं ॥ भयवंजा सा
 सासा, पच्चाएसो हु इणमो ते ॥ ३२ ॥ पडिवज्झिऊण
 दोसे, नियए सम्मं च पायवडियाए ॥ तो किर गिगाव-
 ईए, उप्पन्नं केवलं नाणं ॥ ३३ ॥ इति पोसह सिद्धा० ॥

अथ राइसंधारा पोसह सिज्झाय ॥

निस्सिही निस्सिही नमो खमासमणाणं, गोयमाईणं ॥
 महामुणीणं ॥ नवकार ३, करेमि भंते ३, कहियें, अणु-
 जाणह जिठिज्झा, अणुजाणह परमगुरु. गुणगणरयणेहिं

मंढिअमरीरा ॥ बहुपाढिपुत्रा पोरिसि, राइसथारण ठामि ॥
 ॥ १ ॥ अणुजाणह संथारं, वाहुवहाणेण वामपासेण ॥
 कुक्कुड पाय पसारण, अतर तु पमज्झण भूमि ॥ २ ॥
 सत्तोइय संडासं, उवट्टेय काय पडिलेहा ॥ दब्बाई उव-
 ओगं, ऊसासानिरुंभणालोय ॥ ३ ॥ जइमं हुज्झ पमाओ,
 इमस्स देहास्सिमाइरयणीए ॥ आहार सुवहि देहं, सब्ब
 तिविहेण वोरिरियं ॥ ४ ॥ आसव कसाय वंधण, कलहा
 भन्नखाण परपरीवाड ॥ अरइ रई पेमुन्नं, माया मोस च
 मिच्छत्त ॥ ५ ॥ वोसिरिसु इमाइंमु, कखमग्ग संसग्ग
 विग्ग भूआइ ॥ दुग्गइनिवंग्गणाइ, अट्टारस पावडाणाड
 ॥ ६ ॥ एगो ह नत्थि मे कोइ, नाहमन्नस्स कस्सवि ॥
 एवं अदीणमणसो, अप्पाण मणुसासए ॥ ७ ॥ एगो मे
 सासओ अप्पा, नाण दसणसंजुओ सेसा मे बाहिराभावा,
 सब्बे सजोगलक्खणा ॥ ८ ॥ सजोग मूला जीवेण, पत्ता
 दुक्खपरंपरा ॥ तम्हा संजोग सब्बं, सब्बं तिविहेण को-
 सिरे ॥ ९ ॥ अरिहतो मह देवो, जावज्जीव सुसाहुणो
 यगुरुणो ॥ जिण पन्नत्त तत्त, इयसम्मत्त मए गहिय ॥ १० ॥
 चत्तारि मगल, अरिहता मगल, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं
 केवल्लिपन्नत्तो वम्मो मंगलं, चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहता

लोशुत्तमा, सिद्धा लोशुत्तमा, साहू लोशुत्तमा, केवलि पन्नत्तो
 धम्मो लोशुत्तम्मो ॥ चत्तारि सरणं पवज्झामि, अरिहंते सर
 णं पवज्झामि, सिद्धे सरणं पवज्झामि साहू सरणं पवज्झामि,
 केवलि पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्झामि ॥ अरिहंता मंगलं म-
 ज्झ अरिहंता मज्झ देवया अरिहंता कित्तिअत्ताणं, वोसिरा
 मित्ति पावंगं ॥ १ ॥ सिद्धाय मंगलं मज्झ, सिद्धाय मज्झ ॥
 देवया सिद्धाय कित्तिअत्ताणं, वोसिरामित्ति पावंगं ॥ २ ॥
 आयरिया मंगलं मज्झ आयरिया मज्झ देवया ॥ आय
 रियाकित्तिअत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावंगं ॥ ३ ॥ उवज्झाया
 मंगलं मज्झ उवज्झाया मज्झ देवया उवज्झाया कित्तिअत्ताणं,
 वोसिरामित्ति पावंगं ॥ ४ ॥ साहूणो मंगलं मज्झ साहूणे
 ज्झ देवया ॥ साहूणो कित्तिअत्ताणं, वोसिरामि त्ति पा-
 वंगं ॥ ५ ॥ पुढवि दग अगणि मारुय, इक्किक्के सत्त
 जोणि लक्खओ ॥ १ ॥ विगल्लिंदिएसु दो दो, चउरो
 चउरो य नारय सुरेसु ॥ तिरिएसु हुंतिचउरो, चउदस लक्खा
 य मणुएसु ॥ २ ॥ स्वामेमि सव्वजीवे, सव्वेजीवा खमंतु
 मे ॥ मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरंमज्झं न केणवि ॥ ३ ॥
 एवमहं आलोइअं, निदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्म ॥ ति-

विदेण पडिकंतो, वंदामि जिणे चउन्वीसं ॥ स्वमिअ स्वमा
 पिअ मइ स्वमिअ, सव्वह जीव निकाय ॥ सिद्धहसाख
 आलोयणह, मज्झय वेग न भाय ॥ ५ ॥ मव्हे जीवा
 कम्मउत्तु चउदह राज भमतु ॥ ते मइ सव्व स्वमाविया,
 मज्झाणि तेह स्वमतु ॥ ६ ॥ इतिराइ सयारा गाथा स० ॥

॥ अथ श्रीतीर्थमालास्तवनम् ॥

॥ शत्रुंजय ऋषभ समोसरथा, भला गुणभरथा रे ॥
 सिद्धा साधु अनंत, तारथ ते नमु रे ॥ तीन कन्याणक
 तिहा यथा, भुगते गया रे ॥ नैमीसर गिरनार ॥ ती०
 ॥ १ ॥ अष्टापद एक देहरो, गिरिसेहरां रे ॥ भरते भ्रा-
 व्या विंव ॥ ती० ॥ आबु चौमुख अति भलो, त्रिभुवन
 तिलो रे ॥ विमल वसइ वस्तुपाल ती० ॥ २ ॥ समेत
 शिखर सोहामणो, रलियामणो रे ॥ सिद्धा तिर्थकर बीज
 ती० ॥ नयरी चपा निरसीये, हिये हखीये रे ॥ सिद्धा
 श्रीवासुपूज्य ॥ ती० ॥ ३ ॥ पूर्वादेशे पाप्मापुरी, अर्द्ध
 भरी रे ॥ मुक्ति गया महावीर ॥ ती० ॥ जेसत्तभेर जुहारी
 यें, दुःख वारीये रे ॥ अरिहत विंग अनेक ती० ॥ ४ ॥
 बिकानेगज बंदोये, चिरनंदोये रे ॥ अरिहत देहरा आठ ॥

ता० ॥ सौरिसरो संखेसरो, पंचासरो रे ॥ फलोधी यम
 ण पास ॥ ती० ॥ ५ ॥ अंतरिक अजावरो, अमीझरो रे
 जीराबलो जगनाथ ॥ ती० ॥ त्रैलोक्य दीपक देहरो,
 जात्रा करो रे ॥ राणपुरे रिसहेस ॥ ती० ॥ ६ ॥ श्रीना
 मुलाई जादवो, गोर्डा स्तवो रे ॥ श्रीवरकाणो पास ॥
 ती० ॥ नंदीश्वरनां देहरां, बावन भलां रे ॥ रुचक कुंडल
 चाक चार ॥ ती० ॥ ७ ॥ शाश्वती अशाश्वती, प्रतिमा
 छती रे ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल ॥ ती० ॥ तीरथ जात्रा फल
 तिठां, होजो मुक्त इहां रे ॥ समय सुंदर कहे एम ॥ ती०
 ॥ ८ ॥

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनम् ॥

॥ आज आपें चालो सहीयों, सिद्धाचल गिरिजायें
 सिद्धाचलगिरि जइए वहेनी विमला चलगि रिजइए रे
 ॥ आ० ॥ मुण वेहनी ए गिरिनी महिमा, आदि जिनंद
 इम भांखी ॥ भरतादिक नरपतिने आगल, इंद्रादि
 क सहु साखी रे ॥ आज० ॥ १ ॥ इण गिरिवरिये काल
 अनंत, साधु अनन्ता सीधा ॥ जन्म मरणनां दुःख छोडी
 ने, अमल अखय गुण लीधारे ॥ आ ० ॥ २ ॥ इण गि

रि सन्मुख पगला भरता, आत्म शुद्ध सुभावे ॥ कोडि
 भवारा पातक कीया, एक पलरु में जावेरे ॥ आ ॥ ३ ॥
 सासतो तीरथ ए शत्रुजो जाता लागे मित्रो ॥ तीन भुवन
 में इण गिरि तोले, बीजो कोड न दीठो रे ॥ आ० ॥ ४ ॥
 नीरजनशु नेह वरीने, आगे ओलग करम्या ॥ अद्भुत
 आदि जिनेश्वर निरखी, प्रेम सुगारस पीम्या रे ॥ आ०
 ॥ ५ ॥ पुहप सुगया लेई पचरगा, हार सुगधा गूथी ॥
 पहिरावी प्रभु कठे लाहिस्या, शिव मारगनी सृथी रे ॥
 आ० ॥ ६ ॥ गहिर स्पे जिनवर गुण गाता, जात्र नवा
 ए करिये ॥ मन गमती भमती विच भमता, भव सायर
 निसतारिये रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ पूर्य नयाणू वार प्रथम
 जिन, रायण रंगे आया ॥ ए तीरथ शुभ भाये फरसी,
 करिये निरमल काया रे ॥ आ० ॥ ८ ॥ लाभ उदे ए गि
 रियर लहिये, कहे इम केउल नाणी ॥ श्री जिनचढ सदा
 हित वत्सल, प्रेम धणे चित्त आणी रे ॥ आ० ॥ ९ ॥
 उति सिद्धाचल स्तवनम् ॥

॥ अथ अष्टापद गिरिस्तवनम् ॥

'मनडो अष्टापद मोक्षो माहरो जी, नाम जपू निशि
 दीस जी ॥ चत्तारी अठ दस दोय पढीया जी, चिट्ठु दि-

शि जिन चौबीश जी, ॥ म ० ॥ १ ॥ जोजन जोजन
 अंतरें जी, पावह शाला आठ जी ॥ आठ जोजन छेंछुं
 देहरं जी, दुःख दोढग जाये नाठ जी ॥ म ० ॥ २ ॥
 भरतें भरायां भलां देहरां जी, सो भोयरां धूम जी ॥
 आपे झूरत सेवा करे जी, जाण-जोईने ऊभजी ॥ म ० ॥
 ॥ ३ ॥ गौनमस्वाप्ती तिहां चढ़्या जी वली भारीरथ गंग
 जी ॥ गोत्र तीर्थकर बांधीयां जी, रावण नाटक रंग जी
 ॥ म ० ४ ॥ दैव न दीधी मुझने पांखडी जी, आबुं केम
 हजूर जी ॥ समयसुंदर कहे वंदना जी, प्रह उगमते सूर
 जी ॥ म ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्री दादाजी का स्तवन ॥

॥ कुशल गुरु कुशल करो भरपूर, सेवक जन मन
 वंछित पूरण, समरचां होय हजूर ॥ कु ० ॥ १ ॥ परम
 दयाल प्रेम रस पूरण, अशुभ हरण भये दूर ॥ संघ उ-
 दय कर सद्गुरु मेरा, विनवे श्री जिनचंद सूर ॥ कु ० ॥
 ॥ २ ॥ इति ॥

॥ परममंगल श्रीदादाजीकाव्यानि ॥

॥ दासानुदासा इव सर्वदेवा, यदीयपादा व्रजतले

लुठति ॥ मरुस्थलीकल्पतरु स जीया, द्युगप्रधानो जिन-
दत्तसूरिः ॥ १ ॥

॥ चितामणिः कल्पतरुर्वराकौ, कुर्वन्ति भव्याः कि-
मु कामगव्या ॥ प्रसीदतः श्रीजिनदत्त सूरः, सब पदं ह-
स्तिपदे प्रविष्टः ॥ २ ॥

॥ नो योगी न च योगिनी न च नराध्रीशस्य नो
शाकिनी, नो वेतालपिशाचरक्षसगणा नो रोगशीकौ व-
य ॥ नो मारी नच विश्वप्रभु नयः प्रीत्या प्रणत्युच्चकः,
यस्ते श्रीजिनदत्तसूरिगुरवो नामाक्षर ज्ञायति ॥ ३ ॥

॥ अथ सर्वईया लिख्यते ॥

बावन वीर किये अपण वस, चांसठ जोगण पाय
लगाई ॥ डाइण साठण व्यंतर खचर, भूत रु प्रेत पिशा-
च पुलार्दे ॥ बीज तडक रुडक भटक, अटक रहे जु
खटक न काई, कहे धर्मसिंह लघे कुण लीढ, दिघे जि-
नदत्ताकि एक दुहाई ॥ ४ ॥

॥ राजे भुभ ठोर ठोर ऐसो देव नही और और दादो
दादो नामने जगत्र जन्म गायो है, आपणही भाय आय

पूजे लखलोक पाय, प्यास नहुं रान मांज पानी आन
 पायो है ॥ वाट घाट शत्रु थाट हाट पुरपाटणमें, देह गेह
 नेहसुं कुशल बरतायो है, धर्मसिंह ध्यान धरे सेवकां कु-
 शल करे लापो श्रीजिनकुशल गुरु नाम युं कहायो है ॥
 ॥ २ ॥

छप्पा ॥ कुशल अंग उद्धरण, कुशलविणजेंव्यापारें
 ॥ कुशल देव देहरे, कुशल धन राजदुवारें ॥ पुण्य पसा-
 यें कुशल, कुशल श्री संघ भणीजें ॥ वाहण आवे कुश-
 ल, कुशल घर घर गार्जें ॥ श्रीजिनचंद्रसूरि पुहपट्टधर,
 नाम मंत्र आरति वले ॥ श्रीजिनकुशल सूरि पाय पूजतां,
 नव निधान लक्ष्मी मिले ॥ १ ॥

कुशल बडो संसार, कुशल सज्जन घर चाहे ॥ कु-
 शलें मयगत वार, लच्छि घर कुशलें आवे ॥ कुशलें धन
 बरसंत, कुशल धन धनरु वन्नो ॥ कुशलें वोढा यट्ट, कुश-
 ल पहरीय सुवन्नो ॥ ए रसो नाम सद्गुरु तणो, कुशलें
 जग रलीयामणो ॥ भट्टारक श्रीजिनकुशल सूरि नाम ग्रहणें
 करो, घर घर होत वधामणो ॥ २ ॥

॥ अथ सूतक विचार लिख्यते ॥

॥ पुत्र जन्म होने से दिन १० सूतक ॥ पुत्री जन्म होने से दिन १२ बार सूतक ॥ और जो स्त्री के पुत्र हो-य, उस स्त्री के एक मास को सूतक ॥ पुत्र होते मरण पामे तो दिन १ एक सूतक ॥ परदेशों मृत्यु होय तो दिन १ एक सूतक ॥ गाय भैंस, घोड़ी, साढ़ घरमाहे बियाबे तो दिन १ एक सूतक ॥ मरण दूबा कलेवर घर बाहिर लड जाय, जहा तक सूतक ॥ दास दासी अपनी नेष्टायें रहते पुत्र पौत्रादिक को जन्म मरण हो, तो दिन ३ तीन सूतक और जितना महीना को गर्भ गिरे, तितने दिन सूतक ॥ अग जिनके जन्म मरण का सूतक होवे ये १२ बार दिन देवपूजा न करे. और मृतक के सूतक में घर का जो मूल काधिया होवे सो १० दम दिन देव पूजा न करे -॥ और अन्य घर का ३ दिन देव पूजा न करे. और जो मृतक को लूवा होवे, सो १८ चौबीस महर पढिक्रमण न करे ॥ जो सदा का अखंड नियम होवे, तो समता-भाव रख के सारूपणमें रहे. परंतु मुखसे न बहार मंत्र

का भी उच्चारण करे नहीं. स्थापनाजी के हाथ लगावे नहीं और जो मृतक को छुवान हो तो मात्र आठ घंटे पडिक्रमण न करे ॥

भैंस के जब बच्चा होय, तब १५ पंदर दिन पीछें दूध पीणों कल्पे गाय के बच्चा होय तों १७ सतरे दिन पीछें दूध पीणों कल्पे. बकरी का दूध ८ आठ दिन पीछें पीणों कल्पे ॥

१ ऋतुवती स्त्री, चार दिन भांडादिकों न छुवे. ४ चार दिन प्रतिक्रमण न करे, ५ पांच दिन देवपूजा न करे रोगादिक कारण तिन दिवस उपरांत कोई स्त्री को रक्त चलता दीसे, जिसको विशेष दोष नहीं ॥ शुद्ध विवेक से पवित्र होकर दिन ५ पांच पीछें स्थापना पुस्तक छुवे, जिन दर्शन करे, अग्र पूजा करे, परंतु अंग पूजा न करे, साधु को पडिलाभे. ऋतुवती तपस्या करे, सो तो सफल होय. परंतु ऋतु दिन में जिनपूजा प्रतिक्रमणादिक क्रिया सफल न होव, ऐसा चर्चरीग्रंथमें कहा है. जिसके घरमें जन्म मरणका सूतक होवे, उहां १२ बार दिन तक साधु आहार पाणी न वहोरे. सूतकबालं

घा घरका जलसे तथा अग्नि से १२ वारा दिन तरु देव पूजा न करे. निशीथसूत्रक शोलमा उद्देशामें जन्म मरण के, मृत कवालेका घर दुर्गन्धनिक कहा है

गाय के मूत्र में २४ चोवीस प्रहर पीछें, भेष के मूत्र में १६ प्रहर पीछें, गादर गंधडी, घोड़ी के मूत्र में ८ आठ प्रहर पीछें, नर नारी के मूत्र में चार प्रहर पीछें, समू-र्द्धिम जीव उपजे. इत्यादि सूतक का संक्षेप विचार इहां लिखा है. विशेष विचार शास्त्रांतर में जानना ॥ इति सूतक विचार संपूर्णः ॥

॥ अथ ॥ जिन नव अंग पूजाना दुहा ॥

॥ जल भरि संपूट पत्रमां, युगलीक नर पूजंत ॥

अपम चरण अंगुठहो, दायक भव जल अंत ॥ १ ॥

जानु वले काउसग्न रक्षा, विचरथा देश विदेश ॥ खडा

खडां केवल लक्षु, पूजो जानु नरेश ॥ २ ॥ लोकातिक

वचनें करी, वरझ्या वरशी दान ॥ कर काढे प्रभु पूजना

पूजो भवि बहुमान ॥ ३ ॥ मानगयुं दौय, असधी, देखी

वीर्य अनंत ॥ भुजावले भवजलतरथा, पूजो कथ महंत

॥ ४ ॥ सिद्ध सिद्धा गुणउजली, लोकांते भगवंत ॥ वसि
 या तिण कारण भवि, शिरशिखा पूजंत ॥ ५ ॥ तिर्थकर
 पद पुन्यथी, तिहुंअण जन सेवंत ॥ त्रिभुव तिलक स-
 माप्रभु, भाल तिलक जयवंत ॥ सोल पहोर प्रभु देशना,
 कंठविवर वरतुल्य ॥ मधुर ध्वनी सुरनर सुणे, तेण गले
 तिलक असूल ॥ ७ ॥ हृदय कमल उपशय बल, बाल्या
 रागने रोष ॥ हिमं दहे वन खंडने, हृदय तिलक संतोष
 ॥ ८ ॥ रत्न त्रयी गुण उजली सकल सुगुण धियाम ॥
 नाभि कमलनी पूजना करतां अविचल धाम ॥ ९ ॥ उप-
 देशक नवतत्त्वना तेणे नव अंग जिहंद ॥ पूजा बहु विध
 रागथी, कहे शुभ वीर मुणिंद ॥ १० ॥ इति श्री नव
 अंगपूजा ॥

॥ अथः शांतिजिननी आरती ॥

॥ जय जय आरती शांति तुमारा, तोरा चरणकम
 लकी में जाउं बलिहारी ॥ जय० ॥ १ ॥ विश्वसेन अ-
 चिराजिक नंदा, शांतिनाथमुख पूनमचंदा ॥ जय०
 ॥ २ ॥ चालिस धनुष्य सोवनमय काया, मृग लंछन

प्रभु चरण सहाया ॥ जय० ॥ ३ ॥ चक्रवर्ति प्रभु पांच-
 म सो हे, सोलसा जिनवर जग राहु मोढे ॥ जय० ॥
 ॥ ४ ॥ मंगल आरति भोरी कीजें, जन्म जन्मनो लाहो
 लीजें ॥ जय० ॥ ५ ॥ कर जोडी सेवक गुणगात्रे, सो
 नग्नारी अमर पद पावें ॥ जय ॥ ६ ॥

॥ अथ लघु अष्ट प्रकारी पूजा ॥

प्रथम जल पूजा

विमल केवल भाषण भास्कर । जगत् जतु महोदय
 कारण ॥ जिनवर बहुमान जलौ वत । शुचिमनाः स्त-
 पयामि त्रिशुद्धये ॥ १ ॥ ओं श्रीं परम परमात्मने अनता-
 नत ज्ञान शक्तिये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्री मङ्गिज-
 नेंद्राय जल यजामहे स्वाहा ॥

द्वितीय चन्दन पूजा

सकल मोहत मिथ्य विनाशनं । परम शीतल भाव
 युत जिन ॥ विनय कुकुम दर्शन चन्दनैः । सहज तत्प-
 राकाशकृतेर्चयोः ॥ २ ॥ ओं ह्रीं परम० (प्रथम काव्य के
 अनुसार ही) चन्दन यजामहे स्वाहा ॥

(१६४)

तृतीय पुष्प पूजा

त्रिकच निर्मल शुद्ध मनोरमेः । विशद चेतन भाव
समुद्भवैः ॥ सुपरिणाम प्रसून धनैर्नवैः । परम तत्त्व मयं
हिय जान्य ॥ ३ ॥ ओं ह्रीं परम० (प्रथम काव्य
अनुसार ही) पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥

चतुर्थ धूप पूजा ।

सकल कर्म महेधन दाहनं । विमल संवर भाव
सुधूपनं ॥ अशुभ पुद्गल संग विवर्जनं । जिनपतेः पुर-
तोस्तु सुहर्षत ॥ ४ ॥ ओं ह्रीं परम परमा० (प्रथम का-
व्य के अनुसार ही) धूपं यजामहे स्वाहा ॥

पंचम दीपक पूजा ।

भविक निर्मल बोध विकाशकं । जिन गृहे शुभ
दीपक दीपनं ॥ सुगुण राग विशुद्धि समन्वितं । दधतु
भाव विकाश कृतेर्जना ॥ ५ ॥ ओं ह्रीं परम० (प्रथम
काव्यानुसार) दीपकं यजामहे स्वाहा ॥

षष्ठम अक्षत पूजा ॥

सकल मंगल केति निकेतनं । परम मंगल भावमयं
जिनं ॥ श्रयति भव्यजना इति दर्शयन् । दधाति नाथं पुरो-

क्षत स्वस्तिकं ॥ ६ ॥, ओं ह्रीं (परम० पूर्व काव्यानु-
सार) अक्षतं यजामहे स्वाहा ॥

सप्तम नैवेद्य पूजा ॥

सकल पुद्गल संग विवर्जनं । सहज चेतन भाव
विलासकं ॥ सरस भोजननव्य निवेदनात् । परम निर्वृति
भाव महस्पृहे ॥ ७ ॥ ओं ह्रीं परम० (प्रथम काव्यानु-
सार) नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥

अष्टम फल पूजा ॥

कटुक कर्म विपाक विनाशन । सरस पक्क फल
व्रज दौकनं । विहत मोक्ष फलस्य प्रभो पुरः ॥
कुरुत सिद्ध फलाय महाजना ॥ ओं ह्रीं परम० फलं
यजामहे स्वाहा ॥

अर्घ्य पूजा ॥

इति जितवर वृंदं भक्ति पूजयंति । सकल गुण नि-
धानं देवचंद्र स्तुवंति ॥ प्रति दिवस मनंतं तत्त्वमुदभास-
यंति ॥ परम सहज रूपं मोक्षा सौक्ष्म श्रयंति ॥ ओं ह्रीं
परम० (पूर्व काव्यानुसार) अर्घ्यं यजामहे स्वाहा ॥

वस्त्र पूजा ॥

शक्रो यथा जिनपतेः सुरशैल चूला ॥ सिंहासनो
परिगित स्नपनावशाने ॥ दध्यक्षतैः कुंभुष चंदय गंध
धूपैः ॥ कृत्वार्चनंतु दधाति सुवस्त्र पूजां ॥ १ ॥
तद्वत् यावक वर्ग एव विधिनालंकार वस्त्रादिकां ॥ पूजां
तीर्थ कृतां करोति सततं शक्त्याति भक्त्या दृतां ॥ नीरा-
गस्य निरंजनस्य विजिता राते स्त्रिलोकीपते स्वस्यान्यस्य
जनस्य निर्वृति कृते क्लेशक्षवां कांक्षया ॥ ओं ह्रीं परम
परमात्मने० (प्रथम काव्य के अनुसार) वस्त्रं यजामहे
स्वाहा ॥

॥ इति लघु अष्ट प्रकारी पुजा समाप्त ॥

॥ श्राविकाओं को शील संरक्षा के लिये
शिक्षाएँ ॥

- १-पर पुरुष के साथ बात चीत न करना.
- २-पर पुरुष के साथ हंसी, मसखरी न करना.
- ३-पर पुरुष के साथ घर बाहार न जाना.
- ४-पर पुरुष के साथ परदेश गमन न करना.

- ५-पर पुरुष के साथ एकान्त में न बैठना.
- ६-पर पुरुष के साथ किसी प्रकार का खेल न खेलना.
- ७-पर पुरुष के साथ रात्रि में कहीं न जाना.
- ८-पर पुरुष के साथ मार्ग में खड़े न होना.
- ९-पर पुरुष के साथ एक ही वाहन पर सवारी न करना.
- १०-पर पुरुष को स्पर्श नहीं करना.
- ११-पर पुरुष के शरीर पर तेल आदि मर्दन न करना.
- १२-पर पुरुष के साथ एक आसन पर न बैठना.
- १३-पर पुरुष से दृष्टि नहीं मिलाना.
- १४-पर पुरुष के घर अकेले नहीं जाना.
- १५-पर पुरुष को अपने घर में अकेले नहीं बैठाना.
- १६-पर पुरुष से शरीर पर तेल, इतर आदि मर्दन न कराना.
- १७-पर पुरुष से सदा वार्ता में और स्पर्श में दूर रहना.
- १८-किसी पुरुष के देखते हुवे टट्टी पिशाच न करना.
- १९-किसी पुरुष के देखते हुवे स्नान न करना.
- २०-किसी पुरुष के अंग न निरखना.
- २१-किसी को घर का भेद न कहना.

- २२-किसी के भरोसे घर नहीं छोड़ना.
२३-विवाहित स्त्री को पीयर में ज्यादा नहीं रहना.
२४-कभी एकान्त में नहीं बैठना
२५-कभी नायन, धोवन, मालिन, आदि की संगती न
करना
२६-कभी किसी पुरुष के सोने के मकान में नहीं जाना
२७-सदा अपने शरीर के लज्जा स्पद अंगों को अच्छी
तरह ढका रखना.
२८-रास्ते में नीची दृष्टि कर धीरे धीरे चलना.
२९-मेले तमाशों में पुरुषों की भीड़ में नहीं जाना.
३०-वैश्या के घर मदिरा भवन, राजमार्ग और शहर
बाजार इन स्थानों में या आसपास खड़ा नहीं रहना.
३१-निन्दनीय वीचार कभी नहीं करना.

श्रीमद् यति श्री केसरीचंदजी फलोधी
वाले कृत स्तवन ।

महर करोजी महाराज अब मोपे महर करो ॥ अंकड़ी
॥ वोहत दिवस लग तुमपें सेवे तुहीं गरी बन बाज

अ० मा० ॥ १ ॥ चिन्ता चूरण बांझित पूरण, क्रोड
 सुधारण काज ॥ २ ॥ शरणो राखण तुमही समरथ अवर
 न कोई आज ॥ ३ ॥ केशरी चंद की येही अरजी भव
 भव राखो लाज ॥ ४ ॥ इति ॥

चाल-जैन धर्म पायौ दोहलो ।

मानोरे मानो मुझ बालमा । इतनी म करो रीस
 मानोरे ॥ आकडी ॥ किण भरमायो तोने नाहला कुण
 दोनी तोने सीख ॥ खाणो पीणो रे छोडियो घर घर
 मागोरे भीख ॥ १ ॥ तुम विन सूनी सेजडी सूनी लागेरें
 संसार ॥ ऊर्मी भुर रही गोरडी मत छोडो घरवार ॥ २ ॥
 दुख करतारे सुख ऊपन्यो जोवे राजुल नार केशरीचंद
 कहे घण पिया दोनू उतर यारे पार मानोरे मानोरे मुझ
 बालमा ॥ ३ ॥ इति ॥

आयो सही अब जाऊ कहा शरणागत को शरणागत
 तेरी आयो सही ॥ आंकडी ॥ तोहू समान मिल्यो नहीं
 कोई दूढ फिरो धरती सब हेरी ॥ १ ॥ होय दयाल महा
 प्रभुजी अब, आन भई तुमसे भट मेरी ॥ २ ॥ दास कल्या-
 ण करे विनती सुण, पारस नाभ सुपारस मेरी ॥ ३ ॥ इति

धन धन संप्रति सांचो राजा जिण कीधा उत्तम
 कामरे ॥ सवालाख परसाद कराया कलयुग राखो नाम
 ॥ १ ॥ वीर संवत्सरे संवत् वीय तेरोत्तर रविवाररे ॥
 महा सुदी अट्टम विम्म भराया सफल कियो अवताररे
 श्री पदम प्रभुनी मूरति स्थापी संकल तीर्थ शृणगाररे ॥
 कलियुग कल्प तरु परगाटिया बांछित फल दाताररे ॥ ३ ॥
 उषासरा बे हजार कराया दान शाला सत सातरे ॥ धर्म
 तणा आधार आरोपी त्रिजग हुवो विख्यातरे ॥ ४ ॥
 सवा लाख पर साद कराया छत्तीस सहस्र उद्धाररे ॥
 सवा क्रोडी संख्यो प्रतिमा धातु पच्चासुं हजाररे ॥ ५ ॥
 इक परसाद नवो नित निषजे तो मुख सुद्धि होयरे ॥ एह
 अभिग्रह संप्रित कीनो उत्तम करणी जोयरे ॥ ६ ॥ अर्पण

सज्जाय ।

धन धन श्रावक पुण्य प्रभावक विजय शेठनें शेठानी
 शुक्ल पक्ष विजया व्रत लीन्हा शेठ कृष्ण पक्ष रा जाणी
 धन धन श्रावक ॥ आंकडी ॥ हिवडै तौहारसिंगार सजी
 तनु काम घटा जिम हुलसानी ॥ सज सिंगार चढी पिउ
 मंदिर हेज घणो हिय हरषानी ॥ धन० ॥ १ ॥ तीन

दिवस मुझ व्रत तणी छै सेठ बोले सुधुरी वाणी ॥ वचन
 सुणी नैनां नीर दुलिया वदन कमल गयो विलखाणी ॥
 धन० ॥ २ ॥ पूछै प्रीतम सुण मुख लीनी कुण चिंता
 मनमें आणी ॥ शुक्ल पत्त गुरु मुख व्रत लीनो तुम पर-
 णी बीजी साणी ॥ वन० ॥ ३ ॥ अवर नार मुझ बेहन बरी
 वर धन वीरज थारी जाणी ॥ एकण सिज्या हेज अंपर
 बल, तोपिण मन राख्यो ताणी ॥ वन० ॥ ४ ॥ वरषा
 काल भीजत धन गाजै चहुं धारा वरषै पाणी ॥
 पद ऋतु वरस द्वादश निर्मल शील पाल्योजी सुमति आ-
 णी ॥ धन० ॥ ५ ॥ विमल केसली करी प्रशंसा ये दो-
 नों उत्तम प्राणी ॥ खयर हुई सजम व्रत लीनो मोह कर्म
 बुल धाणी ॥ ६ ॥

सद्गुरु स्तवन ।

सद्गुरु श्री जिन दत्त सूरिंद अर्ज सुणो महोदयणी
 सद् गुरु आचारज गुण बत नव पद माहे दीपतो ॥ सद्
 विरुद् आपरा अनेक किम कही आवे मो भणी ॥ सद्-
 गुरु मिथ्यात्वी बली देव विघ्न करुं नै जीपतो ॥ सद्गुरु
 सहर सिरै मुलतान लोक वसै सुखिया सह सद्गुरु जा-

ति महेसरी मांय मृदुडो लूणो गुण बहू ॥ सद्गुरु प्रति
 बांध्यो गुरुराय मिथ्यामत छोडाविया ॥ सद्गुरु कुल ता-
 रयो म्हारज म्होनै पार उतारिया ॥ सद्गुरु सीखे सह
 परिवार नित गुरुजी नां गुण पढे ॥ सद्गुरु अभयदेवना
 शिष्य सुनिजर खरी छे राजरी ॥ सद्गुरु दिल हुलसा-
 यो आज पोस वदी दशमी दिनै ॥ सद्गुरु राज मनोहर
 एह गुण गायो सांचे मनै ॥ इति ॥

चंदा प्रभुजीका स्तवन ।

चंदा प्रभुजी से ध्यान रें मोरी लागी लगनवा ॥
 ॥ आंकडी ॥ लागी लगनवा तोडी न टूटे जब लग घट में
 प्राण रे मोरी लागी ० ॥ १ ॥ दान शीयल तप भावना
 भावो जैन धर्म प्रति पालरे । मोरी लागी ॥ २ ॥ केसर
 चंदन अवर अरगचा हार चढाऊं गुलावरे मोरी ॥ ३ ॥
 हाथ जोड कर अरज करतह वंदिन सेठ खुशालरे ॥ ४ ॥

॥ श्री केसरिया नाथजी का स्तवन ॥

राग—तेरे नैनों ने जादू डारा किरपा करी
 नै मोह तारोजी सांवरिया ॥ तारोजी सांवरिया मोहे ॥

॥ आकड़ो ॥ नाभिराय मरु देवी के नंदन श्याम वरण
 सुग्न कारोजी सावरिया ॥ १ ॥ देश मेवाड में आप वि-
 राजो नगर धुलेगा गढ वारोरे सावरिया ॥ २ ॥ देशदेश
 का जात्री आये, आनंद हरष अपारोरे सावरिया ॥ ३ ॥
 आगे केडयेरु भयिक उवारे, अयके हमारो वारोरे साव-
 वरिया ॥ ४ ॥ तू अविनाशी जगत प्रकाशी राग द्वेप से
 न्यारो रे सावरिया ॥ ५ ॥ ओर देव में अनेक सेविया
 सरणो लियो अब धारोरे सावरिया ॥ ६ ॥ उन्नीसो पैसठ
 चंद्र कृष्ण पक्ष, छट्ट दिगस सनीवारोरे सावरिया ॥ १० ॥
 दास कान को अपनो जानके भय भव पार उतारो रे
 सावरिया ॥ ८ ॥

अथ आराधना विधी लिखीये छे ।

प्रथम गुरु साखें तथा वाचना चार्य साखें तथा देव
 नाखें तथा आत्म साखें आराधना कीजें प्रथम श्रियाय
 ही पडिपमीजें ४ नयकार नो काउसग कीजें पछें लोगस
 प्रगट कहीजें पछे चैत्य बढन कही जै सर्व मंगल ताई
 जपरं धुई १ कहीजें पछे आपरा धर्मा चार्य ने स्वमावीजें

वांदी जें जिणां पास सें व्रत लीना हुवें तिके घसी चार्य
 गुरु कहीजै पद्यें आलोयण जुदी २ लीजें देवगति मनुष्य
 गति तिर्थचगति नरक गति एच्यार गति ने विषें
 जे कोई जीव हरयो हुवे हणायो हुवे हणतां प्रतें अनुयो-
 द्यो हुवें मनें वचनं काया इंकरी श्रीदेव साखें गुरु
 साखें थापनाचार्य साखें मिच्छामिदुक्कडं. प्रथम देव-
 गति नें विषें भवन पतिदेवतां माहें परमा धांभी देवता
 नें भवे माहरे जीवे केइ जीवानें तारणा तरजणा करी
 हुवे कोई मिथ्यात्वी देव नें भवें कोई सग किती जीवनें
 उपसर्ग कीधा हुवे अथवा साधू गुनिराज नें अनुकूल
 प्रतिकूल उपसर्ग कीधा हुवे व्रतधारी श्रावक ने उपसर्ग
 अनुकूल प्रतिकूल कीधा हुवे ते सवि हुं० २ मनुष्य गति
 ने विषे ५ भरत, ५ एरावत, ५ महा विदेह एवं १५ कर्म
 भूमि ने विषे गर्भ ज समूर्द्धिम मनुष्य नें विषे अथवा १४
 स्थानक समूर्द्धिम मनुष्य ना तेहनें विषें माहरे जीवें एक द्वी
 वेद्रीं तेद्रीं चउरिद्रीं पंचेद्री सूक्ष्म वादर अपर्याप्तो प्रयापतो
 जे कोई जीव हरयो हुवे हणायो० ३ ३० अकर्म भूमि
 नें विषें ५६ अंतर द्वीप नें विषें गर्भज समूर्द्धिम अपर्याप्तो

प्रयाप्तो जीवनी माहरे जीवें विराधना कीवी हुवे तो
 ते० ४ तिर्यच गति नें विषे एकेंद्रीमें प्रथवी पाणी मुर-
 ढ माटी लूण कार्य विना खूद्या हुवे चाप्या हुवे पाणी जी-
 वाणी ढोल्या खारा मांठा पाणी भेला काना पाणी विना
 अर्थे जतनाये न वावर्यो अग्नि तेउ कायनी जयणा न
 राखी खीरा फोड्या कोंड घाली अग्नि मा पाणी घाल्या
 बायु वायरो अजयणा ये लीनो वनस्पति कार्य
 विना चूटी खूदी चापी साधारण अने प्रत्येक ते माहि सू-
 च्म अने वादर अपर्याप्ता पर्याप्ता माहरे जीवें हएयो हुवें
 वेद्री में संरा, कवड गाडोला छट वासी अन्न प्रमुख त्वाधो
 तेह नें विषे जे कोई जीवनी विराधना माहरे जीवें कीधी
 हुयें मराई हुये कग्ता प्रते भलो जाणो हुवे तेंद्री में कान
 सिलाया मारुण जू कीडी उदेही मकोडा ईलिका इत्या-
 दिक माहरे जीवें हएया हुवे हणायो हुवे हणता प्रते अनु-
 मोद्या हुवें चउरिंद्री नें विषे धीनु छणाइ भमरा भमरी
 तीड माहरे जीवें हएयो हुवे हणायो हुये हणता प्रते अनु-
 मोद्यो हुवे ते सवि ० ५ पचेद्री तिर्यचने विषे नलचर
 ने विषे सु सुमार मळ कळभ त्राह मगर मळ गर्भज समू-

छिम् अपर्याप्ता पर्याप्ता थलचर नें विषें चनुष्यद गौ वृष-
 म उष्ट खर घोडो हस्ति सिंह कुत्ता बिलाडी व्याघ्र स्याल
 इत्यादिक हिंसक जीवनें विषे माहरे जीवें गर्भज समू-
 छिम् अपर्याप्ता पर्याप्ता जे कोई जीव हणयो हुवें हणता
 प्रते अनुमोद्यो हुवे खेचरने विषें रोम पंखी चिडी कवूतरा
 दिक चर्म पंखी वागुल चमचेडादिक अढाई द्वीप बाहिर समग्र
 पंखी वितत पंखी गर्भज समूछिम् पर्याप्तो अपर्याप्तो जे कोई
 हणयो हुवे हणायो हुवें हणतां प्रतें अनुमोद्यो हुवें उर-
 परि जाति माहें सर्पादिक नी जाति भुज परि जाति माहें
 ऊंदर गिरोली प्रमुख गर्भज समूच्छिम् अपर्याप्तो पर्याप्तो
 जे कोई जीव माहरे जीवें हणयो हुवें हणायो हुवें हणतां
 प्रतें अनुमोद्यो हुवें ते सविहुं मने वचनें का० ६ नरक
 गति नें विषें मारे जीवें परस्पर वेदना कीधी हुवे अधः
 वा अन्य वेदना कीधी हुवें परभवनें विषें अनंता भवाने
 विषे सात ही नरकां माहें जे कोई वेदना कीधी हुवें
 ते सविहुं० लघु नीत वडी नीती नें विषे रुधिर श्लेष्मा-
 दिक जे कोई अजतनाइ परठव्वा हुवें पर ठाव्या हुवें
 परठवतां भुंडी रीतें अनुमोदना कीधी हुवे अधवा लघु

नीती में बड़ी नीती में जीवनी उत्पत्ति कीयी हुवे तेहनी
निराधना कीयी हुवे ते सवि हुं० ८ ।

देवतत्त्व में विषे अरिहंत देवनी सिद्ध महाराजनी
आशातना कीयी हुवे अग्रण वाद बोल्या हुवें तथा अरि
हत महाराज नी प्रतिमानो अवर्णवाद आशातना कीयी
हुवें विधनें टपकोलाग्यो हुवे वीचने पृष्ठ दीयी हुवे
अपूज प्रतिमा जी रही हुवे इण भवनें विषे परभव ने
विषे अनता भव में विषे महारं जीनें कीयी हुवें कराड
हुवें० ६ गुरु तत्व ने विषे आचार्य जीनी उपाध्याय जीनी
मुसावू मुनिराज नी आशातना कीयी हुवे अवर्णवाद
बोल्या हुवे शिक्षा रूप कठिन वचन कह्यो हुवें भात पा-
णी प्रमुरा नो पेया वचन कीयो अनेरि पिणछती स-
क्ति छतें जो कोई म्हारें जीनें इण भव ने विषे अनता
भगने विषे आशातना कीयी कराई हुवे १० र्म तत्व
में विषे सार्वर्मकनो प्रिय वेयावच्च साचव्यो नहीं
वर्मनी निंदा कीयी हुवें अग्रणवाद बोल्या हुवे साधर्मी-
क उपरि प्रियोचितव्यो हुवे र्म नी महिमा प्रभावना
न कीयी हुवें इण भगनें विषे परभव में अनता भवा में

विष माहरे जीवें कोई विरोधो कीधो हुवे कराव्यो हुवे
 ११ ज्ञानाचार दर्शनाचार चारित्राचार तपानार वीर्या-
 चार देव गुरु धर्म तेन विप देव द्रव्य खाधो हुवे देव
 द्रव्य विणास्यो हुवे विणासतां प्रते भलो जाणो हुवे देव
 न विपें यथाशक्ति ई द्रव्य खरच्यो न हुवे ज्ञान द्रव्य
 खाधो हुवे विणास्यो हुवे विणासतां ने भलो जाण्यो
 हुवे ज्ञान नो भंडार विणा स्यो हुवे रुढी परे भंडार री-
 यतना कीथी हुवे नहीं साधारण द्रव्य भक्षण कीथो हुवे
 विणास्यो हुवे यतना कीथी नही इण भवे परभवे अन-
 ता भवा में माहरे जीवें ते ०१२ बाल हत्या की थी गर्भ
 गलाया हुवे पातन की थाहुवे विछोहो कीथो हुवे
 चिडी, कबेडी, कबूतर, प्रमुखना ईडा विणास्या हुवे माता
 सुं विछोहो कीथो हुवे बंधी खाने नारुया हुवे चौपगानें
 बद्धा प्रमुख नो विछोहो कीथो हुवे दूधनें लालचे बांधी रा-
 खुया हुवे इण भवनें पर भवनें अनता भवनें विपें जेकोइ
 माहरे जीवें ते सविहु ० १३ प्राणाति पातनें विपें जीव
 हिंसा कीधी कलह कीधो लोकिक् स्युं तेह सुंजीवनी
 हिंसा हुई अथवा आरंभने विषे एकंद्री वेंद्री तेंद्री चोरिंद्री

पंचेद्री जीव संताप्या विणा स्या विणसाया हुवे अनेराई
 जो कोई परनें जीव हींसानां पापो पदेश दीघाहुवे दिरा-
 या हुये राज काजने विप संग्राम कीधा सख बाध्या मा-
 सादिक भक्षण कीधा लोकीरुनें माथे डंड कीधा बाधी
 खाने घाल्या गाय वाल्या अनेगाइ पिणराजरा हुकम
 सुं करने अथवा अन्य जातिनें धूणी प्रमुख घाली
 जीव विणा स्याहुवे १४ मृषावादनं विपे मोट का भूड
 बोली या आलदीया स्वदार मंत्र भेद कीधा कूडा लेख
 लिख्ता थांपणमोसकीधा अनेराई भूड बोलवाना उपदेश
 कीधा हुवे दिरायाहुवे. ०१५ अदत्तादाननें विपे चोरी कीधी
 गाठ खोली वाट पाडी चोरनें सबलदीयो चोरी कराई
 करताने अनुमोदना कीधी कूड कपट करी आगवा ने
 ठग्यो कूडा तोल मान मापा कीधा हुवे कराया हुवे कर-
 ताने भलो जाणो हुवे ०१६ मैथुननें विषय कुसील से
 व्या हुवे सेवाया हुवे कन्या विववा पर स्त्री सू कुशील
 मेन्यो हुवे व्रतधारी रो व्रत खंडन कीधी हुवे करायोहुवे
 करताने अनुमोदना कीधी हुवे पराया नातरा विमोद
 आड्या हुवे जोडाया हुवे साठ आक्या हुवे घोटो हेरा

भैंस प्रमुख नें पाडो दिखायो हुवें देवतारा चक्र वर्त्तिप्र-
 मुखरा धिपय सुखरी बांछा कीधी हुवे कराई हुवे क-
 रता प्रते अनुमोदना कीधी हुवे० ॥ १७ ॥ परिग्रह ने
 विषे कूड कपट करी परिग्रह मेव्या अतितृष्णा कीधी रसाय
 खांकीधी लोगोंने ठग्या समुद्रादिकमें जहाजां में बैसेगमन
 कीधा द्रव्य उपार्जन कर बारा पापो प्रदेश दीधा अने-
 राई पिण घणा अकार्य लोभने वसे कीधा हुवे कराया
 हुवे करतोंने अनुमोदना कीधा हुवे इण भवने विषे पर
 भवने विषे अनंता भवाने विषे० ॥ १८ ॥ इति आलोचना
 विधि ० ॥ पछै ८४ लाख जीवयोनि स्वमात्रीजें पछै १८
 पाप स्थानक आलोई जे व्रत लीधा हुवें तिके पाछा उच-
 रिजे आराधना पढ़ी जे ते लिखियें छैं ।

दोहा ।

सकल सिद्धि दायक सदा चोवीसैं जिनराय ।

सहं गुरु स्यामिन सरस्वति प्रेमें प्रण सुंपाय ॥ १ ॥

त्रिभुवन पति त्रिसला तणो नंदन गुरु गंभीर ।

शासन नायक लग जयो वर्द्धमान बड़ वीर ॥ २ ॥

इक दिन वीर जिण्ड ने चरणें कर प्रणाम॥ अधिक
जीवना हित भणी । पूछें गोतम स्वामी ॥ ३ ॥

मुक्ति मार्ग आराधोइ, कहो किण परि अरिहंत ।

सुधा सरस तब बचन रस, भाखे श्री भगवत ॥ ४ ॥

अतिचार आलोड्य १ व्रत धरीय गुरु साख २ जीव
स्वमायो सय लजे योनी चोरासी लाख ३० । ५ । विधि सू-
बली बोलिग मिइ पाप स्थान अठार ४ च्यार सरण नित
अनुसरो ५ निंदो दुरित आचार ॥ ६ ॥ सुभ करणी अनु-
मोदीइ ७ भाव भलेर मन आण ८ अण सण अउसर आदरी
९ नवपद जपो सूजाण १० ॥ ७ ॥ सुभगति आराधना तणा
एछें दस अधिकार ॥ चित आणीने आदरो जिम पावो भव
पार ॥ ८ ॥ एछिंडी किहां राखी ॥ ए देसी ॥ ढाल । ज्ञान
दरसन चारित्र तप गीरज ए पांचे आचार एह तणा इह
भव पर भवना आलोड्य अतिचाररे १ प्राणी ज्ञान भणो गुण
बाणी वीर वदे इम बाणी रे प्राणी ॥ आकडी ॥ गुरु उल वीड
नहीं गुरु विनये काले धरी बहु मान सूत्र अरथ तदु भय
करि सुधा भणीई वढि उपवान रे प्र० ॥ २ ॥ ज्ञानो पग
रण पाठी पोथी ठगणी नोकर वाली तेह तणी कीधी
आसात ना ज्ञान भगतिन संभाली रे प्राणी ॥ ३ ॥ इत्यादिक

विपरीत पणार्थी ज्ञान विराध्यो जेह आभव पर भव वली
 अभवो भव मिच्छामि दुक्कडं तेहरे प्राणी ४ समकित
 ल्यो सुध जाणी वीर वदे ईम वाणी रे प्राणी ॥ जिन वचने
 शंका नवि कीजे न विपर मत अभिलाप साधूतणी निदा
 परिहर जो फल संदेह मतराखरे प्राणी ५ मूठ पणु छंडो
 प्रशंसा गणवंत नी आदरीइं साहमीने धर में करि थि-
 रता भगति प्रभावना करी ईरे प्राणी ६ संघ चैत्य प्रासा
 दतणी जे अवर्णवाद मनि लेख्यो द्रव्य देव को जे वि-
 णसाभ्यो विण संतोऊ वेप्योरे प्राणी ७ इत्यादिक विप-
 रीत पणार्थी समकित खंडि उंजेह आभव परभव वली
 अभवो भव मिच्छामि दुक्कडं ते हरे प्राणी ८ ल्यो चित
 प्राणी० पांच सुमति त्रिण गुपति विराधी आठे प्रवचन
 माय साधु तणें धर्मे पर मादे असुध वचन मन कायरे ९
 प्राणी ० श्रावक ने धरमेइं सामायिक पोसह मां मन वा-
 लिजे जयणां पूर्वक ए आठे प्रवचन मायन पालीरे प्राणी
 ॥ १० ॥ इत्यादिक विपरीत पणार्थी चारित्र दोहल्यो
 जेह आभव पर भव वलि भवो भव मिच्छामि दुक्कडं
 तेहरे प्राणी ॥ ११ ॥ वारें भेदें तप नवि कीधो छतें

जोगिनिज सगनें परमें मन वच काया वीरज नवि फोर
 बिउं भगंतरे प्राणी ० १२ तपवीर ज आचार इण परि
 विविध विराध्या जेह आभव पर भव बलि भवो भव
 मिच्छामि दुक्कड तेहरे प्राणी ० १३ बली विशेष चारित्र
 केरा अतिचार आलोइडं वीर जिणे सर वयण सूणी नें
 पाप भइल, सवि गोइईर १४ प्राणी ॥ ढाल पामी सुगुरु
 पसाय ए देशी पृथवी पाखी तेऊ बाऊ वनस्पती एपां
 चइं थायर कह्याए, १ करि कर सण आरम खेत्रज
 खेडीया कूवा तलाव खणावीं आए २ घर आरम अ-
 नेक टांका भइहरा मेडी माल चणावीं आए ३ लीपण
 गुपण काजइणि पारिं परि परि पृथवी काय विराधी आए ४
 धोवण नाहण पाण अलिण अपकाय छोति धोति करि
 दूह व्याए भाठी गररूं भार लोहसू वनगार भाड भुजा-
 लिहा लागगए ५ तपण सेकरण काज वस्त्र नीखा रण
 रगण राभण रसवतीए ७ इणि परि कर्मादान परि
 परिकेलवी तेऊ बाऊ विरागी आए ८ बाडी वन आराम
 बावी वनस्पती पान फूल फल चुंटी आए ९ पोंड कपाप
 पटी शाक सेम्या सूक्या छिया छूया आथी आए १०

अलसी निरंड बांणी घालिन इंवाणी तिलादिक पीली
 आए ११ घाली कोल माहि पीली सेलडी कंद मूल
 फल बेचियाए १२ इम एकेंद्रि जीव हएया हणावी
 आदणतां जे अनुमोदी आए १३ आभव परभव जेह
 वली अभवो भवते मुझ मिच्छा दुकडंए १४ करम सर-
 मी आकीडा गाडर गंडोलाई लिपुअरा अलसीआए १५
 वाला जलोप चूडेल विचली तर सतणा वली अयाणी
 प्रमुख नाए १६ इम वेइंद्री जीव जेमें दूहव्या ते मुझ मि-
 च्छामि दुकडंए १७ उदेही जुंलीख मांकण मकोडा चांचण
 कीडी कंथु आए १८ गद्धही आवीवेल कान खजुराणी गोडा
 घनेरी आए १९ इम तेइंद्री जीव जे में दूहव्या ते मुझ मिच्छामि
 दुकडंए २० माखी मच्छर डांस मसा पतंगी आ कसारी कोलि
 आवडाए २१ ठिंकरा वीछ तीड भमरा भमरी अकों तांवग
 पड मांकडीए २२ इम चडरंद्री जीव जेमें दूहव्या ते मुझ
 मिच्छामि दुकडंए २३ जलमें नाखी जाल जल चर दूहव्या
 वन में मृग संतापियाए ॥ २४ ॥ पीड्या पंखी जीव
 पाडीं पासमें पोपठ वाल्या पीजरेए ॥ २५ ॥ इम पंचेद्री
 जीव जेह परा भव्याते मुझ मिच्छामि दुकडंए ॥ २६ ॥ ठांकी
 णी एकरीजी : एदेशी : क्रोध लोभ भय ~~हृषी~~ ~~वि~~

हांस धांजी गेल्या वचन अगत्य कूड करि वन पाग
 काजी लीया जेह अदत्तरे जिनजी० ? मिच्छा दुक्कड
 आज आरुढि॥ तुम साखे मर्हाजेर जिनजी देई सार काज
 रे जिनजी मिच्छापि दुक्कडं आज ॥ आरुढी ॥ देव मनुष्य
 तिर्यचना मैथुन से व्याजेह विषयारस लंपटयणोजी घणो
 विटं वेदे हरे जिनजी ० २ परिग्रहनी ममता करीजी भय भव
 में ली आथीजे जिहा निते तिहा रही जी कोइन आवी माथेर
 जिनजी० ३ रथणी भोजन ज करया जी कीधा भक्ष अभक्ष
 रसनारस ने लाल चें जी पाप करया पर तक्षे ४ जिनजी
 वृत लेइ विसारी आजी वली भागा पचराण कपट
 हेतु किरिया करिजी कीधा आपवखाणेर जिनजे ५
 त्रिण ढाल आठ दुहेजी आलोया आतिचार सिवगति
 आरा धन तणजी एपाहिलो अधिकार रे जिन जी०
 ढाल साहेलडीनी पच महाव्रत आदरो साहेलडीरे अथ-
 गान्यो व्रतमारतो ययासक्री व्रत आदरो सा० पालो निर-
 तिचार तो १ व्रत लीयो संभारीड सा० द्वियडे घोर
 अविचारतो सिप्र गति आरामन तणो सा० एवीजो
 अधिकारतो २ जीय सवे खमावाड सा० योनिचरुरा सी
 लाख तो मन सृष्टी कर खामणा सा० कोई स्रोसन्नरा

खतो ३ सवी मित्र करि चित वो सा० कोईन जाणो
 शत्रु तो तो राग द्वेष इम परिहरि सा० कीजें जनमप
 विव्रतो सा० ४ साहमी संघ पमावीइ सा० जेउपनी
 अपतीत तो सजन कुटुंम करि स्वांमणा सा० एजिनशा
 सनरी ततो ५ खमीयेनै खमावीये सा० एहज धर्मनो
 सारतो सिवगति आराधन तणो सा० एत्रीजो अधिकार
 तो ६ मृषावाद हिंसा चोरी सा० धन मूर्खा मयुन तो
 क्रोधमान माया तृष्णा प्रेम द्वेष पै सुन्य तो ७ निन्दा कद
 नीन की जीइ सा० कुंडन दीजे आल तो रति अरति
 मिथ्यात तजो सा० माया मोस जंजाल तो ८ त्रिविध
 त्रिविध वोसिरावीइ सा० पाप स्थान अद्वार तो सिवगति
 आराधन तणो सा० एचोथो अधिकार तो ९ ढाल हिव-
 इन सुणो इहां आवआए एदेशी जनम जरा मरणे करिए
 एसंसार असार तो कर्मांक्रम अनु भवै ए कोईन राख-
 णहार तो १ सरण एह अगिहंत नोए सरण सिद्धि भग
 वंत तो सरण धरम श्री जैननोए साधु सरण गुणवंत
 तोर अवरनेस विपरि हरिए ए च्यार सरण चित धारतो
 सिवगति आराधन तणोए ए पांचमो अधिकार तोड आ
 भव परभव जे करचाए पाप कर्म के लाख तो आतम

खें ते निंदीइए पडिकुमिईं गुरु साखि तो ४ मिथ्यामते
 वरता- ब्रियाए जे भाख्यु उत्सूत्र तो कुमत कदाग्रह नें
 सेंए जे उथ्याप्यासूत्र तो ५ घडया घडावीया जे घणाए
 घरटी हल हथीयार तो भव भव में लि मूकीयाए करता
 जीव संहार तो ६ पाप करिनें पोसीयाए जनम जन्म बरि
 बार तो जन मतः पोहतांए छिए कोणें न कीवी सार तो
 ७ आभव परभव जे कर्याए इम अधिकारण अनेक दो ते
 त्रिविधें बोसिरावीइए आंणी हृदय त्रिवेक तो ८ दुकृत
 निंदा इम करिए पाप कर्या परिहार तो सिंगति आरा
 धन तणोए एछटो अधिकार तो ९ ढाल आदि तूजोइन
 जीवडा देशी धन धन ते दिन माहरो जिहा कीधो धर्म
 दान शील तप भाव नाटान्या दुःकर्म १ उन से पुंजादिक
 तार्थनी जे कीधी जात्र जुग ते जिनवर पूजीआव लीपो-
 प्यापात्र २ धन० पुस्तक ज्ञान निष्कामाविया जिणहर जिन
 चैत्य संघ चडाविध साचव्या ए साते क्षेत्र ३ उन २ पाटि
 कमणा स परे करया अनुकंपा दान साधु मूरि उवभाय
 नें दीया बहुमान ४ धन० धर्मकाज अनुमोदिये में इम वागे
 बार सिंगति आराधन तणोए सातमो अधिकार ५ धन०

भाव भलो मन आणियें चित्त आंणी टांम समता भावे
 भाविइंए आतम राम ६ धन० सुख दुख कारण जीवने
 कोई अवरन हेई करम आय जे आचरया भोगविइं
 सोई ७ धन० समता विणु जे अनुसरें प्राणी पुन्य
 काम छार उपरे ते लीणुं मुंभंखरि चित्राम् ८
 धन० भाव भली परिव्वावीइं एधर्मनो सार सिव गति
 आराधन तणो आठमो अधिकार ९ धन० ढाल रेवत
 गिरि हुआ प्रभुनां तिण कल्याण एदेशी द्विवे अवसर
 जांणी करि संलेखन सार अणसण आदरीइं पचखेच्या-
 रे आहार लुलुता सवि मुंकि छांडी ममता अंगए आतम
 खेलें समता ज्ञान तरंग ? गति च्यारे कीधा आहार अनंत
 निसंक पाणि नृपति नपांन्यो जीव लालची ओरंक दुल-
 होए वली वली अण सण नो परिणाम एहथी पांमीजे
 शिवपदं सुर पद ठाम २ धन० धनो साल भद्र संख दोमे
 य कुमार अण सण आराधी पांम्या भवनो पार शिव
 मंदिर जास्यें करि एक अवतार आराधन के ए नवमो
 अधिकार ३ दशमें अधिकार महा मंत्र नवकार मनथी
 जेवि सूकों शिव सूख फल एहकार राजपतां जाइं दुर्गति

दोष विकार सुखरे एस मरो चउद पूख नो सार ४ जन-
 मंतर जाता जो पाँमें नोकार तो पातिक गालियाँ में सुर
 अवतार ए नवपद सरिंगा भवन को संसाईह भयने पर
 भव सुख संपति दाता ५ जेवे भिल भिल्लडी राजा राणी
 थाय नव पद महिमा थी राजसिंह माहाराव राणी रत्न
 वती वे हु पाम्या छे सुर भोग इक भयथी तहस्यें सिद्ध
 बधू संयोग ६ श्रीमतिने एवली मत्र फल्यो ततकाल फणे
 धर फीटी नें गगट थड फूलमाल शिव कुमार जोगी। मों
 वन पोरसो की ७ इम एणें भंत्रें काज उणाना सिद्ध ७ ए
 देस अधिकारे वीर जिणे सर भाख्यो आराधन केरो विप्रि
 जणें चित माहिराख्यो तेणे पाप पखाली भय भय दूर
 नाख्यो जिन विनय करता मुमति अमृत रसु चाख्यो ८
 ढाल नमो भवि भाव मुए एदेसी सिद्धारथ राय कुल-
 तिलोए जिस लामात मल्हार तो अग्रनीत ल जन्हे
 थय तस्याए करया अथ उपगार जयो जिनवीर
 जी ए मे अपराधक स्वावणाए कहलान तहु पार
 तो तू म्ह चरण आव्या भणीए जो तारे नो तार ९ जपो
 आस करिने आविउए तुम्ह चरण मसाराज तो आव्या

नें उवे स्वस्थोए तो कि मरइस्यें लाभ ३ जयो० करम
 अलुभण आंकीए जनम मरण जंजाल तो दुखु एह थो
 उधगोए छोड विदेव दयाल ४ जयो आज मनोरथ मुभ
 फल्याए नाठा दुख दंदोल तो तूठो जिन चोवीसमोए
 मगटया पुन्य कल्लोल ५ जयो भव भवविनय तुम्हार डो
 ए भावभगति तुम्ह पाय तो देव दया कगे दीजिये ए बोध
 बीजा सूप साप ६ जयो० कलस इम तरण तारण सुगति
 कारण दुख निवारण जग जयो श्री वीर जिनवर चरण
 धुणतां अधिक मन उल्लट थयो १ श्री विजय देव सूरिंद
 पट धर तौरथ जंम मइण जगें तपगच्छ पति श्री विजय
 मभुसूरि सूरितें जे जनसंगें २ श्री हीर विजय सूरी सीत
 वाचक श्री कीर्ति विजय सूरी गुरु समो तस सीस वा-
 चक विनय विजय धुरयो जिन चउवीसमो ३ सय सतर
 संवत उगणत्री सें रहिरा नेर चउयासए विजय दशमी
 विजय कारण कीर्थे गुण अभ्यासए ४ नर भव आराधन
 सिद्ध साधन सुकृत लील विलासए निर्झरा हे तें जव नर
 चिड नाम पुण्य प्रकासए ५ इति श्री पुण्य प्रकास स्तवन
 संपूर्णम् ॥ ५ ॥ हिंवे सखी पदमावती जी वरासि स्वमा

वें झांण पणो जग दोहिलो इण वेलाइ आवे ते मुझ मिच्छामि
 हुक्कड अहिंत नी सार्वे जेमे जीव विराधीया चउरासी
 लाख ॥ ते मु० २ ॥ सात लाख पृथ्वी तणा साते
 अपकाय सात लाख तेउकायना सात बल वाय ॥
 मु० ३ ॥ दस प्रत्येक वनरपति चउदेसा धार विति
 चोरद्री जीवना वे वे लाख विचार ॥ ते मु० ४ ॥
 देवता तिर्थच नारकी च्यार च्यार प्रकासी चउदे
 लाख मनुष्यना ए लाख चउरासी ते मु० ५ इणभव पर
 भव सेविया जेणे पाप अहार त्रिविधि हरिवोसरू दुर
 गति दातार ५ ते मु० हिंसा कीधी जीवनी बोल्या मृपा-
 बाद दोष अदत्तादान ना मैथुन नैउन माद ७ ते मु०
 परिग्रह देख्यो कारिभो क्रीधो क्रोध विशेष मान
 माया लोभ मै कीया बली राग द्वेष ८ ते मु० रुलह करी
 जीव दूहव्या टीधा कूडा कलक निदा कीधी पार कीर-
 तिअरति निसंरु ते मु० ६ चाढी खाधी चोतर कीधीया
 पण मोसां कुगुरू कुदेव कुवर्म नो भलो आणयो भरोसो
 ५० ते मु॥ ० खाद कीनेभयमें कीया जीवना बघदाव चीढी-
 मार भव चिडकल्यां मेमारया दिन नें राति ११ ते मु०

माछीनें भव माछला जाल्या जल वास धवर भील कोली
 भवें वृग मार्या पास १२ ॥ ते मु० ॥ काजी मुल्ला ने भव
 पढ्या मंत्र कटोर जीव अनेक जिवह कीया कीयापा
 प अधोर १३ ते ० मु० कोट बालनें भवें मे कीया अकरा
 कर दंड बंदीवां नैमगावि आ कोरडा छडी दंड १४ ते
 मु० परमा धाभीनें भवें दीया नारकी दुख छेदन भेदन
 वेदना ताडना आति तीव्र १५ ते मु० कुभारनें भव जे
 कीयानी माह पचाव्या ते लीभव तिल पीलीया पापे पेट-
 भराव्या ते मु० १६ हाली भव हड्या खेडीया फाड्या प्रय
 बीना पेट सूडनी दाण कीया घणां दीधी दलदच पेट ते
 मु० १७ मालीने भव रोपीया नाना विध वृक्ष मूल पत्र
 फल फूलना लागाया पाप लक्ष ते मु० १८ ओधोवाही
 आगमी भरया आधिका भार पोटी ऊट कीडा पम्या
 -दया नही रेल गार ते मु० १९ छीपाने भव छेतस्या
 कीया रंगण पास अगनि आरंभ कीयाधणा धातुर ~~वृद्ध~~
 वाद आभ्यास ते मु० २० सूरपणे रण भूभक्ता मारया
 माणस वृद्ध मदिरा खांसन झुंकीया खाधा मूलनें कंदते ॥
 मु० २१ ॥ अंगार कार्य कीया घणा घर में दच दीधा सूंस
 कीया वीतरागना रुडा को सज पीयाते ॥ मु० २२ ॥

खांण खाणा बीधा तनी पाणी ओलंच्या आरंभ कीधा अति
 घणा पोते पापज संच्याते मु० २३ ॥ धिल्ली भव ऊदर
 गिल्या गिलोर्द इत्यारी मूढ गवार तेणें भवेजू लीख
 मारीते मु० २४ ॥ भाड भुंजाने भवें एकेद्री जीव
 च्वार धिणा गंधू सेकिया पाडतारीवते मु० २५ ॥ खांडण
 पीसण गारना आरभ अनेक रात्रण ईधण गारना कीया पाप
 उढेकते मु० २६ ॥ विकथा च्यार कीधी वली सेव्या पाच
 प्रमादइष्ट वियोम पमाडिया रोदन विखवादते मु० २७ ॥
 साय अनें आवक तणां व्रत लेई मोग्या मूलनें उत्तर त-
 णा मुक्त दूषण लागा ते मु० २८ ॥ साप विछू सि-
 हचीतरा सिकरानें समली हींसक जीव तणें भवें हिंसा
 कीधी सवली ते मु० २९ ॥ सुआवड दूषण घणा वलि गरभ
 गला व्या जीवाणी ढोव्या घणा सील वृत भगाव्या ते
 मु० ३० ॥ भव अनंत भमता थका कीया कुटव संबंध
 त्रिविधि २ करि वोसरू तिण सूं प्रति वध ते मु० ३१ ॥
 भव अनंत भमता थका कीया देह संबंध त्रिविधि २ करि
 वोसरू तिण सूं प्रति वध ते मु० ३२ ॥ भव अनंत भमता
 थका कीया परिग्रह संबंध त्रिविधि २ करि वोसरू करमू

जन्म पवित्र ते सु० ३३ ॥ इण भव पर भव सेवया कीया
 पाप असंख्य त्रिविधि २ करि वोसरु करुं जन्म पवित्र ते
 सु० ३४ ॥ राग वैराडीजे भएँ एतीजी ढाल समय सुंदर
 कहै पापथी छूटे तत कालते मुक्त मिच्छा मि दुकडं ३५ ॥
 इति श्री जीवरासि स्वमावणा संपूर्णम् ॥ पछे च्यार सरणां
 उच्चरी जेंते लिखी थैछै चत्तारि मंगलं अरि हंता मंगलं
 सिद्धां मंगलं साहुमंगलं केवली पन्नतो धम्मो मंगलं च-
 त्तारिलो गुत्तमा अरिहंता लो गुत्तमा सिद्धा लो गुत्तमा
 साहु लो गुत्तमा केवली पन्नतो धम्मो लो गुत्तमा चत्तारि
 सरणं पवज्झामि अरिहंते सरणं पवज्झामि सिद्धे सरणं प-
 वज्झामि साहु सरणं पवज्झामि केवली पन्नतो धम्मो सरणं
 पवज्झामि ॥ पछे पोते दुकृत कीया हुवेंतिका निंदवीजे
 सुकृतनी अनुमोदना कीजै इतरा दिन माहरा सुकृत
 में धर्म ध्यान सामायिक पडिकमणा पोसा में तथा तीर्थ
 यात्रामें गयातिके सफलबाकी संसारीक पणारा कार्य में
 हासा में खेल में कतूहल में इतरा दिन इंद्रियांरा २३ वि-
 षय बसवर्त्ती हुवा निर्फल गमाया सामाइय पोसह संठि
 यस्स गाथा कहीजें पछे पच्च खाण कीजें अरिहंत माहा-

राजग दरसन कीजे तथा कराई जे पछे धर्म ध्यान में अवति जे प्रवर्त्ताई जे पासे बेटा होय तिक पिणयथा शक्ति ई पञ्चस्वाण करे इति आराधना क्रिये संपूर्णम् ॥२॥

॥ पूजा में सावधानी ॥

भगवान की द्रव्य पूजा प्रत्येक श्रावक को नित्य करना चाहिये । सुखे उत्तम स्थान में स्नान करना चाहिये आले गीले स्थान में स्नान न करना चाहिये पानी यतना से वर्त्तना चाहिये स्नान में और प्रत्येक कार्य में पानी को ठान कर काम में लाना चाहिये ठंडा और गरम जल शामिल नहीं करना चाहिये इस प्रकार यतना पूर्वक शुद्ध जल से स्नान कर शुद्ध हो शुद्ध धोती पहन कर पूजा के लिये तैयार होना चाहिये धोती पूजन के कार्य की अलग रखना चाहिये बाघरेलू काम काज के समय काम में नहीं लाजाना चाहिये स्नान कृत जल को किसी वालू आदि के मुखे स्थान में छिटका देना चाहिये भगवान के मंदिर में प्रवेश करते समय उत्तरा संग शरीर पर अवश्य चाहिये चाहे सोने का हो या कपड़े का हो

मस्तक पर तिलक करके और मुख पर मुखकोश बांध कर पूजा करना चाहिये भगवान के मूल गंभारे में बिना मुखकोश न जाना चाहिये भगवान के सन्मुख खाली हाथ भी न जाना चाहिये निज शक्ति अनुसार मानक मोती अथवा चांदलही भगवान के सन्मुख में अथवा रखना चाहिये भगवान के केसर आदि चढ़ाते समय मौन रखना चाहिये भगवान के अष्ट द्रव्यादि जो कुछ पदार्थ चढ़ावे सो उत्तम और शुद्ध चढ़ाना चाहिये नैवेद्यादि अपने घर में उत्तम रीति से तैयार कर चढ़ाना चाहिये बाजार खरीद कर नहीं काम में लाना चाहिये फल फूलादि अच्छे पके हुवे यतना पूर्वक लाकर चढ़ाना चाहिये मंदिर में सर्व दीपकों पर फानस अवश्य ढंके रहना चाहिये और प्रत्येक तीर्थंकरों के पंच कल्याणकों के दिवस उनकी पूजा और एक २ माला का जपना भी लाभदायक है.

इस पंचम आरे में जिनेश्वर देव इस क्षेत्र में साक्षात् न होने से जिन प्रातिमा द्वारा भगवान के दर्शन पूजन करना चाहिये जल, चंदन, अक्षत, नैवेद्य, पुष्प, धूप, दीप

आदि अष्टद्रव्य से भगवान् की पूजा हुल्लास भाव से यतना अर्थात् उपयोग पूर्वक करना चाहिये.

यद्यपि जल, पुष्पादि सचित पदार्थों को पूजा में यतना पूर्वक उपयोग में लेने पर भी किंचित् हिंसा हो जाना संभव है तथापि इसमें निर्जरा अविक्र होने से जैन सूत्रों ने आज्ञा फर माई है जिसके कितने ही दृष्टांत हैं.

१—आचाराग सूत्र में साध्वी को नदी आदि जल में डूबती हुई को साधु को भी निकालने की आज्ञा है ।

२—साधु ठल्ले गोचरी आदि कार्य गया हो तो भी सायकाल होते ही पानी बरसता होतो भी भीजता हुवा भी निजस्थान में आजावे ऐसी आज्ञा है ।

३—श्रीराय पसेणी सूत्र में सूर्याभ देवता ने भगवान् के सन्मुख वत्तीस विधि नाटक भाक्ति वश किया कहा है

४—राजा कोणिक अनेक हाथी घोड़े फौज आदि साथ लेकर भगवान् क वंदन निमित्त गया बतलाया है ।

५—साधुओं को ठल्ले गोचरी जाने की बिहार करने की आज्ञा दी है, भगवान् महावीर ने गौतम गणधर को

आज्ञा देकर देव शर्मा ब्राह्मण को प्रति बोध करने को भेजा था.

६-कोई अप्रीति का कारण उत्पन्न होने पर वा कोई भयंकर रोग फैलने पर साधु को चौमासे में भी अन्य ग्राम बिहार कर लेने की आज्ञा है.

७-श्रीजीवाभिगम सूत्र में साधु की, गणाधर की और तीर्थंकर की इस प्रकार तीन प्रकार की चिता करना आदी दहन क्रिया के लिये आज्ञा फरमाई है.

८-तीर्थंकर भगवान की मृतक देह के सन्मुख इन्द्र महाराजने नमुत्थुणं कहा था और तीर्थंकर के निर्वाण पश्चात् इन्द्र चारों दाढ़ें पूजार्थ ले जाते हैं और अनेक देव चिमठी २ धूरि निर्वाण स्थान से ले जाते हैं श्री पावा पुरीजी में महावीर स्वामी के चिता स्थान से देवों के चिमठी २ धूरि ले जाने से गहरा गढा पड़ गया था जिसमें वर्षा का जल इकट्ठा होकर अब तालाब होगया है.

९-राय पसेणी में सूर्याभ देव ने जिन प्रतिमा की १७ भेदी पूजा करी नमुत्थुणं कहा ऐसा फरमाया है.

१०-जीवाभिगम सूत्र में उच्चजाति के देव भ्लाश्वती जिन प्रतिमाओं की पूजन करते हैं ऐसा कहा है.

११-थीक्षाना सूत्र में द्रोपदी जी ने जिन प्रतिमा पूर्जा तमुत्थुणं कह कर जिन प्रतिमा का वंदन किया ऐसा फरमाया है इत्यादि अनेक दृष्टांत हैं ।

उपरोक्त दृष्टान्तों में हिंसा प्रत्यक्ष मालुम तो होती है तथापि उत्तम परिणामों के कारण और किंचित हिंसा और अधिक निर्जरा होने के कारण शास्त्रों में उपरोक्त आज्ञाएँ फरमाई हैं अल्प हिंसा किन्तु अधिक निर्जरा ऐसे कार्यों को उत्तम समझकर ही पूर्वजों ने श्री सिद्धा चल जी, शिखर जी आवृजी तारंगा जी आदि स्थानों पर अपने और अपनी संतान के लाभार्थ भगवान् भी पूजा के निमित्त ऐसे विशाल जिन मंदिर बनवा कर अगणित जिन प्रतिमाएँ स्थापन की हैं वहा जा उनके दर्शन पूजन करना अपना कर्त्तव्य है ॥

लूणिया वंश की उत्पत्ति ।



बारहवीं शताब्दी में मुलतान नगर के राजा का दिवान संधरा महेश्वरी जाति का हाथी साह नामक था । राजा की सेवा यथोचित करने से और प्रजा का न्यायादि कर्त्तव्य उत्तम प्रकार से करने के कारण हाथीसा राजा और प्रजा दोनों को प्रिय था हाथीसाह के लूणासाह नाम का पुत्र बड़ा चतुर और राज्य मान्य था मित्ती बैसाख सुद ६ बुधवार रातको लूणा अपनी स्त्री के साथ पलंग पर सो रहा था कि किसी सांप ने आकर उसको काट दिया वो नींद से चमक उठा और तुरंत अनेक वैद्य और मंत्र वादी बुलवाये गये सबके प्रयास कर लेने पर भी लूणा को कुछ भी फायदा न हुवा लूणा मृतक चत् ही रहा श्री श्री दादा गुरु श्री जिन दत्त स्वरि महाराज भी उस समय मुलतान ही में विराजते थे इसकी सूचना पाकर हाथीसाह गुरु के चरणों में जा गिरा पुत्र की रक्षा के लिये प्रार्थना की गुरुने उसी समय जाकर मंत्र

विद्या द्वारा उस ही साँप को वापिस बुलाया साप मनु-
 प्य भाषा में कहने लगा गुरु! मेरे और इसके पूर्व भवों का
 वैर है इमने जन्मेजय राजा के यज्ञ में ब्राह्मण पन मे
 वेद मंत्र पढ़कर मुझ को होम डाला था इत्यादि इस लिये मैंने
 काट कर अपना वैर लिया है तब गुरु ने फरमाया हे
 देव किये कर्म विना भोगे नहीं छूटते तेरा बदला तैने ले
 लिया अब यह हमारा श्रावक हाने वाला है इस लिये
 इसका जहर खींचले तत्काल नाग देव ने जहर वापिस
 खेच लिया और मनुप्य भाषा में गुरु से प्रार्थना की कि
 मुझको जाति स्मरण ज्ञान उत्पन्न हुवा था जिससे मैंने
 पूर्वके भवों का साविस्तर हाल जान लिया सब हाल गुरु
 से सुनाया और सर्प लोकों से कहने लगा कि ये गुरु
 एका भवा वतारी है लूणा सावधान हो गया लूणे ने
 सभ्यक्त युक्त श्रावक के व्रत पच्चक्खाण लेकर जैन र्म
 अर्गीकार किया गुरु ने ओसवाल वंश में इन को सम्मि-
 लित कर लूणिया गोत्र स्थापन किया मूल गच्छ खरतर
 गच्छ । वैसाख सुद ७ गुरुवार. सप्त ११९२.

हिन्दी भाषा का अपूर्व जैन ग्रन्थ ।

श्री प्रभुभक्ति

नित्य अग्रग्न्य पढ़ने योग्य ।

भव भ्रमण के महान दुर्गों से मुक्त होने के लिये, और परम आनन्द अर्थात् मोक्ष सुख को प्राप्त करने के लिये, वीतराग भगवान के बतलाये हुवे उचित साधन प्राकृत और संस्कृत के अनेक शास्त्रों को पढ़ने से ज्ञात हो सकते हैं। जिसके लिये पूरे २ समय और विद्याध्ययन की आवश्यकता है। अनेक शास्त्रों को पढ़कर सद्ब्रह्म प्राप्त करने के लिये यदि आपने योग्य विद्याध्ययन नहीं किया है। वीतराग भगवान का ध्यान वदन पूजन आदि करते समय मन की चंचलता के कारण यदि आपका चित्त स्थिर नहीं रहता है। संस्कृत के स्तोत्र स्तुति आदि पाठ करते समय भानार्थ नहीं समझने के कारण यदि परमात्मा से पूर्ण प्रेम उत्पन्न नहीं होता और न भक्ति का आनन्द प्राप्त है तो प्रिय पाठक कन्धु “ प्रभु भक्ति ”

ग्रंथ को वी. पी. द्वारा मंगवा कर शीघ्र पाठियेगा इस हिन्दी भाषा के सरल ग्रंथ में १६ प्रकरण हैं । इसको पढ़ते समय चित्त एकाग्र हो प्रभु प्रेम में मग्न हो जाता है और प्रभु भक्ति का अपूर्व आनन्द आता है ॥

इन्द्रियों के क्षणिक सुखों के लिये सैकड़ों रुपये सदा व्यय करते हो तो आत्मा के कल्याणार्थ इस ग्रंथ रूपी योग्य साधन को प्राप्त करने में हर्गिज देर न कीजियेगा । इस ग्रंथ को मंगवा कर आप अवश्य लाभ उठावें अतैव इस ग्रंथ का मूल्य केवल आठ आना डाक व्यय दो आना मात्र ॥

मिलने का पता—

मूलचंद बोहरा,
लाखन कोटरी,
अजमेर.

